3 1761 08159491 3

Rai, Navina Chandra
Navinacandrodaya

PK
1934
R35
1883

نوین چندرودے

یعنے

ہندی بہاشا ویاکرن

नवीनचन्द्रोदय।

अर्थात्

Navinacandro-
daya

हिन्दीभाषाका व्याकरण

श्रीनवीनचन्द्रराय।

Rai, Navina Chandra

कृत

HINDI GRAMMAR

BY
NAVINA CHANDRA RAI

Published under the auspices of the Punjab University

ब्राह्मसमाज प्रेस लाहोरमे छपा ॥

सन १८८३ ईसवी

द्वितीयबार ३०० खण्ड

मूल्य ।)

PK
1934
R35
1883

LIBRARY
JUL 3 1969
UNIVERSITY OF TORONTO

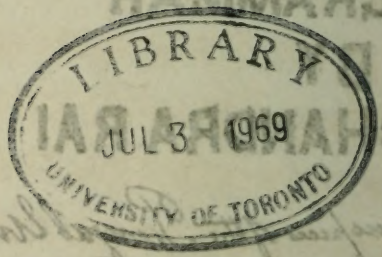

ग्रन्थकारकीउक्ति (सम्वत् १९२५ मे)

हिन्दुस्थान अर्थात् भारतवर्षके उत्तर पश्चिम प्रदेशीय लोगोंकी बोलीका नाम हिन्दीभाषाहै। बहुत प्राचीन समयमे भारतवर्षके आर्य्यवंशीयलोगोंकी भाषा संस्कृतथी। उसी संस्कृतभाषाका कालक्रमसे अपभ्रंसहोकर प्राकृतभाषाहुई, जोकि विक्रमादित्यके समयमे बोली जातीथी। प्राकृतभाषा बदलती बदलती हिन्दीबनगई। मुसलमानोंके इस देशमे आनेसे हिन्दीके साथ अरबी फ़ारसीके शब्द मिलकर एक और उर्दू भाषा होगई। अबशुद्ध हिन्दीमे और उर्दूमे केवल इतनाहि प्रभेदहै कि पूर्व्वोक्तमे जो शब्दआवश्यक होतेहैं वे संस्कृत से लिये जातेहैं और शेषोक्तमे जो आवश्यकहोते हैं वे अरबी फ़ारसीसेलियेजातेहैं; व्याकरण दोनोंकी प्राय एकहिहै। व्याकरण विनाकोई भाषा नियम बद्धनहिं होती। जिसभाषामे विविधविद्याओंकी पुस्तकें रचीजावें उसकी व्याकरण आगे चाहिये। हिन्दीभाषामे विद्याकी उन्नतिकी अत्यन्त आवश्यकताहै। इसनिमित्त उसके व्याकरण की भी आवश्यकता हुईहै॥

हिन्दी भाषाके दो तीन व्याकरणहैं यथा आदम साहबकी व्याकरण भाषा चन्द्रोदय और उर्दू मार्त्तण्ड। इनमेसे शेषोक्तमे यद्यपि हिन्दी शब्दों के रूप सिद्ध हुएहैं; वस्तुतःउसका उद्देश्य उर्दू भाषाके नियम ज्ञापनसे है; इसलिये हिन्दीके यथार्थ व्याकरणोंकी गिन्तीमे से उसे निकालदेना चाहिये। अवशिष्ट व्याकरणोंसेभी हिन्दीके व्याकरण का सारा उद्देश्यसिद्ध नहि होता। क्योंकि आदम साहबकी व्याकरण अंगरेजी व्याकरण के नमूने परहै; अतएव हिन्दीभाषाके नियमोंको स्वाभाविक रीतिसे इसमे वर्णन नहिं किया गया। भाषाचन्द्रोदय

की रीति स्वाभाविक है; पर इसमें सामान्य वा अनावश्यक विषयोंका विस्तार किया गया है; और जो अत्यन्त आवश्यक था, अर्थात् संस्कृत शब्द जो भाषामें व्यवहृत होते हैं उनके नियम, नहिं दियेगए यह न्यूनता आदम साहिबकी व्याकरणमें भी है। भाषाचन्द्रोदयका सरकारी पाठशालाओंमें बहुत प्रचार है; पर इसमें, उक्त न्यूनता हेतु, संस्कृतके नहिं जानने वालोंको हिन्दीका यथोचित परिज्ञान वा रचना करनेकी सामर्थ्य नहिं होती। इन सब अभावोंके पूर्णताके निमित्त यह व्याकरण एक नई स्वाभाविक रीतिसे विरचित हुआ है॥

इस व्याकरणके प्रथम और तृतीय भागमें वे सब विषय आगए हैं जो भाषा चन्द्रोदयमें हैं, पर उसका अनावश्यक विस्तार त्याग कियागया। क्रिया प्रकरण और पदयोजनाकी रीति सम्पूर्ण नवीन है;। अन्यान्य प्रकरणोंकी रीति भी कुछ नवीन है। और यह नवीन रीतिके अवलम्बनका हेतु यह है कि यह हमको स्वाभाविक और श्रेष्ठ प्रतीति हुई। द्वितीयभागमें संस्कृत व्याकरणके वे सब नियम लियेगए हैं; जो भाषामें व्यवहृत संस्कृत शब्दोंके उपयोगी हैं। इस भागके परिज्ञानसे पाठकको पीछे संस्कृत व्याकरणके सीखनेकी भी, यदि आवश्यकता हो, सुगमता होजायगी। संस्कृतके सिवा और सब भाषाओंमें छन्दोंके रचनाकी विद्या प्रायशः व्याकरणकाहि एक अंश गिनाजाता है; वस्तुतः गद्य रचनाके निमित्त जैसे व्याकरणके अन्य भागोंकी आवश्यकता है पद्य रचनाके निमित्त वैसेहि छन्द प्रकरणकी आवश्यकता है। इस निमित्त इस ग्रन्थके चतुर्थभागमें छन्द प्रकरण सन्निवेशित कियागया है। छन्द प्रकरणमें संस्कृतके प्रसिद्ध छन्दो ग्रन्थ वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके सारे

छन्दलिये गए हैं; बङ्गाली छन्दःप्रकाश और लालाविहारीलाल- के पञ्जाबी व्याकरण से भी कुछ छन्दलिये गएहैं। ग्रन्थ बाहुल्य- के भयसे छन्दोंके दृष्टान्त यथावश्यक थोड़ेसेहि दिखलाएगए हैं॥ अन्तमें श्रीयुक्तपण्डितरामकमलविद्यालङ्कारकेधातुविवे कके सारे धातुओंकी एकतालिका दीगईहै; और प्रत्येक धातु- के सामने तन्निष्पन्न कोई२ शब्द भी उक्त ग्रन्थसे लेकर दिखलाए गएहैं। इन सबोंको जानलेनेसे ऐसे प्रायसारे संस्कृत शब्द ज्ञात होजांयगे जो हिन्दीभाषामे व्यवहृतहोतेहैं। इस निमित्त यह धा तुविवेक अत्यन्त उपकारीहै। इस पुस्तकके ५८ पृष्ठलिङ्गज्ञा सन प्रकरणमे यह लिखा गयाहै कि स्त्री लिङ्ग अकारान्त वा व्य ञ्जनान्त शब्दोंकी तालिका पीछेदी जावेगी; पर ग्रन्थ के बढ़ जा- नेसे यह नहोसका; किन्तु उस्की आवश्यकता भी बहुत नहिं सम झीगई। परिशेषमे विरामादिके चिन्हभी आवश्यकीय समझकर दिखलाएगएहैं॥

व्याकरण वा कोशके कई ग्रन्थ रहनेसे पीछे तदनुसार कोई व्याक रण वा कोश बनाना जैसा सहजहै; नया व्याकरण वा कोश बनाना वैसा सहज नहिं। किसी भाषाकी व्याकरण प्रथम बनानी बड़े कष्ट और विवेचनासाध्यहै, इस निमित्त उसमे कोई भ्रम प्रमाद हो जाना भी असम्भव नहिं। ऊपर कह चुके कि यह व्याकरण सम्पू र्ण नई रीतिसे बनाहै, यहांतक कि प्रचलित हिन्दी व्याकरण से इसमे कुछ सहायता नहिंलीगई। अतएव इसमे यदिकोई भूल चू क हो तो विद्वान सज्जन क्षमाकरें, वरञ्च सुधारलें॥

सूचीपत्र

प्रथमभाग

विषय	पृष्ठ
वर्णनिर्णय	१
शब्दनिर्णय	२
विशेष्यशब्द	२
अकारान्तशब्दकेरूप	३
आकारान्त — तथा	४
इवर्णान्त — तथा	५
उवर्णान्त — तथा	६
एकारान्त, ओकारान्त — तथा	६
विशेषणशब्द	७
प्रतिनिधिशब्द	८
तथा — शब्दोंकेरूप	८
क्रियाप्रकरण	१३
अकारान्तसकर्मकधातुकर्तृवाच्यकेरूप	१३
— तथा — कर्मवाच्य तथा	१६
प्रेरणार्थक धातुकेरूप	१८
निदर्शन	२१
अकारान्त अकर्मकधातुकेरूप	२२
आकारान्त — तथा	२३
निदर्शन	२३
अकर्मक "होना" धातुकेरूप	२४
निदर्शन	२५

विषय	पृष्ठ
द्वित्वधातुकक्रिया	२६
क्रियाविशेषण	२७
क्रियाद्योतकधातुसंज्ञा	२८
क्रियासम्बन्धीयनियम	२९
अव्यय	३१
क्रियाविशेषण	३१
पार्श्ववर्त्तीशब्द	३१
द्योतकशब्द	३२
उच्छ्वसितभावद्योतकशब्द	३२
नामके विशेषण	३२
द्वितीयभाग	
संस्कृतशब्दोंकावर्णनजोहिन्दीभाषामेंव्यवहृतहोतेहैं	३३
सन्धि स्वरसन्धि	३३
व्यञ्जनसन्धि	३४
विसर्गसन्धि	३५
णत्वविधान	३७
षत्वविधान	३७
कृदन्तशब्द	३८
साधारणनियम	३८
कृत् प्रत्यय	३९
तद्धितान्तशब्द	४६
साधारणनियम	४६
तद्धितप्रत्यय	४६
हिन्दीतद्धितप्रत्यय	४८

विषय		पृष्ठ
समास		४८
अव्ययीभाव समास		४९
तत्पुरुष समास		४९
कर्मधारय समास		४९
द्विगु समास		४९
द्वन्द्व समास		४९
बहुब्रीहि समास		४९
तृतीयभाग		
वाक्यरचनावर्णन		५०
पदयोजनाकीरीति		५१
कर्त्ताकारक	सम्बन्धीयनियम	५१
कर्मकारक	तथा	५१
करणकारक	तथा	५२
सम्प्रदानकारक	तथा	५३
अपादानकारक	तथा	५३
सम्बन्ध	तथा	५३
आधार	तथा	५४
सम्बोधन	तथा	५४
विशेषण	तथा	५५
प्रतिनिधिशब्द	तथा	५५
क्रिया	तथा	५५
क्रियाविशेषण	तथा	५५
धातुसंज्ञा	तथा	५६
क्रियाविशेषणअव्यय	तथा	५६

विषय	पृष्ठ
योजक तथा	५६
लिङ्गानुशासन	५७
चतुर्थभाग	
छन्दप्रकरण	५९
वर्णछन्द	६०
गणक्रम	६०
समवृत्त	६०
अर्द्धसमवृत्त	६८
विषमवृत्त	६९
दृष्टान्त	७१
पादक्रम	७१
मात्राछन्द	७८
गणक्रम	७९
पादक्रम	८०
पाठविवेक	से २१
विरामादिकेचिह्न	२१, २२

प्रथमभाग

अथ वर्णनिर्णय

वर्ण दो प्रकारके हैं, स्वर और व्यञ्जन
स्वर भी दो प्रकारके हैं, ह्रस्व और दीर्घ
ह्रस्व स्वर येहैं, अ, इ, उ, ऋ, ऌ,
दीर्घ स्वर येहैं, आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ,

व्यञ्जन वर्ण चार प्रकारके हैं यथा। स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म, और, अयोगवाह।

स्पर्श वर्ण पांच वर्गोंमे विभक्त हैं यथा।

क ख ग घ ङ. इनको कवर्गीय कहते हैं
च छ ज झ ञ इनको चवर्गीय कहते हैं
ट ठ ड ढ ण इनको टवर्गीय कहते हैं
त थ द ध न इनको तवर्गीय कहते हैं
प फ ब भ म इनको पवर्गीय कहते हैं
अन्तस्थ वर्ण, य, र, ल, व, इन चारोंको कहते हैं
उष्म वर्ण श, ष, स, ह, इन चारोंको कहते हैं
अयोगवाह अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) को कहते हैं

अथ शब्द निर्णय

हिन्दी भाषामे त्रिविध शब्द व्यवहृत होते हैं यथा हिन्दी, संस्कृत, और विदेशीय। पूर्वोक्त दो प्रकारके शब्दोंका अभाव होनेसेहि शेषोक्त प्रकारके शब्दोंका व्यवहार होना चाहिए। * शब्द ५ प्रकारकेहैं यथा। विशेष्य, विशेषण, प्रतिनिधि, क्रियावाचक, और अव्यय। प्रथमोक्त तीनको नाम भी कहतेहैं। नाम ४ प्रकार के हैं यथा रूढ़ कृदन्त, तद्धितान्त और समस्त, संस्कृत सारे शब्द प्राय उपसर्ग धातु और प्रत्ययसे निष्पन्न होतेहैं। विदेशीय शब्द प्रयोजनानुसार उर्दु और अंगरेज़ी प्रभृति भाषाओं से लियजातेहैं। विभक्त्यन्त शब्दको पद कहतेहैं। नाम और क्रियाके विशेष वर्णन के निमित्त विभक्तिएं लगतीहैं।

विशेष्यशब्द

विशेष्य पदोंमे लिङ्ग, वचन, और विभक्तिए होतीहैं,
हिन्दी भाषामे पुँलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ये दोलिङ्ग होतेहैं;
और एकवचन और बहुवचन ये दो बचन होतेहैं;
और कर्त्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, और सम्बोधन ये ८ विभक्तिएं होतीहैं ॥

* यह नियम शुद्ध हिन्दीके निमित्त है, मिश्रहिन्दीके निमित्त नहि।

अकारान्तशब्दके रूप

व्यञ्जनान्त अथवा अकारान्तशब्दके रूप ऐसे होते हैं

पुंलिङ्ग-बालकशब्द   स्त्रीलिङ्ग-दुकानशब्द

विभक्ति	१वचन	बहुवचन	१वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	बालक	बालक	दुकान	दुकानें
२ कर्म्म	बालकको	बालकोंको	दुकानको	दुकानोंको
३ करण	बालकसे	बालकोंसे	दुकानसे	दुकानोंसे
	——करके	——करके	——करके	——करके
	——केद्वारा	——केद्वारा	——केद्वारा	——केद्वारा
४ सम्प्रदान	बालकके लिये	बालकोंके लिये	दुकानके लिये	दुकानोंके लिये
	——केनिमित्त	——केनिमित्त	——केनिमित्त	——केनिमित्त
	——को	——को	——को	——को
५ अपादान	बालकसे	बालकोंसे	दुकानसे	दुकानोंसे
६ सम्बंध	बालकका (पिता)	बालकोंका	दुकानका	दुकानोंका
	——की (माता)	——की	——की	——की
	——के (मामे)	——के	——के	——के
	——की (बहनें)	——की	——की	——की
७ अधिकरण	बालकमें	बालकोंमें	दुकानमें	दुकानोंमें
	——पर	——पर	——पर	——पर
	——केविषय	——केविषय	——केविषय	——केविषय
८ सम्बोधन	हे बालक	हे बालको	हे दुकान	हे दुकानो

आकारान्तशब्दके रूप

विभक्ति	पुंलिङ्ग·लड़काशब्द १ वचन	बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग·माताशब्द १ वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	लड़का	लड़के	माता	माता
२ कर्म्म	लड़केको	लड़कोंको	माताको	माताओंको
३ करण	लड़केसे	लड़कोंसे	मातासे	माताओंसे
	—करके	—करके	—करके	—करके
	—केद्वारा	—केद्वारा	—केद्वारा	—केद्वारा
४ सम्प्रदान	लड़केकेलिये	लड़कोंकेलिये	माताकेलिये	माताओंकेलिये
	—केनिमित्त	—केनिमित्त	—केनिमित्त	—केनिमित्त
	—को	—को	—को	—को
५ अपादान	लड़केसे	लड़कोंसे	मातासे	माताओंसे
६ सम्बन्ध	लड़केका	लड़कोंका	माताका	माताओंका
	—के	—के	—के	—के
	—की	—की	—की	—की
७ अधिकरण	लड़केमे	लड़कोंमे	मातामे	माताओंमे
	—पर	—पर	—पर	—पर
	—केविषय	—केविषय	—केविषय	—केविषय
८ सम्बोधन	हेलड़के	हेलड़को	हेमाता	हेमाताओ

संस्कृत तृ प्रत्ययान्त शब्द पुलिङ्ग·होनेसेभी उनके माता शब्दकी-न्याई रूप होतेहैं यथा भ्राता, भ्राताको, भ्राताओंको इत्यादि

संस्कृत तृ प्रत्ययान्त शब्द के सम्बोधन मे इसप्रकारके रूप भी होतेहैं यथा हेमातः हेपितः हेपितरो

संस्कृत आकारान्त शब्द सम्बोधनके एकवचनमे एकारान्तभी होजा तेहैं यथा हेगङ्गे.

काका, नाना, मामा, और आकारान्त संज्ञा वाचक शब्द पुंलिङ्ग होने सेभी उन्के रूप माता शब्दकी न्याइ होतेहैं यथा, काकाको, नानाको, मामाको, रामाको इत्यादि। दादाशब्दविकल्प करके माताशब्दकी न्याई होताहै यथा, दादाको, (वा) दादेको

इवर्णान्तशब्दके रूप

स्त्रीलिङ्ग लड़कीशब्द

विभक्ति	१ वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	लड़की	लड़कियां (वा) लड़किये
२ कर्म्म	लड़कीको	लड़कियोंको
३ करण	लड़कीसे	लड़कियोंसे
	——करके	——करके
	——केद्वारा	——केद्वारा
४ सम्प्रदान	लड़कीकेलिये	लड़कियोंकेलिये
	——केनिमित्त	——केनिमित्त
	——को	——को
५ अपादान	लड़कीसे	लड़कियोंसे
६ सम्बन्ध	लड़कीका	लड़कियोंका
	——के	——के
	——की	——की
७ अधिकरण	लड़कीमे	लड़कियोंमे
	——पर	——पर
	——केविषय	——केविषय
८ सम्बोधन	हेलड़की	हेलड़कियो

इकारान्त और ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्दके रूपभी लड़की शब्दकी न्याइ होते[1] हैं केवल इतना विशेष है कि कर्त्ताका बहुवचन उस्के एकवचनकी न्याई होताहै यथा हाथी, साथी, प्रभृति और इकारान्त शब्दके सम्बोधन का एक वचन एकारान्तभी होताहै यथा हरि, हे हरे

उवर्णान्तशब्दके रूप

उवर्णान्त[1] शब्दके रूपभी इवर्णान्तकी न्याई होतेहैं केवल इतना विशेष है कि बहुवचनमे अन्त्य उवर्ण के स्थानमे उव होजाताहै यथा बधू शब्द, बधुवोंका इत्यादि

ऋकारान्त और ऌकारान्तशब्द हिन्दीमे नहिं होते; संस्कृतमे होतेहैं, परन्तु हिन्दी भाषामे वे शब्द व्यवहृत होनेसे माता शब्दकीन्याई उन्के रूप होतेहैं।

एकारान्तशब्दके रूप   ओकारान्तशब्दके रूप

विभक्ति	१ वचन	बहुवचन	दोशब्द[2]	दोनोशब्द
१ कर्त्ता	चौबे	चौबे	दो	दोनो
२ कर्म्म	चौबेको	चौबोंको	दोको	दोनोको
३ करण	चौबेसे	चौबोंसे	दोसे	दोनोसे
	—करके	—करके	—करके	—करके
	—केद्वारा	—केद्वारा	—केद्वारा	—केद्वारा
४ सम्प्रदान	चौबेकेलिये	चौबोंकेलिये	दोकेलिये	दोनोकेलिये
	—केनिमित्त	—केनिमित्त	—केनिमित्त	—केनिमित्त
	—को	—को	—को	—को
५ अपादान	चौबेसे	चौबोंसे	दोसे	दोनोसे
६ सम्बन्ध	चौबेका	चौबोंका	दोका	दोनोका
	—के	—के	—के	—के
	—की	—की	—की	—की
७ अधिकरण	चौबेमे	चौबोंमे	दोमे	दोनोमे
	—पर	—पर	—पर	—पर
	—केविषय	—केविषय	—केविषय	—केविषय
८ सम्बोधन	हे चौबे	हे चौबो	हे दो	हे दोनो

(१) एकवचनमें इकारान्त उवर्णान्त शब्द उकारान्त उवर्णान्त हि रहतेहैं लड़की शब्दकी न्याई ईकारान्त नहिं होजाते। निदर्शन। उल्लिखित उदाहरणोंमे स्पष्ट होगा कि बहुवचनमे कर्म्मादिकी विभक्ति परे होनेसे ओ प्रत्यय लगता है॥

(२) दो और दोनो शब्दका एकवचन नहि है

विशेषणशब्द

विशेष्य के गुणादि का जो वर्णन करे उसे विशेषण कहतेहैं यथा ज्ञानी मनुष्य, शरणापन्न पुरुष, सबस्त्रियें। यहां ज्ञानी, शरणापन्न, और सब शब्द विशेषणहैं और मनुष्य, पुरुष, और स्त्री शब्द विशेष्य। विशेष्य जिस लिङ्ग का हो विशेषणभी उसीलिङ्ग का होताहै परन्तु विशेष्यके सहित योजित होनेसे विशेषण में वचन और विभक्तिए नहिं लगतीं। आकारान्त विशेषण, कर्त्ताके एकवचन भिन्न विभक्त्यन्त विशेष्य परे होनेसे एकारान्त होजाताहै यथा अच्छाबालक, अच्छेबालकको, अच्छे बालक इत्यादि

जिस वाक्यमें विशेष्य नहो और विशेषणहि विशेष्यका कामदे वहां विशेष्य की न्याई विशेषणमे विभक्तिएं होंगी यथा दुःखियों को कष्ट नदो

स्त्रीलिङ्ग विशेष्यका विशेषण आकारान्त होनेसे ईकारान्त होजाताहै यथा। अच्छीलड़की। बड़ीबहेन। विशेषण कोई नित्य होतेहैं कोई अनित्य। नित्य विशेषण सदा विशेषणहि रहतेहैं, और अनित्य विशेषण वस्तुतः विशेष्य होतेहैं पर कोई २ स्थलमें विशेषणहो जातेहैं यथा दिया अमुल्य धनहै यहां अमुल्यशब्द नित्य विशेषणहै, और धन शब्द अनित्य विशेषण।

प्रतिनिधिशब्द

प्रतिनिधिशब्द विशेष्य के स्थानमे उस्की पुनरुक्ति निवारणार्थ लगते हैं, यथा " परमेश्वरकी भक्ति करो और उस्केप्रियकार्य्य साधनमे यत्न करो" यहां "उस्का" शब्द "परमेश्वर" शब्दका प्रतिनिधि है ॥

प्रतिनिधिशब्दके तीन पुरुषहैं यथा, उत्तम, मध्यम, अन्य।

उत्तम पुरुषके २ शब्दहैं यथा । मै, हम

मध्यम——— ३ शब्दहैं यथा । तू, तुम, आप

अन्य(१)——— अनेक शब्दहैं यथा। वह, वे, यह, ये, जो, सो, कौन, कोई, इत्यादि

प्रतिनिधि शब्द उभयलिङ्गी होतेहैं; इनमे एक और बहुवचनकी सात विभक्तियें होतीहैं

प्रतिनिधिशब्दोंके रूप

	मै		हम	तू	
विभक्ति	१वचन	बहुवचन	(वा) बहुवचन	१वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	मै	हमलोग	हम	तू	तुमलोग
२ कर्म्म	मुझको, वा मुझे	हमलोगोंको	हमको, वा हमे	तुझको, वा तुझे	तुमलोगोंको
३ करण	मुझसे	हमलोगोंको	हमसे	तुझसे	तुमलोगोंसे
४ सम्प्रदान	मेरेलिये	हमलोगोंकेलिये	हमारेलिये	तेरेलिये	तुमलोगोंकेलिये
	मेरेनिमित्त	हमारेनिमित्त	हमारेनिमित्त	——निमित्त	——केनिमित्त
	मुझको	हमको	हमको	तुझको	——को
५ अपादान	मुझसे	हमलोगोंसे	हमसे	तुझसे	तुमलोगोंसे
६ सम्बध	मेरा(लडका)	हमलोगोंका	हमारा	तेरा	तुमलोगोंका
	मेरे(लडके)		हमारे	तेरे	
	मेरी(लड़की)(वा) (लड़कीयां)		हमारी	तेरी	
७ अधिकरण	मुझमे	हमलोगोंमे	हममे	तुझमे	तुमलोगोंमे
	मुझपर	——पर	हमपर	तुझपर	——पर
	मेरेविषय	——केविषय	हमारेविषय	तेरेविषय	——विषय

(१) सारे विशेष्यविशेषणभी अन्य पुरुषकेहैं परन्तु वे प्रतिनिधि संज्ञक नहिंहैं ।

	तुम	आप		वह	
विभक्ति	१(वा)बहु	१वचन	बहुवचन	१वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	तुम	आप	आपलोग	वह	वे (१)
२ कर्म्म	तुमको,(वा)तुम्हे	आपको	आपलोगोंको	उस्को,उसे	उन्को,उन्होंको
३ करण	तुमसे	आपसे	आपलोगोंसे	उस्से	उन्से
	तुम्हारेद्वारा	आपकेद्वारा	——केद्वारा	उस्केद्वारा	उन्केद्वारा
४ सम्प्रदान	तुम्हारेलिये	आपकेलिये	आपलोगोंकेलिये	उस्केलिये	उन्केलिये
	तुम्हारेनिमित्त	आपकेनिमित्त	——केनिमित्त	उस्केनिमित्त	उन्केनिमित्त
	तुमको	आपको	——को	उस्को	उन्को
५ अपादान	तुमसे	आपसे	आपलोगोंसे	उस्से	उन्से
६ सम्बन्ध	तुम्हारा	आपका	आपलोगोंका	उस्का	उन्का
	तुम्हारे	आपके	——के	उस्के	उन्के
	तुम्हारी	आपकी	——की	उस्की	उन्की
७ अधिकरण	तुममे	आपमे	आपलोगोंमे	उस्मे	उन्मे
	तुमपर	आपपर	आपलोगोंपर	उस्पर	उन्पर
	तुम्हारेविषय	आपकेविषय	——केविषय	उस्केविषय	उन्केविषय

(१) कर्म्मादि विभक्ति से लेकर "उन्"के स्थानमे "उन्हों" भी होताहै

विभक्ति	यह — १ वचन	यह — बहुवचन	जो — १ वचन	जो — बहुवचन
१ कर्त्ता	यह	ये	जो	जो
२ कर्म्म	इस्को, इसे	इन्को, इन्हको[1]	जिस्को, जिसे	जिन्को, जिन्हको[1]
३ करण	इस्से	इन्से,	जिस्से	जिन्से,
	इस्केद्वारा	इन्केद्वारा	जिस्केद्वारा	जिन्केद्वारा
४ सम्प्रदान	इस्केलिये	इन्केलिये	जिस्केलिये	जिन्केलिये
	इस्केनिमित्त	इन्केनिमित्त	जिस्केनिमित्त	जिन्केनिमित्त
	इस्को	इन्को	जिस्को	जिन्को
५ अपादान	इस्से	इन्से	जिस्से	जिन्से
६ सम्बन्ध	इस्का	इन्का	जिस्का	जिन्का
	इस्के	इन्के	जिस्के	जिन्के
	इस्की	इन्की	जिस्की	जिन्की
७ अधिकरण	इस्मे	इन्मे	जिस्मे	जिन्मे
	इस्पर	इन्पर	जिस्पर	जिन्पर
	इस्केविषय	इन्केविषय	जिन्केविषय	जिन्केविषय

(१) कर्म्मादि विभक्ति सेलेकर "इन" "जिन" के स्थानमे इन्हो जिन्हो भी होता है ।

	सो*		कौन		कोई
विभक्ति	१वचन	बहुवचन	१वचन	बहुवचन	१वचन
१ कर्त्ता	सो	सो	कौन, वा कौनसा	कौन, कौनसे	कोई
२ कर्म्म	तिस्को, तिसे	तिन्को, तिन्होंको	किस्को, किसे	किन्को	किसीको
३ करण	तिस्से	तिन्से (१)	किस्से	किन्से	किसीसे
	तिस्केद्वारा	तिन्केद्वारा	किस्केद्वारा	किन्केद्वारा	किसीकेद्वारा
४ सम्प्रदान	तिस्केलिये	तिन्केलिये	किस्केलिये	किन्केलिये	किसीकेलिये
	तिस्केनिमित्त	तिन्केनिमित्त	किस्केनिमित्त	किन्केनिमित्त	किसीकेनिमित्त
	तिन्को	तिन्को	किस्को	किन्को	किसीको
५ अपादान	तिस्से	तिन्से	किस्से	किन्से	किसीसे
६ सम्बन्ध	तिस्का	तिन्का	किस्का	किन्का	किसीका
	तिस्के	तिन्के	किस्के	किन्के	किसीके
	तिस्की	तिन्की	किस्की	किन्की	किसीकी
७ अधिकरण	तिस्मे	तिन्मे	किस्मे	किन्मे	किसीमे
	तिस्पर	तिन्पर	किस्पर	किन्पर	किसीपर
	तिस्केविषय	तिन्केविषय	किस्केविषय	किन्केविषय	—केविषय

जो, कोई, ये दो शब्द युक्तभी होजाते हैं यथा, जो कोई, जिस किसीको इत्यादि ।

* सो के स्थानमे प्रायशः वह आदेश होजाता है

(१) कर्मादि विभक्तिसे लेकर "तिन" के स्थानमे तिन्होभी होता है

अथक्रियाप्रकरण

आत्माके दैहिक अथवा मानसिक व्यापारको और जड़ अथवा प्राणी के वेग और अवस्थान्तर प्राप्तिको क्रिया कहतेहैं ।

क्रिया वाचक शब्द धातु संज्ञक होतेहैं । हिन्दीभाषाके धातु 'ना' प्रत्यान्त होतेहैं । यथा चलना देखना सोचना हिलना जलना इत्यादि। धातुओंमेसे कोई अकर्म्मक होतेहैं कोई सकर्म्मक । अकर्म्मकधातुकी क्रियामे कर्म्म विभक्तिवालाशब्द नहिं लगता, परन्तु सकर्म्मक धातुकी क्रियामे लगताहै चाहे उक्तहो चाहे नहिं यथा "मैं सोताहूं" यह अकर्म्मक क्रियाहै, "मै देखताहूं" यह सकर्म्मकक्रियाहै क्योंकि किसी वस्तुको देखताहूं । अकर्म्मक धातु कुछ रूपभेदसे सकर्म्मक भी होजातेहैं, और ये रूपान्तरापन्नहोकर प्रेरणार्थकभी होजातेहैं यथा मैं गिरताहूं, मै उस्कोगिराताहूं, मैउसेंउस्कोगिरवाताहूं । प्रथमोक्तमे कर्म्मका अभावहै, द्वितीयमे कर्म्मकी अपेक्षाहै, शेषोक्तमे कर्त्ता करण और कर्म्मकी आवश्यकताहै ।

सकर्म्मकक्रिया कर्तृवाच्य और कर्म्मवाच्य भेदसे द्विविधा होतीहै यथा विद्वान पुस्तक रचतेहैं, पुस्तक विद्वानोके द्वारा रचीजातीहै । इस उदाहरणासे यहभी प्रतीतहोगा कि कर्तृवाच्यमे जोकर्त्ताहोताहै कर्म्मवाच्यमें वह करण होजाताहै; और कर्तृवाच्यमे जोकर्म्महोताहै, कर्म्मवाच्यमे वह कर्त्ता होजाताहै ।

क्रियामे तीनकाल होतेहैं, वर्त्तमान, भूत, और भविष्यत, और भूतकालिकक्रिया दो प्रकारकी होतीहैं, निश्चयात्मिका; और अनिश्चयात्मिका । निश्चयात्मक भूतकाल फेर ४ प्रकारकाहोताहै अद्यतन, अन-

द्यतन, परोक्ष और निरन्तर; अनिश्चयात्मक भूतकालभी ४ प्रकारकाहै अपूर्ण अद्यतन, अपूर्ण अनद्यतन, सन्दिग्ध, सन्दिग्धनिरन्तर

भविष्यत्कालिक क्रिया ३ प्रकारकी होतीहै, अनिश्चयात्मिका, निश्चयात्मिका, और अनुज्ञा, अनुज्ञात्वरित और विलम्बित भेद-करके द्विविधाहै।

कर्ताके लिङ्ग; वचन और पुरुषके अनुसार क्रियाके भी लिङ्ग; वचन, और पुरुष होतेहैं; परन्तु जहां कर्ताके पीछे 'ने' प्रत्ययलगताहै वहां क्रियाकेलिङ्ग कर्मके लिङ्गके अनुसारहोतेहैं।

क्रियाके रूप

अकारान्त सकर्म्मक धातु "लिखना"

कर्तृवाच्य

वर्त्तमानकाल

	पुँलिङ्ग-कर्तृक		स्त्रीलिङ्ग-कर्तृक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ॰पु॰	मैंलिखताहूं	हम(वा)हमलोगलिखतेहैं	मैंलिखतीहूं	हमलिखतीहैं
म॰पु॰	तूलिखताहै	तुम(वा)तुमलोगलिखतेहो	तूलिखतीहै	तुमलिखतीहो
अ॰पु॰	वहलिखताहै	वे लिखतेहैं	वहलिखतीहै	वेलिखतीहैं

भूतकाल

अद्यतन

	पुँलिङ्ग-कर्म्मक		स्त्रीलिङ्ग-कर्म्मक	
उ॰पु॰	मैंनेलिखा	हमनेलिखा	मैंनेलिखी	हमनेलिखी
म॰पु॰	तूनेलिखा	तुमनेलिखा	तूनेलिखी	तुमनेलिखी
अ॰पु॰	उसनेलिखा[1]	उन्होनेलिखा	उसनेलिखी	उन्होनेलिखी

(१) "ने" परे होनेसे नामका अन्त्य "आ" के स्थानमे ए होजाताहै यथा लड़केने। बहुवचनमे नामका अन्त्यवर्ण, ने परे होनेसे, वैसाहि परिवर्तहोजाताहै जैसा कि कर्म्मादि विभक्ति परे होने से होताहै यथा बालकोंने।

अनद्यतन

	पुंलिङ्ग-कर्म्मक एकवचन	पुंलिङ्ग-कर्म्मक बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग-कर्म्मक एकवचन	स्त्रीलिङ्ग-कर्म्मक बहुवचन
उ.पु.	मैनेलिखाहै	हमनेलिखाहै	मैनेलिखीहै	हमनेलिखीहै
म.पु.	तूनेलिखाहै	तुमनेलिखाहै	तूनेलिखीहै	तुमनेलिखीहै
अ.पु.	उसनेलिखाहै	उन्होंनेलिखाहै	उसनेलिखीहै	उन्होंनेलिखीहै

परोक्ष

उ.पु.	मैनेलिखाथा	हमनेलिखाथा	मैनेलिखीथी	हमनेलिखीथीं
म.पु.	तूनेलिखाथा	तुमनेलिखाथा	तूनेलिखीथी	तुमनेलिखीथीं
अ.पु.	उसनेलिखाथा	उन्होंनेलिखाथा	उसनेलिखीथी	उन्होंनेलिखीथीं

निरन्तर

	पुंलिङ्ग-कर्तृक		स्त्रीलिङ्ग-कर्तृक	
उ.पु.	मैलिखताथा	हमलिखतेथे	मैलिखतीथी	हमलिखतीथीं
म.पु.	तूलिखताथा	तुमलिखतेथे	तूलिखतीथी	तुमलिखतीथीं
अ.पु.	वहलिखताथा	वेलिखतेथे	वहलिखतीथी	वेलिखतीथीं

अपूर्णअद्यतन

उ.पु.	मैलिखता	हमलिखते	मैलिखती	हमलिखतीं
म.पु.	तूलिखता	तुमलिखते	तूलिखती	तुमलिखतीं
अ.पु.	वहलिखता	वेलिखते	वहलिखती	वेलिखतीं

अपूर्णअनद्यतन

	पुं-कर्म्मक		स्त्री-कर्म्मक	
उ.पु.	मैनेलिखाहोता	हमनेलिखाहोता	मैनेलिखीहोती	हमनेलिखीहोती
म.पु.	तूनेलिखाहोता	तुमनेलिखाहोता	तूनेलिखीहोती	तुमनेलिखीहोती
अ.पु.	उसनेलिखाहोता	उन्होंनेलिखाहोता	उसनेलिखीहोती	उन्होंनेलिखीहोती

सन्दिग्ध

	पुं कर्म्मक		स्त्री कर्म्मक (रवीहोगी
उ॰पु॰	मैनेलिखाहोगा	हमनेलिखाहोगा	मैनेलिखीहोगी हमनेलि
म॰पु॰	तूनेलिखाहोगा	तुमनेलिखाहोगा	तूनेलिखीहोगी तुमनेलिखीहोगी
अ॰पु॰	उसेनेलिखाहोगा	उन्होनेलिखाहोगा	उसनेलिखीहोगी उन्होनेलिखीहोगी

सन्दिग्धनिरन्तर

	पुं॰कर्तृक		स्त्रीकर्तृक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ॰पु॰	मैलिखताहूंगा	हमलिखतेहोंगे	मैलिखतीहूंगी	हमलिखतीहोंगी
म॰पु॰	तूलिखताहोगा	तुमलिखतेहोगे	तूलिखतीहोगी	तुमलिखतीहोगी
अ॰पु॰	वहलिखताहोगा	वेलिखतेहोंगे	वहलिखतीहोगी	वेलिखतीहोंगी

भविष्यत्काल

अनिश्चयात्मक

	उभयलिङ्ग॰कर्तृक	
उ॰पु॰	मैलिखूं	हमलिखें
म॰पु॰	तूलिखे	तुमलिखो
अ॰पु॰	वहलिखे	वेलिखें

निश्चयात्मक

	पुं॰कर्तृक		स्त्रीकर्तृक	
उ॰पु॰	मैलिखूंगा	हमलिखेंगे	मैलिखूंगी	हमलिखेंगी
म॰पु॰	तूलिखेगा	तुमलिखोगे	तूलिखेगी	तुमलिखोगी
अ॰पु॰	वहलिखेगा	वेलिखेंगे	वहलिखेगी	वेलिखेंगी

आज्ञा

	त्वरित		विलम्बित	
	उभयलिङ्ग॰		उभयलिङ्ग॰	
उ॰पु॰	तूलिख	तुमलिखो	तूलिखना	तुमलिखना

अकारान्तसकर्मकधातु "देखना"

कर्मवाच्य

वर्तमानकाल

	पुंलिङ्गकर्तृक एकवचन	पुंलिङ्गकर्तृक बहुवचन	स्त्रीकर्तृक एकवचन	स्त्रीकर्तृक बहुवचन
उ॰पु॰	मैंदेखाजाताहूं	हमदेखेजातेहैं	मैंदेखीजातीहूं	हमदेखीजाती
म॰पु॰	तूदेखाजाताहै	तुमदेखेजातेहो	तूदेखीजातीहै	तुमदेखीजातीहो
अ॰पु॰	वहदेखाजाताहै	वेदेखेजातेहैं	वहदेखीजातीहै	वेदेखीजातीहैं

भूतकाल

अद्यतन

उ॰पु॰	मैंदेखागया	हमदेखेगये	मैंदेखीगयी	हमदेखीगईं
म॰पु॰	तूदेखागया	तुमदेखेगये	तूदेखीगयी	तुमदेखीगईं
अ॰पु॰	वहदेखागया	वेदेखेगये	वहदेखीगयी	वेदेखीगईं

अनद्यतन

उ॰पु॰	मैंदेखागयाहूं	हमदेखेगयेहैं	मैंदेखीगयीहूं	हमदेखीगईहैं
म॰पु॰	तूदेखागयाहै	तुमदेखेगयेहो	तूदेखीगयीहै	तुमदेखीगईहो
अ॰पु॰	वहदेखागयाहै	वेदेखेगयेहैं	वहदेखीगयीहै	तुमदेखीगईहैं

परोक्ष

उ॰पु॰	मैंदेखागयाथा	हमदेखेगयेथे	मैंदेखीगयीथी	हमदेखीगईंथीं
म॰पु॰	तूदेखागयाथा	तुमदेखेगयेथे	तूदेखीगयीथी	तुमदेखीगईंथीं
अ॰पु॰	वहदेखागयाथा	वेदेखेगयेथे	वहदेखीगयीथी	वेदेखीगईंथीं

निरन्तर

उ॰पु॰	मैंदेखाजाताथा	हमदेखेजातेथे	मैंदेखीजातीथी	हमदेखीजाती (थीं)
म॰पु॰	तूदेखाजाताथा	तुमदेखेजातेथे	तूदेखीजातीथी	तुमदेखीजातीथीं
अ॰पु॰	वहदेखाजाताथा	वेदेखेजातेथे	वहदेखीजातीथी	वेदेखीजातीथीं

अपूर्ण अद्यतन

	पुंलिङ्ग-कर्तृक एकवचन	पुंलिङ्ग-कर्तृक बहुवचन	स्त्रीकर्तृक एकवचन	स्त्रीकर्तृक बहुवचन
उ.पु.	मैंदेखाजाता	हमदेखेजाते	मैंदेखीजाती	हमदेखीजातीं
म.पु.	तूदेखाजाता	तुमदेखेजाते	तूदेखीजाती	तुमदेखीजाती
अ.पु.	वहदेखाजाता	वेदेखेजाते	वहदेखीजाती	वेदेखीजातीं

अपूर्ण अनद्यतन

उ.पु.	मैंदेखागयाहोता	हमदेखेगयेहोते	मैंदेखीगयीहोती	हमदेखीगयीहोतीं
म.पु.	तूदेखागयाहोता	तुमदेखेगयेहोते	तूदेखीगयीहोती	तुमदेखीगयीहोती
अ.पु.	वहदेखागयाहोता	वेदेखेगयेहोते	वहदेखीगयीहोती	वेदेखीगयीहोतीं

सन्दिग्ध

उ.पु.	मैंदेखागयाहूंगा	हमदेखेगयेहोंगे	मैंदेखीगईहूंगी	हमदेखीगईहोंगी
म.पु.	तूदेखागयाहोगा	तुमदेखेगयेहोगे	तूदेखीगईहोगी	तुमदेखीगईहोगी
अ.पु.	वहदेखागयाहोगा	वेदेखेगयेहोंगे	वहदेखीगईहोगी	वेदेखीगईहोगी

सन्दिग्ध निरन्तर

उ.पु.	मैंदेखाजाताहूंगा	हमदेखेजातेहोंगे	मैंदेखीजातीहूंगी	हमदेखीजातीहोंगी
म.पु.	तूदेखाजाताहोगा	तुमदेखेजातेहोगे	तूदेखीजातीहोगी	तुमदेखीजातीहोगी
अ.पु.	वहदेखाजाताहोगा	वेदेखेजातेहोंगे	वहदेखीजातीहोगी	वेदेखीजातीहोंगी

भविष्यत्काल

अनिश्चयात्मक

उ.पु.	मैंदेखाजाऊं	हमदेखेजावें	मैंदेखीजाऊं	हमदेखीजावें
म.पु.	तूदेखाजावेवाजाय	तुमदेखेजाओ	तूदेखीजावेवाजाय	तुमदेखीजाओ
अ.पु.	वहदेखाजावे(वा)जाय	वेदेखेजावें(वा)जाय	वहदेखीजावे(वा)जाय	वेदेखीजावें(वा)जाय

निश्चयात्मक

उ.पु.	मैंदेखाजाऊंगा	हमदेखेजावेंगे	मैंदेखीजाऊंगी	हमदेखीजावेंगी
म.पु.	तूदेखाजावेगा (वा)जायगा	तुमदेखेजाओगे	तूदेखीजावेगी (वा)जायगी	तुमदेखीजाओगी
अ.पु.	वहदेखाजावेगा वाजायगा	वेदेखेजावेंगे वा जायगे	वहदेखीजावेगी वाजायगी	वेदेखीजावेंगी वाजायगी

अनुज्ञा
नित्य

	एकवचन	बहुवचन
पुं॰ कर्तृक	तू देखा जा	तुम देखे जाओ
स्त्री॰ कर्तृक	तू देखी जा	तुम देखी जाओ

प्रेरणार्थक धातु "लिखवाना"
कर्तृवाच्य
वर्तमानकाल

	पुंलिङ्ग कर्तृक एकवचन	पुंलिङ्ग कर्तृक बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग कर्तृक एकवचन	स्त्रीलिङ्ग कर्तृक बहुवचन
उ॰ पु॰	मैं लिखवाता हूं	हम लिखवाते हैं	मैं लिखवाती हूं	हम लिखवाती हैं
म॰ पु॰	तू लिखवाता है	तुम लिखवाते हो	तू लिखवाती है	तुम लिखवाती हो
अ॰ पु॰	वह लिखवाता है	वे लिखवाते हैं	वह लिखवाती है	वे लिखवाती हैं

भूतकाल
अद्यतन

	पुंलिङ्ग कर्मक		स्त्रीलिङ्ग कर्मक	
उ॰ पु॰	मैंने लिखवाया	हमने लिखवाया	मैंने लिखवायी	हमने लिखवायी
म॰ पु॰	तूने लिखवाया	तुमने लिखवाया	तूने लिखवायी	तुमने लिखवायी
अ॰ पु॰	उसने लिखवाया	उन्होंने लिखवाया	उसने लिखवायी	उन्होंने लिखवायी

अनद्यतन

उ॰ पु॰	मैंने लिखवाया है	हमने लिखवाया है	मैंने लिखवायी है	हमने लिखवायी है
म॰ पु॰	तूने लिखवाया है	तुमने लिखवाया है	तूने लिखवायी है	तुमने लिखवायी है
अ॰ पु॰	उसने लिखवाया है	उन्होंने लिखवाया है	उसने लिखवायी है	उन्होंने लिखवायी है

परोक्ष

	पुंलिङ्ग·कर्म्मक एकवचन	पुंलिङ्ग·कर्म्मक बहुवचन	स्त्रीलिङ्ग·कर्म्मक एकवचन	स्त्रीलिङ्ग·कर्म्मक बहुवचन
उ·पु·	मैंनेलिखवायाथा	हमनेलिखवायाथा	मैंनेलिखवायीथी	हमनेलिखवायीथी
म·पु·	तूनेलिखवायाथा	तुमनेलिखवायाथा	तूनेलिखवायीथी	तुमनेलिखवायीथी
अ·पु·	उसनेलिखवायाथा	उन्होंनेलिखवायाथा	उसनेलिखवायीथी	उन्होंनेलिखवायीथी

निरन्तर

	पुंलिङ्ग·कर्त्तृक		स्त्रीलिङ्ग·कर्त्तृक	
उ·पु·	मैंलिखवाताथा	हमलिखवातेथे	मैंलिखवातीथी	हमलिखवातीथीं
म·पु·	तूलिखवाताथा	तुमलिखवातेथे	तूलिखवातीथी	तुमलिखवातीथीं
अ·पु·	वहलिखवाताथा	वेलिखवातेथे	वहलिखवातीथी	वेलिखवातीथीं

अपूर्ण अद्यतन

उ·पु·	मैंलिखवाता	हमलिखवाते	मैंलिखवाती	हमलिखवातीं
म·पु·	तूलिखवाता	तुमलिखवाते	तूलिखवाती	तुमलिखवातीं
अ·पु·	वहलिखवाता	वेलिखवाते	वहलिखवाती	वेलिखवातीं

अपूर्ण अनद्यतन

	पुं·कर्म्मक		स्त्री·कर्म्मक	
उ·पु·	मैंनेलिखवायाहोता	हमनेलिखवायाहोता	मैंनेलिखवायीहोती	हमनेलिखवायीहोती
म·पु·	तूनेलिखवायाहोता	तुमनेलिखवायाहोता	तूनेलिखवायीहोती	तुमनेलिखवायीहोती
अ·पु·	उसनेलिखवायाहोता	उन्होंनेलिखवायाहोता	उसनेलिखवायीहोती	उन्होंनेलिखवायीहोती

सन्दिग्ध

उ·पु·	मैंनेलिखवायाहोगा	हमनेलिखवायाहोगा	मैंनेलिखवायीहोगी	हमनेलिखवायीहोगी
म·पु·	तूनेलिखवायाहोगा	तुमनेलिखवायाहोगा	तूनेलिखवायीहोगी	तुमनेलिखवायीहोगी
अ·पु·	उसनेलिखवायाहोगा	उन्होंनेलिखवायाहोगा	उसनेलिखवायीहोगी	उन्होंनेलिखवायीहोगी

सन्दिग्धनिरन्तर

	पुं·कर्तृक एकवचन	पुं·कर्तृक बहुवचन	स्त्रीकर्तृक एकवचन	स्त्रीकर्तृक बहुवचन
उ·पु·	मैलिखवाताहूंगा	हमलिखवातेहोंगे	मैलिखवातीहूंगी	हमलिखवातीहोंगी
म·पु·	तूलिखवाताहोगा	तुमलिखवातेहोगे	तूलिखवातीहोगी	तुमलिखवातीहोगी
अ·पु·	वहलिखवाताहोगा	वेलिखवातेहोंगे	वहलिखवातीहोगी	वेलिखवातीहोंगी

भविष्यत्काल

अनिश्चयात्मक

उभयलिङ्ग·कर्तृक

उ·पु·	मैलिखवाऊं	हमलिखवावें
म·पु·	तूलिखवावे	तुमलिखवावो
अ·पु·	वहलिखवावे	वेलिखवावें

निश्चयात्मक

	पुं·कर्तृक		स्त्रीकर्तृक	
उ·पु·	मैलिखवाऊंगा	हमलिखवावेंगे	मैलिखवाऊंगी	हमलिखवावेंगी
म·पु·	तूलिखवावेगा	तुमलिखवावोगे	तूलिखवावेगी	तुमलिखवावोगी
अ·पु·	वहलिखवावेगा	वेलिखवावेंगे	वहलिखवावेगी	वेलिखवावेंगी

अनुज्ञा

त्वरित		विलम्बित	
उभयलिङ्ग·		उभयलिङ्ग·	
तूलिखवा	तुमलिखवावो	तूलिखवाना	तुमलिखवाना

कर्म्मवाच्य

मैलिखवायाजाताहूं इत्यादि

निदर्शन

सकर्म्मक अकारान्त धातुओंके रूप लिखना धातुकी न्याई होतेहैं। "करना" धातुमें केवल इतना विशेषहै कि ने प्रत्यय के परे और कर्म्मवाच्यमें करा और किया ये दोनो रूप, विशेषतः शेषोक्त रूप पुंलिङ्ग में अधिकव्यवहृतहोताहै; और स्त्रीलिङ्ग में की होताहै यथा मैंनेकिया, कियाहै, कियाथा, कियाहोता, कियाहोगा, कियाजाताहूं, कीजातीहै, इत्यादि

सकर्म्मक और सब धातुओंके रूप लिखवाना धातुकीन्याई होतेहैं यथा खाताहै, मैंने खाया, पीताहै, पीवेगा, छूताहै, खेताहै, खेताहै। या के स्थानमें विकल्पकरके आ भी होताहै यथा पीआ छूआ खेआ खेआ

सकर्म्मक अकारान्त — रखना धातु ना प्रत्यय और एकवचन तरित अनुज्ञा के सिवा और सब विभक्तियोंके आगे "रक्ख" रूप धारण करताहै यथा मैं रखताहूं, मैंने रक्खा, मैं रखताथा, तू रख इत्यादि

सकर्म्मक एकारान्त — लेना देना धातुओंके रूपोंमें भी किसी २ कालमें कुछ विशेषहै यथा

	पुंकर्त्तृक	स्त्री कर्त्तृक	
भूत अद्यतन	मैंनेलिया	मैंनेली	इत्यादि
	मैंनेदिया	मैंने दी	इत्यादि
अनद्यतन	मैंने लियाहै	मैंने लीहै	इत्यादि
परोक्ष	मैंनेलियाथा	मैंने लीथी	इत्यादि
अपूर्णअनद्यतन	मैंनेलियाहोता	मैंने लीहोती	इत्यादि
सन्दिग्ध	मैंनेलियाहोगा	मैंनेलीहोगी	इत्यादि

भविष्यत् अनिश्चयात्मक (मैं लूं; तू ले (वा) लेवे; वह ले (वा) लेवे; हम लें (वा) लेवें; तुम लो; वे लें (वा) लेवें

भविष्यत् निश्चयात्मक मैलूंगा हमलेंगे(वा) लेवेंगे
तूलेगा तुमलोगे
वहलेगा(वा)लेवेगा वे लेंगे(वा) लेवेंगे

त्वरित अनुज्ञा बहुवचन तुमलो

कर्मवाच्य मैलियाजाताहूं इत्यादि

अकारान्त अकर्मधातु "चलना"

वर्तमानकाल मैचलताहूं तूचलताहै हमचलतेहैं
मैचलतीहूं इत्यादि सकर्मकवत्

भूतअद्यतन						
मै	चला	हम	चले	मै	चली	हमचलीं
तू		तुम		तू		तुमचलीं
वह		वे		वह		वे चलीं

भूतअनद्यतन मैचलाहूं हमचलेहैं मैचलीहूं हमचलीहैं
तूचलाहै तुमचलेहो तूचलीहै तुमचलीहो
वहचलाहै वेचलेहैं वहचलीहै वेचलीहैं

भूतपरोक्ष						
मै	चलाथा	हम	चलेथे	मै	चलीथी	हमचलीथीं
तू		तुम		तू		तुमचलीथीं
वह		वे		वह		वे चलीथीं

भूतनिरन्तर मै चलाथा इत्यादि सकर्मकवत्
अपूर्णअद्यतन मै चलता इत्यादि सकर्मकवत्

अपूर्णअनद्यतन						
मै	चलाहोता	हम	चलेहोते	मै	चलीहोती	हमचलीहोतीं
तू		तुम		तू		तुमचलीहोतीं
वह		वे		वह		वेचलीहोतीं

सन्दिग्ध मैचलाहूंगा हमचलेहोंगे मैचलीहूंगी हमचलीहोंगी
तूचलाहोगा तुमचलेहोगे तूचलीहोगी तुमचलीहोगी
वहचलाहोगा वेचलेहोंगे वहचलीहोगी वेचलीहोंगी

सन्दिग्धनिरन्तर मै चलताहूंगा इत्यादि सकर्मकवत्

भविष्यत्काल मै चलूं, तू चलेगा, तू चल इत्यादि सकर्मकवत्

आकारान्त अकर्मक धातु "नहाना"

वर्तमान मै नहाताहूं वह नहातीहै इत्यादि सकर्मकवत्

भूतअद्यतन

मै, तू, वह	नहाया	हम, तुम, वे	नहाये	मै, तू, वह	नहायी
					हमनहायीं, तुम नहायी, वे नहायीं

भूतअनद्यतन मै नहायाहूं हम नहायेहैं मैनहायीहूं हमनहायीहैं
तू नहायाहै तुमनहायेहो तूनहायीहै तुमनहायीहो
वह नहायाहै वे नहायेहैं वहनहायीहै वेनहायीहैं

भूतपरोक्ष

मै, तू, वह	नहायाथा	हम, तुम, वे	नहायेथे	मै, तू, वह	नहायीथी
					हमनहायीथीं, तुमनहायीथी, वेनहायीथीं

भूतनिरन्तर मै नहाताथा इत्यादि सकर्मकवत्

अपूर्णअद्यतन मै नहाता तथा

अपूर्णअनद्यतन

मै, तू, वह	नहायाहोता	हम, तुम, वे	नहायेहोते	मै, तू, वह	नहायीहोती
					हमनहायीहोतीं, नहायीहोतीं तुम, वेनहायीहोतीं

सन्दिग्ध मैनहायाहूंगा हमनहायेहोंगे मैनहायीहूंगी हमनहायीहोंगी
तूनहायाहोगा तुमनहायेहोगे तूनहायीहोगी तुमनहायीहोगी
वहनहायाहोगा वेनहायेहोंगे वहनहायीहोगी वेनहायीहोंगी

सन्दिग्धनिरन्तर मै नहाताहूंगा इत्यादि सकर्मकवत्

भविष्यत्काल मै नहाऊं, वह नहावेगा, तू नहा इत्यादि, सकर्मकवत्

निदर्शन

लाना धातु सकर्म्मकहै परन्तु रूप इसके अकर्म्मक की न्याई होतेहैं। अकारान्त सब धातुओंके रूप चलना धातकी न्याई और आकारान्त के नहानाकी न्याई होतेहैं; यथा, रहताहै पछताताहै; ईकारान्त प्रभृति और सब धातुओंके रूपभी आकारान्तकी न्याईहोतेहैं और या के स्थानमे विकल्प करके आ होताहै यथा वह जातीहै तू जीया (वा) जीआ चरहूया (वा) चूआ वह रोताहै, इत्यादि

जानाधातु ता प्रत्यय और भविष्यत्काल के सिवा और सब विभक्तिओंमे गया रूप धारण करताहै यथा मै जाताहूं, मैगया, वहजाता, मैजाऊंगा, इत्यादि। छींकना खांसना प्रभृति धातु यद्यपि अकर्म्मकहैं तथापि रूप इनके सकर्म्मक की न्याई होतेहैं यथा मैने छींकाहै

अकर्म्मक होना धातुके रूप विशेषहैं यथा

	पुंकर्तृक एकवचन	पुंकर्तृक बहुवचने	स्त्रीकर्तृक एकवचन	स्त्रीकर्तृक बहुवचने
वर्त्तमान	मैहोताहूं	हमहोतेहैं	मैहोतीहूं	हमहोतीहैं
	तूहोताहै	तुमहोतेहो	तूहोतीहै	तुमहोतीहो
	वहहोताहै	वेहोतेहैं	वहहोतीहै	वेहोतीहैं
भूतअद्यतन	मै } हुआ	हम } हुए	मै } हुई	हम हुईं
	तू } हुआ	तुम } हुए	तू } हुई	तुम हुईं
	वह } हुआ	वे } हुए	वह } हुई	वे हुईं
अनद्यतन	मैहुआहूं	हमहुएहैं	मैहुईहूं	हमहुईंहैं
	तूहुआहै	तुमहुएहो	तूहुईहै	तुमहुईंहो
	वहहुआहै	वेहुएहैं	वहहुईहै	वेहुईंहैं
परोक्ष	मै } हुआथा	हम } हुएथे	मै } हुईथी	हम हुईंथी
	तू } हुआथा	तुम } हुएथे	तू } हुईथी	तुम हुईंथी
	वह } हुआथा	वे } हुएथे	वह } हुईथी	वे हुईंथीं

निरन्तर	मै, तू, वह होता था	हम, तुम, वे होते थे	मै, तू, वह होती थी	हम होती थीं
				तुम होती थी
				वे होती थीं
अपूर्णअद्यतन	मै, तू, वह होता	हम, तुम, वे होते	मै, तू, वह होती	हम होतीं
				तुमहोती
				वे होतीं
अपूर्णअनद्यतन	मै, तू, वह हुआहोता	हम, तुम, वे हुएहोते	मै, तू, वह हुईहोती	हम हुईहोतीं
				तुम हुई होती
				वे हुई होतीं
सन्दिग्ध	मै हुआहूंगा	हमहुएहोंगे	मैहुईहूंगी	हम हुई होंगी
	तू हुआहोगा	तुमहुएहोगे	तूहुईहोगी	तुम हुई होगी
	वह हुआहोगा	वे हुए होंगे	वहहुईहोगी	वे हुई होंगी
सन्दिग्धनिरन्तर	मै होताहूंगा	हमहोतेहोंगे	मैहोतीहूंगी	हमहोतीहोंगी
	तूहोताहोगा	तुमहोतेहोगे	तूहोतीहोगी	तुमहोतीहोगी
	वहहोताहोगा	वेहोतेहोंगे	वहहोतीहोगी	वेहोतीहोंगी

भविष्यत्‌अनिश्चयात्मक मैहोऊं तूहोवे वहहोवे हमहोवें तुमहोवो वेहोवें

निश्चयात्मक	मै हूंगा	हम होंगे	मैहूंगी	हमहोंगी
	तू होगा	तुमहोगे	तूहोगी	तुमहोगी
	वह होगा	वे होंगे	वहहोगी	वे होंगी
अनुज्ञा	तूहो	तुमहोगे	तूहोना	तुमहोना

निदर्शन

वर्तमान कालमे होता शब्द लुप्त होकर इसप्रकार रूप भी होतेहैं यथा मैहूं तूहै इत्यादि

भूत अद्यतनमे हुआ, हुए, हुई, हुईं के स्थानमे यथा क्रम था थे थी थीं आदेश होकर इसप्रकार रूप भी होतेहैं यथा मैथा वेथे इत्यादि। भूत निश्चयात्मक के रूप मे होऊंगा तूहोवेगा प्रभृति भी होतेहैं जो अनिश्चयात्मक के आगे गा गे गी लगाने से सिद्ध होतेहैं ॥

द्वित्वधातुकक्रिया

बहुधाक्रिया दो धातुओं के योग से निष्पन्न होतीहै और द्वितीय धातु प्रायशः करना, रहना, सकना, चुकना, जाना, डालना, लेना, देना, लगना प्रभृति होतेहैं ।

करनाधातु परे होने से पूर्व्वधातु भूत अद्यतन की न्याई रूप धारण करता है यथा मे लिखाकरताहूं, हमलिखाकरते हैं, वह लिखाकरतीहै, मे लिखाकिया मेलिखाकरी, मैलिखाकरताथा तूलिखाकरता. वह लिखा करताहोगा, मैलिखाकरूं, तूलिखाकर, तुमलिखाकरना, मेलिखाजाया - करताहूं, मेलिखवायाकरताहूं, तूलिखवायाजायाकरताहै, इत्यादि ।

करनाधातु परे होनेसे जानाधातुके स्थानमे "गया" नहिं होता "जाया" होताहै, यथा मेजाया करताहूं इत्यादि ।

द्वितीयधातु "करना" होनेमे भूतअनद्यतन, परोक्ष, अपूर्णअनद्यतन और सन्दिग्ध ये चर कालों की, और कर्म्मवाच्य, क्रिया नहिं होती

करनाधातु परे होनेसे क्रियाका पौनः पुन्य अर्थ होताहै यथा मेपीआ करताहूं अर्थात् पुनः पुनः पीताहूं ॥

रहनाधातु परे होनेसे पूर्व्वधातु अपूर्ण अद्यतनकीन्याई रूपधारण करता है यथा मैलिखता रहताहूं, तुमलिखते रहते हो, वहलिखती रहतीहै, मै लिखता रहा, तूलिखतीरही, हमलिखते रहे हैं, वेलिखते रहे थे, वहलिखता रहताथा, मैलिखता रहता, वहलिखतारहाहोता तुमलिखते रहेहोगे, वेलिखते रहते होंगे मैलिखतारहूं, तूलिखतारह, तुमलिखते रहना, मेलिखाजातारहताहूं, तूलिखवाता रहताहै, तूलिखवाया जातारहताहै, इत्यादि ।

रहनाधातु परे होने से क्रियाका नैरन्तर्य्य अर्थ होताहै यथा मे लिखता रहताहूं अर्थात् निरन्तर लिखा करताहूं ॥

सकना प्रभृति धातु परे होनेसे पूर्व्वधातुका रूप विकृत नहिं होता य-

या मे लिखसकताहूं, वहलिखसकीथी, मेलिख चुकूंगा, इत्यादि तुमलिखजासकतेहो, वहलिखवा सकताहै। मेलिखवाना चुका, तुमलिखवाचुके सकनाधातु परेहोने अनुज्ञा के रूप नहि होते। सकना और चुकना धातुके पूर्व्व अन्यधातु सर्व्वदा होताहै। जाना पाक छिन्धातुकक्रि या झटिति और समग्र भावकी बोधक होतीहै यथा मेलिखजाताहूं तूलिखगई है, हमलिखवागयेथे।

सकना चुकना धातुसे परे कर्म्मवाच्यके रूप नहिं होते, और कर्म्मवाच्यसे परे जानाधातु नहि लगता। जाना धातु परे होनेसे चल धातुको चला आदेश होताहै यथा मे चलाजाताथा।

कर्म्मवाच्यसे परे डालना लेना देना प्रभृति धातु नहि होते, मैलिखडालताहूं, तूलिखवालेना, वहलिखवालियागयाहै, मे उठा देताहूं, वह उठवादेताहै तूउठवादियाजाताहै इत्यादि

चाहनाधातु परे होनेसे पूर्व्वधातु ना प्रत्ययान्त रहताहै। यथा मे करना चाहताहूं, खानाचाहताहूं इत्यादि।

त्वरित भविष्यत् अर्थमे पूर्व्वधातुका भूत अद्यतनकी न्याई भी रूप होताहै यथा मे कियाचाहताहूं, वहआयाचाहताहै, (अर्थात् शीघ्र आवेगा)

क्रियाविशेषण (१)

वर्त्तमानकालिक

कर्तृवाच्य

मे	लिखताहुआ, (वा)	लिखतीहुई (वा)	हम	लिखतेहुए (वा)	लिखतीहुई (वा)
तू	लिखता लिखता	लिखती २	तुम	लिखते २	लिखतीलिखती
वह	सोताहुआ (वा)	सोतीहुई	वे	सोतेहुए	सोतीहुई
	सोता २	सोती २		सोते २	सोती २
	लिखलेताहुआ	लिखलेतीहुई		लिखलेतेहुए	लिखलेतीहुई
	लिखवालेताहुआ (वा)	लिखवालेतीहुई		लिखवालेतेहुए	लिखवालेतीहुई

(१) वर्त्तमान कालिक क्रिया विशेषण नामका भी विशेषण होताहै यथा रामनेजातीहुई गौ को देखा

कर्म्मवाच्य

मुझको / तुझको / उसको	लिखाजाताहुआ / खायाजाताहुआ / लिखलियाजाताहुआ	लिखीजातीहुई / खायीजातीहुई / लिखलीजातीहुई	हमको / तुमको / उन्को	लिखेजाते हुए / लिखलिये जातेहुए — लिखी जातीहुई / लिखली जातीहुई

(वा)

पूर्व्वकालिक

मै हम / तू तुम / वह वे	लिखकर, लिखके,	लिखाजाकर, लिखाजाके
	लिखलिखकर लिखलिखके	लिखवाजाकर, लिखवाजाके
	लिखवाकर लिखवाके	लिखवायाजाकर लिखलियाजाके
	लिखवाइकर लिखवाइके	इत्यादि
	लिखलेकर लिखलेके इत्यादि	

क्रियाद्योतकधातुसंज्ञा

लिखना लिखाजाना लिखवाना लिखवायाजाना लिखलेना प्रभृति

इन्के साथ होना पड़ना धातु का योग होकर इसप्रकार रूपहोतेहैं यथा

मुझे हमे / तुझे तुम्हे / उसे उन्को	लिखनाहोताहै, लिखनाहै, लिखना हुआ
	लिखनाथा, लिखना हुआहै, हुआथा, होगा इत्यादि
	लिखनापड़ताहै, लिखनापड़ा, लिखना पड़ेगा, इत्यादि

निदर्शन

मुझे लिखनाहै जानाहै प्रभृति मे यद्यपि वर्त्तमानकालिक प्रत्ययहैं परन्तु अर्थ इन्का भविष्यत्कालिकहै यथा लिखूंगा इत्यादि

कर्तृवाचक धातु संज्ञा

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
लिखनेवाला	लिखनेवाली
सोने वाला	सोने वाली

कर्म्मवाचक धातु संज्ञा

लिखाहुआ	लिखीहुई
सोया हुआ	सोयीहुई

भाववाचक धातु संज्ञा

कहीं धातुचिन्ह ना के लोपसे होताहै यथा मार, पीट, चाह

कहीं ———— ना के स्वरलोप होनेसे होताहै यथा लेन, देन, खान, पान,

कहीं ———— ना के स्थानमे आव होनेसे यथा चढ़ाव, बढ़ाव, फिराव, घुमाव,

कहीं धातु के अन्त हल के साथ आके योग होनेसे यथा छेरा, फेरा,

कहीं ———— ई के ———— हंसी

कहीं धातुके उपधा स्वरके गुण होनेसे यथा लेख

कहीं ———— वृद्धि होनेसे यथा चाल, टाल,

कहीं ———— का ह्रस्व होकर नाके स्थानमे "आवा" प्रत्यय होनेसे नाम भी बनताहै यथा दिखावा, चढ़ावा इत्यादि

क्रियासम्बन्धीय नियम

१ नेप्रत्यय परे होनेसे शब्दका अन्त वर्ण ऐसा परिवर्त्त होजाताहै जैसाकि विभक्ति परे होनेसे होताहै। यथा बालकने, बालकोंने, लड़केने, लड़कोंने, माताने, माताओंने, लड़कीने, लड़कियोंने इत्यादि ।

२ अकर्म्मक धातु प्रायशः निम्नलिखित नियमोके अनुसार सकर्म्मक बनतेहैं। कहीं उपधा का स्वर दीर्घ होजाताहै, कहीं गुण होजाताहै कहीं अन्त अकार दीर्घ होजाताहै और उपधा का दीर्घस्वर ह्रस्व होजाताहै, परन्तु उपधा ऐ औ का ह्रस्व नहिं होता। धातुके अन्तमे आकार ईकार हो तो ह्रस्व होकर उन्के पीछे ला लगताहै । और ऊकार हो तो ह्रस्व होकर उस्के पीछे वा लगताहै यथा

	अकर्म्मक	सकर्म्मक
अकारोपध	मरना	मारना
	चलना	चलाना
आकारोपध	हारना	हराना
आकारान्त	नहाना	नहलाना

	अकर्म्मक	सकर्म्मक
इकारोपध	गिरना फिरना, चिरना	गिराना फेरना चीरना
ईकारोपध	वीतना	विताना
ईकारान्त	जीना	जिलाना
उकारोपध	घुसना रुकना	घुसाना रोकना
ऊकारोपध	भूलना	भुलाना
ऊकारान्त	चूना	चुवाना
एकारोपध	खेलना	खिलाना
ऐकारोपध	वैठना	वैठाना
ओकारोपध	वोलना	वुलाना
औकारोपध	दौड़ना	दौड़ाना
ओकारान्त	रोना	रुलाना

३ सकर्म्मक धातु प्रायशः एक कर्म्मक होते हैं; कोई २ द्विकर्म्मक भी होतेहैं यथा केशवने गोविन्द को रुपया दिया

कोई २ एक कर्म्मक धातु रूपान्तरापन्न होकर द्विकर्म्मक वन जाते हैं यथा (एककर्म्मक) खाना (द्विकर्म्मक) खिलाना; तथा पीना, पिलाना, देखना, दिखलाना, सीखना, सिखलाना; सीना, सिलाना सूंघना, सुंघाना, देना, दिलाना,

४ कोई २ धातु अकर्म्मक और सकर्म्मक दोनो होतेहैं यथा (अकर्म्मक) मैखेला (सकर्म्मक) मैंने अच्छाखेल खेला; मैं रोया, मै उसको रोया इत्यादि

५ सकर्म्मक धातु को प्रेरणार्थक वनाना हो तो धातु के पीछे वा लगताहै और पूर्व्व दीर्घस्वर ह्रस्व होजाताहै। यथा करना, करवाना; रंगना, रंगवाना; मारना, मरवाना; खाना, खवाना; खिलाना, खिलवाना, लिखना लिखवाना; चीरना, चिरवाना; सीना, सिवाना; कूटना, कुटवाना, मेटना मिटवाना, खेंचना, खिंचवाना; मोड़ना, मुड़वाना; सौंपना, सौंपवाना;

अथ अव्यय

क्रियाविशेषण

प्रथम, पहिले, पूर्व्व, पश्चात्, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, तले, इधर, उधर, जिधर, किधर, बीच, यहां, वहां, जहां, तहां, कहां, कहीं, आर, बाहर, भीतर, क्या, अब, जब, आज, कल, परसों, अभी, कभी, अधुना, केवल, मात्र, ज्यों त्यों करके, शीघ्र, झट, त्वरित, सहसा, अलम्, स्वस्ति, परस्पर, मिथः, मुहुः, बारंबार, प्रायशः, प्रायः, एकधा, द्विधा, बहुधा, इति, आदि, पृथक्, स्वयं, क्यों, क्योंकर, किसलिये, किसनिमित्त, न, नहि, मत(१), शनैः, युगपत्, वृथा, निकट, दूर, इत्यादि,

पुंलिङ्ग। सीधा, टेढ़ा, तिरछा, ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा, कैसा,

स्त्रीलिङ्ग। सीधी, टेढ़ी, तिरछी, ऐसी, वैसी, जैसी, तैसी, कैसी,

अनेकादि पूर्व्वक दिन, समय, प्रकार, शब्द क्रिया विशेषण हैं यथा

अनेक प्रकार, बहुप्रकार, किसप्रकार, एकप्रकार, इसप्रकार, उसप्रकार, तिसप्रकार, जिसप्रकार,

कहां, कब, क्योंकर का उत्तर प्रायशः क्रियाविशेषण होता है

पार्श्ववर्त्ती शब्द

तक, लग, पर्य्यन्त, अवधि, कर्त्तृक, कारणक, सहित, सङ्ग, साथ, ऊपर, नीचे, तले, पास, निकट, समीप, बीच, मध्य, अन्तर, बाहर, भीतर, बिना, व्यतिरेक, व्यतीत, प्रति, तुल्य, समान, सम, सदृश, आगे, पीछे, पश्चात्, पहिले, परे, ठिकाने, सन्मुख, न्याई, वत् (प्रत्यय) कारण, हेतु, इत्यादि

उक्त शब्द प्रथमा, पञ्चम्यन्त और षष्ठ्यन्त शब्दों के पीछे प्रायशः व्यवहृत होते हैं

भी हि ये सब कारकों के पीछे लगते हैं

(१) मत शब्द अवज्ञादि विशेषण होता है यथा मतजा

योजकशब्द

वाक्य के अथवा वाक्यांशके योजनामे व्यवहृत होतेहैं इसनिमित्त इनका नाम योजकहै

ये चार प्रकारके होतेहैं यथा आरम्भक, संयोजक, वियोजक, अपेक्षाजनक,

आरम्भक । अथ, प्रथमतः पहिले, दूसरा,

संयोजक । और, एवं, तथा, यथा, तो, तौ, मानो, इसप्रकार, भी, तथापि, तौभी, तत्रापि एतदर्थ, इसकारण, इसनिमित्त, अतएव, इसलिये, इससे, इसीसे, कदापि, कदाचित, वरं, वरञ्च, क्योंकि, तदनन्तर, अपिच, अथच, अपर, वस्तुतः फलतः सुतरां, पुनः पुनर्व्वार, फेर, कि, हां, यहांतक कि, अर्थात

वियोजक । परन्तु, किन्तु, पर, वा, अथवा, किम्वा, नहिंतो, नतवा, यद्यपि

अपेक्षाजनक । यथा, तथा, जब तक, जो तो, जभी तभी, जिसलिये तिसलिये, जिससे तिससे, यद्यपि तथापि, क्या क्या, इत्यादि

उच्छ्वसितभावद्योतक शब्द

ये पांच प्रकारके होतेहैं यथा हर्ष, खेद, आश्चर्य्य, गर्हा, सम्बोधन,

हर्ष आहा ! ओहो !

खेद हाय ! हा ! मैक्या करूं । सर्व्वनाश !

आश्चर्य्य अः हः ! वाह ! वाह वाह ! क्या कहना ! धन्य !

गर्हा धिक !

सम्बोधन हे ! अहो ! भो ! होत ! हो ! अरे ! रे ! अरी ! री ! वे ! अवे ! जी ! अजी ! इत्यादि

नामके विशेषण

ईषत, नाना, यावत, तावत, जितना, तितना, उतना,
कुछ जितनी, तितनी, उतनी,

इतिप्रथमभागः

भागदूसरा

संस्कृत शब्दोंका वर्णन जो हिन्दीभाषामे व्यवहृत होतेहैं

संस्कृत शब्द त्रिविध होतेहैं यौगिक, योगरूढ़ि, रूढ़ि

यौगिक वेशब्दहैं जिन्का अर्थ प्रकृति प्रत्यय से निष्पन्न हो यथा पाचक मनोहर इत्यादि

योगरूढ़ि वे हैं जिन्के प्रकृति प्रत्यय के अनुसार अर्थ करनेसे अनेक वस्तु उस अर्थके समझे जावें उन्मे से किसी एक वस्तुके निमित्तहि वह शब्द प्रयुक्त हो यथा पङ्कज,

रूढ़ि वे शब्दहैं जिन्का प्रकृति[(१)] प्रत्यय से अर्थ नहोसके यथा अश्व, घट, पट, इत्यादि,

अतएव योगरूढ़ि और रूढ़ि शब्दों के अर्थ कोशसेहि विदित होसकते-हैं। परन्तु योगरूढ़ि शब्दोंके प्रकृति प्रत्यय निष्पन्न अर्थ जाननेसे भी उन्के प्रकृत अर्थ की अवगति मे सहायता होतीहै। और यौगिक शब्दोंके अर्थावगतिके निमित्त प्रकृति प्रत्ययोंके अर्थ और नियमों का ज्ञानहि कारणहै। इसनिमित्त ये नियम प्रदर्शित होतेहैं।

संस्कृत मे दो वर्ण परस्पर सन्निहित होनेसे प्रायशः मिलजातेहैं और उस मेलको सन्धि कहतेहैं। स्वर के साथ स्वरकी जो सन्धि होतीहै उसको स्वर सन्धि कहतेहैं। व्यञ्जनके साथ व्यञ्जन की अथवा स्वरकी जो सन्धि होतीहै उसे व्यञ्जन सन्धि कहतेहैं। विसर्गके साथ स्वर वा व्यञ्जनकी जो सन्धि होतीहै उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

स्वरसन्धिः

१ एकजातीय दो स्वर सन्निहित होनेसे उभयमिलकर तज्जातीय दीर्घ स्वर होजाताहै यथा जल + अञ्जलि = जलाञ्जलि (यहां लके साथका अ और अञ्जलिका प्रथम अ दोनो मिलकर आ होगया और

(१) प्रकृति उसेकहतेहैं जिसके परे प्रत्यय आवे यथा { प्रकृति + प्रत्यय = शब्द
{ कृधातु + तव्य = कर्त्तव्य

वह आ्‌ल मे मिलगया) जरा + आवली = जरावली, अति + इव = अतीव, प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा, विधु + उदय = विधूदय,

२ अवर्ण और इवर्ण मिलकर ए होजाताहै यथा नव + इन्दुः नवेन्दु, महा + इन्द्र = महेन्द्र, महा + ईश = महेश,

३ तथा अ उ मिलकर ओ होजाताहै यथा चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय, महा + उन्नति = महोन्नति,

४ तथा अ ऋ मिलकर अर् होजाताहै यथा देव + ऋषि = देवर्षि, महा + ऋषि = महर्षि,

५ तथा अ ए अथवा अ ऐ मिलकर ऐ होजाताहै यथा सदा + एव = सदैव, महा + ऐश्वर्य्य = महैश्वर्य्य,

६ तथा अ ओ अथवा अ औ मिलकर औ होजाताहै यथा नव + ओदन = नवौदन, महा + औषध = महौषध,

७ इ, उ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, इन्के स्थानमे य, व, र, अय, आय्, अव्, आव्, क्रमसे होताहै विजातीय स्वर परे होनेसे यथा अति + अन्त = अत्यन्त इति + आदि = इत्यादि, परि + आलोचना = पर्य्यालोचना, अनु + अय = अन्वय, अनु + एषणम् = अन्वेषणम्, । पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश। ने + अनम् = नयनम् । विनै + अकः = विनायकः । भो + अनम् = भवनम् । भौ + उकः = भावुकः ।

व्यञ्जनसन्धिः

१ पदान्त क् को ग ट् को ड् और प् को ब् होताहै स्वर वर्गका तृतीयवा चतुर्थ वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् न् म् परेहोनेसे यथा वाक् + ईश = वागीश, वाक् + दानम् = वाग्दानम्, वाक् + रोधः = वाग्रोधः; दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती, प्राक् + मुखः = प्राग्मुखः; अप + भक्षः = अब्भक्षः

२ पदान्त क् को ङ् और ट् को ण् भी होताहै न अथवा म परे होनेसे यथा दिक् + नागः = दिङ्नागः प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः; षट् + मासिक षण्मासिक

३ पदान्त क च ट त प से परे ह को यथा क्रम घ झ ढ ध भ भी होताहै यथा दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती; (वा) दिग्घस्ती

४ पदान्त क् ट् त् प् से परे श को छ भी होताहै यथा वाक् + श्लूर = वाक्छ्लूर, (वा) वाक्श्लूर; षट् + श्लूर = षट्छ्लूर (वा) षट्श्लूर

५ च् और ज् से परे न को ञ होताहै यथा याच् + ना = याच्ञा, यज् + नः = यज्ञः[1]

६ पदान्त त् को द् होताहै स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व, ह, न, म, परे होनेसे यथा जगत् + ईश = जगदीश, भवत् + दर्शन = भवद्दर्शन जगत् + नाथ = जगद्नाथ, भवत् + मत = भवद्मत,

७ तथा न् भी होताहै न म परे होनेसे यथा जगन्नाथ, भवन्मत,

८ त् और द् को च् होताहै च छ परे होनेसे, ज् होताहै ज झ परे होनेसे ट् होताहै ट ठ परे होनेसे, ड् होताहै ड ढ परे होनेसे और ल् होताहै ल परे होनेसे। यथा महत् + चक्र = महच्चक्र, एतद् + चन्द्रमण्डल = एतच्चन्द्रमण्डल। तद् + झनत्कार = तज्झनत्कार, तत् + शरीर = तच्छरीर, विपद् + जाल = विपज्जाल। तत् + टीका = तट्टीका, उत् + डीन = उड्डीन, उत् + लिखित = उल्लिखित,

९ अपदान्त न् को ङ् होताहै क, ख, ग, घ, परे होनेसे, ञ् होताहै च, छ, ज, झ, परे होनेसे, ण् होताहै ट, ठ, ड, ढ, परे होनेसे, म् होताहै प, फ, ब, भ, परे होनेसे, और अनुस्वार होताहै श, ष, स, ह, परे होनेसे यथा आशन् + कित = आशङ्कित, वान् + छित = वाञ्छित, मन् + डित = मण्डित, कन् + पित = कम्पित, मीमान् + सा = मीमांसा,

१० अपदान्त म् को अनुस्वार होताहै स परे होनेसे और न् होताहै त परे होनेसे यथा रम् + स्यमान् = रंस्यमान्, गम् + तव्य = गन्तव्य

११ पदान्त म् को अनुस्वार होताहै व्यञ्जन वर्ण परे होनेसे यथा सम् + वत्सर = संवत्सर,

(१) प्रत्यय का म भिन्न यथा चिन्मय

१२ पदान्त म् को उस वर्गका जो उससे परे हो पञ्चम वर्ण भी होताहै यथा सम् + कल्पः = सङ्कल्प, सञ्चित, शान्तनु, सम्पूर्ण,

१३ ष् से परे त् को ट् और थ् को ठ् होताहै; यथा आकृष् + त = आकृष्ट षष् + थ = षष्ठ

१४ पदान्त स् और र् को विसर्ग होताहै यथा पयस् + धर = पयोधर, प्रातर् + काल = प्रातःकाल,

१५ स्वर से परे छ को च्छ होताहै यथा परि + छद = परिच्छद, अव + छेद = अवच्छेद

विसर्गसन्धि

१ विसर्गको त, थ, परे होनेसे स; ट, ठ, परे होनेसे ष; और च छ परेहोनेसे श होताहै; यथा मनः + ताप = मनस्ताप, निः + टीक = निष्टीक निः + ष्ठीवन = निष्ठीवन, निः + चिन्त = निश्चिन्त, निः + छिद्र = निश्छिद्र, इत्यादि

२ अकारसे परे विसर्ग को उ, होताहै अ, और वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण और य, र, ल, व, ह, परे होनेसे, (परस्थित अकार का लोप होताहै) यथा मनः + अभीष्ट = (मनउ + अभीष्ट) = मनोऽभीष्ट, तेजः + ह्रासः तेजोह्रास, वयः + वृद्धि = वयोवृद्धि, यशः + लाभ = यशोलाभ, पयः + धर = पयोधर, अकुतः + भय = अकुतोभय, मनः + रम्य = मनोरम्य, मनः + हर = मनोहर

३ अकारसे परे विसर्ग का लोप होताहै अकार भिन्न स्वर परे होनेसे यथा यशः + आच्छादित = यश आच्छादित

४ इकारादि स्वर से परे विसर्ग को और अकार से परे रेफ जात विसर्गको र होताहै स्वर, वर्गका तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, वर्ण अथवा य ल व ह परे होनेसे यथा निः + अहङ्कार = निरहङ्कार, निः + गत = निर्गत, दुः + जय = दुर्जय, दुः + दशा = दुर्दशा, धनुः + धर = धनुर्धर, चतुः + मुख = चतुर्मुख, बहिः + योग = बहिर्योग, पुनः + अपि = पुनरपि, अन्तः + धान = अन्तर्धान

५ विसर्गस्थानीय रेफ का लोप होताहै र परे होनेसे और पूर्व स्वर को दीर्घ होताहै यथा निः + रोग = नीरोग, निः + रस = नीरस

६ अ आ से परे विसर्गको स् और इकारादिस्वर से परे विसर्ग को ष् होताहै क ख प फ परे होनेसे यथा भाः + कर = भास्कर, बहिः + कृत = बहिष्कृत, गीः + पति = गीष्पति, निः + फल = निष्फल, इत्यादि

णत्वविधान

१ ऋ, ॠ, र्, ष्, से परे न् को ण् होताहै यथा ऋण, कर्ण, उष्ण इत्यादि

२ स्वर कवर्ग पवर्ग य् व् ह और अनुस्वार का व्यवधान होनेसे भी न् को ण होताहै यथा करण, हरिण, तरुण, कोरण, अर्पण, प्रस्रवण, भ्रमण, बृंहण, इत्यादि

३ जो एक पदमे ऋ ॠ र् ष् हो और अन्य पदमे न होतो उसन् को ण् नहि होता यथा त्रि + नयन = त्रिनयन, दुर्नाम, वारिनिधि गिरिनन्दिनी परन्तु वह न स्त्रीलिङ्ग-विहित ई प्रत्यय युक्त होनेसे विकल्प करके ण् होताहै यथा विष पायिनी (वा) विषपायिणी

४ तवर्ग युक्त न् को ण् नहि होता यथा दर्शन प्रस्थान रचना इत्य

५ शरवण, इक्षुवण, शरवण, आम्रवण, खदिरवण, नारायण, पारायण, उत्तरायण, रामायण, चान्द्रायण, नारायण, अग्रणी, ग्रामणी, पूर्वाह्ण और गृहमाभिणी प्रभृति शब्दों मे न् को नित्य ण होताहै

षत्वविधान

१ इकारादि स्वर अथवा क र से परे स् को ष् होताहै यथा जिगीषा, प्रतिष्ठा, दिदृक्षा, मुमुक्षु, अनुचिकीर्षा इत्यादि

२ जो इकारादि स्वर अथवा क र एक पदमे हो और स् अन्य पद मे होतो उस स् को ष् नहि होता यथा गिरिसुता, मुनिसम; परन्तु पितृ ष्वसा, मातृष्वसा के स् को ष् होताहै

३ सात प्रत्यय के स् को ष् नहि होता यथा अग्निसात् वायुसात्

संस्कृतशब्द कृदन्त, तद्धितान्त अथवा समस्त होतेहैं अतएव यथा क्रम उन्का वर्णन कियाजाताहै ।

कृदन्तशब्द

कृत् प्रत्यय धातु से परे लगतेहैं और धातुओंके पूर्व्व बहुधा उप सर्ग लगतेहैं ।

उपसर्ग २० हैं यथा प्र, परा, अप, सम्, नि, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आङ्.

उपसर्गोंके योग से धातुओंके अर्थ कुछके कुछ होजातेहैं । धातु प्रायदि सहस्त्रहैं इन्को धातुपाठसे कण्ठस्थ करना चाहिये । प्रत्यय, और उन्के योगसे कैसे २ रूप बनतेहैं सो आगे प्रदर्शित होतेहैं ।

साधारण नियम

१ कृत् प्रत्यय होनेसे धातु के अन्त्यस्वर और उपधा लघु स्वर को गुण होताहै परन्तु कित्(१) ङित्(१) प्रत्यय होतो नहिं होता ।

२ कृत् प्रत्यय का ण अथवा ञ् इत् होनेसे धातुके अन्त्यस्वर और उपधा अकार की वृद्धि होतीहै । और आकारान्त धातुके उत्तर य होताहै ।

३ कृत् प्रत्यय का घ इत् होनेसे धातुके अन्तस्थित च् के स्थान मे क् और ज् के स्थानमे ग् होताहै ।

४ कृत् प्रत्यय का प् इत होनेसे ह्रस्व-स्वरान्त धातुके उत्तर त् होताहै

५ कृत् प्रत्यय का य परे होनेसे धातु के अन्तस्थित ओ को अव् और औको आव् होताहै ।

६ धातु के आदि ष् ण् को स् न् हो जाताहै ।

(१) क् जिस्से इत् हो उसे कित कहतेहैं; ङ् जिस्से इत् हो उसे ङित कहतेहैं, इत् अधिक वर्ण होताहै जो प्रत्यय के साथ किसी कार्य्यके निमित्त बोलाजाताहै वस्तुतः वह प्रत्यय का अङ्ग नहिं है इस निमित्त कार्य्यान्त मे लोप होजाताहै जैसे "क्त" कित् प्रत्यय है, इसमे त् मात्र रह जाताहै, क् गुण के वारण के निमित्त लगायागया ।

कृत् प्रत्यय

अ (अ) कर्तृवाच्यमे पचादि धातु और सोपपद अन्यान्य धातुओंके उत्तर होताहै यथा पच् + अ = पच, दिव् + अ = देव पूजा + अर्ह् + अ = पूजार्ह

(अट) कर्तृवाच्यमे सोपपद धातु के उत्तर होताहै यथा दिवा + कृ + अ = दिवाकर, अग्र + सृ + अ = अग्रसर, खे + चर् + अ = खेचर

(अङ्) तथा जिन धातुओंकी उपधामे इ उ ऋ हो तिन्के उत्तर होताहै यथा बुध् + अ = बुध, पृ + अ = प्रिय, [1] काम + दुह् + अ = कामदुघा [3] धेनु

(खङ्) कर्तृवाच्यमे यथा प्रियं + वद् + अ = प्रियंवद

(ख) —— तथा —— विश्वम् + भृ + अ = विश्वंभर, स्वयं + वृ + अ = स्वयं (वरा [2]

(खट्) —— तथा —— भयं + कृ + अ = भयङ्कर, क्षेमङ्कर

(षङ्) —— तथा —— तदादिसे परे होताहै उपमान वाचक अर्थमे तथा तद् + दृश् + अ = तादृश, [4] यद् + दृश् + अ = यादृश, एतादृश, अस्मादृश, युष्मादृश, मादृश, त्वादृश, अमूदृश, ईदृश, कीदृश, भवादृश, सदृश, अन्यादृश,

(अ) भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाच्यमे भी होताहै यथा जि + अ = जय, लि + अ = लय, बुध + अ = बोध

(घञ्) —— तथा —— पच् + अ = पाक, त्यज् + अ = त्याग,

(अण्) कर्तृवाच्यमे कर्मवाचक पदके परवर्ती धातुके उत्तर होताहै यथा कुम्भ + कृ + अ = कुम्भकार, तन्तु + वि + अ = तन्तुवाय, सूत्र + धृ + अ = सूत्रधार

(णि) कर्तृवाच्यमे होताहै (यह प्रत्यय सम्पूर्ण इत्है) अंशभाक्, [5] दुःखभाक्,

(क्विप्) —— तथा —— (तथा) सभा + षद् = सभासद्, सु + कृ = सुकृत्, कर्मकृत्, भ्रूण + हन् = भ्रूणहा, [6] तत् + दृश = तादृक्, [7] यादृक्, एतादृक्, इत्यादि ।

(१) यहां ऋको रिय (२) और हको य होताहै (३) यहां अन्त्य आकार स्त्रीलिङ्गका है (४) तदादिशब्द को यहां प्रयोगानुसार आदेश होजाताहै (५) पदान्त च्‌ज्‌ को क् होताहै (६) और हन धातुको घ्न होताहै (७) दिश दृश प्रभृति शब्दों के श को पदान्तमे क् होताहै ।

अक (णक) प्रत्यय कर्तृवाच्यमे होताहै यथा णी + अक = नायक, योजि[१] + अक = योजक, पावक, कारक, नाशक, पाचक, सेचक, रोधक, बोधक,
(षक) तथा नृत् + अक = नर्तक, खन् + अक = खनक, रञ्ज्[२] + अक = रजक,

अन भाववाच्यमे होताहै यथा गम् + अन = गमन, भुज् + अन = भोजन, शी + अन = शयन, दृश् + अन = दर्शन
कर्तृवाच्यमे भी होताहै यथा नन्दि + अन = नन्दन, विद् + अन = वेदना
कर्म्मवाच्यमे भी यथा सु + शास् + अन = सुशासन, (जिसको सुष्ठु प्रकार शासन करसके)
(अनट्) करण और अधिकरण अर्थमे होताहै यथा चर् + अन = चरण (अर्थ चलाजावे जिस्से) णी + अन = नयन स्था + अन = स्थान, (रहतेहैं जिसमे)

अनीय कर्म्मवाच्य और भाववाच्यमे यथा पा + अनीय = पानीय, चि + अनीय = चयनीय, सेचनीय, शोचनीय इत्यादि

आ भाववाच्यमे गुरुस्वर[३] विशिष्ट व्यञ्जनान्त धातुके उत्तर, और कतिपय अन्यान्य धातु, नामधातु और प्रत्ययान्तधातुके[४] उत्तरभी होताहै यथा सेवा[५], क्रीड़ा, भिक्षा, व्यथा, कृपा, तृषा, क्षमा, दया, इच्छा, आभा, प्रभा, आज्ञा, पुत्रकाम्या, तपस्या, श्रद्धा, जिज्ञासा,

आन (शानच्)[६] कर्तृवाच्यमे आत्मनेपदी धातुके उत्तर होताहै
शानच् होनेसे भ्वादि और तुदादि गणीय धातुके उत्तर अ, दिवादि गणीयके उत्तर य, स्वादि के उत्तर नु, चुरादि के उत्तर णि कारेत् इ और तनादिके उत्तर उ, क्र्यादिके उत्तर ना, रुधादिके अन्त्यस्वरके उत्तर न् आगम होताहै, ह्वादिके प्रथम वर्णको द्वित्व होताहै और

(१) धातुसे उत्तर जो णिजन्तार्थक इ प्रत्यय आताहै उसका लोप होताहै हल् प्रत्यय परे होनेसे (२) धातुके उपधाभूत न् का लोप होताहै (३) नामधातु उसे कहतेहैं जो नामसे धातु बने यथा पुत्र काम्या (४) प्रत्ययान्त धातु चार प्रकारके हैं यथा प्रेरणार्थक इ प्रत्ययान्त, इच्छार्थक स प्रत्ययान्त, पौनः पुन्यार्थक य प्रत्ययान्त और भाव कर्म्मवाचक य प्रत्ययान्त (५) आ प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होतेहैं, (६) धातु कोई परस्मैपदी कोई आत्मने पदी और कोई उभय पदी होतीहैं (६) और ये धातु भ्वादि प्रभृति दशगणों मे विभक्त हैं, कौन धातु कौन पदी और किस गणके हैं यह धातुपाठ से विदित होगा।

अदादि के उत्तर कोई प्रत्यय नहिं होता। प्रथमोक्त तीन गणोंके धातुओंके उत्तर आन को मान होजाताहै यथा (भ्वादि) सेव + आन = सेवमान, वृत् + आन = वर्त्तमान, (दिवादि) जा + आन = जायमान, (तुदादि) मृ + आन = म्रियमान, (अदादि) शयान (तनादि) मन + आन = मन्वान (ह्वादि) मा + आन = मिमान

(शानच्) कर्म्मवाच्यमे भी होताहै। कर्म्मवाच्य होनेसे धातुके उत्तर य प्रत्यय और य से परे आन् को मान होताहै यथा कृ + आन = क्रियमाण, दा + आन = दीयमान इत्यादि

आलु कर्तृवाच्यमे होताहै यथा दयालु, निद्रालु, श्रद्धालु,

इ भाववाच्यमे होताहै यथा वि + धा + इ = विधि, निधि, सन्धि, जल + धा + इ = जलधि, वारि + नि + धा + इ = वारिनिधि

कर्तृवाच्यमे भी यथा शकृत्करि, (खिप्रत्यय) कुक्षिंभरि, उदरम्भरि

इन् कर्तृवाच्यमे यथा शम् + इन् = शमी, श्रमी, दमी, क्लमी, तपी, भ्रमी, मांसविक्रयी, तैलविक्रयी

(घिनुण) सं + सृज् + इन् = संसर्गी, युज् + इन् = योगी, वि + विच् + इन् = विवेकी, त्यज् + इन् = त्यागी, राज् + इन् = रागी

(णिन्) वाला अर्थमे यथा अभि + लष + इन् = अभिलाषी (अर्थात् अभिलाषवाला) मन्त्री, वादी, विकारी, भावी, स्थायी, गामी, द्रोही

इत्र करणवाच्यमे होताहै यथा पू + इत्र = पवित्र, चरित्र, वहित्र, खनित्र

इत्नु कर्तृवाच्यमे यथा स्तनयित्नु, हृदयित्नु, मदयित्नु

इष्णु ——तथा—— सहिष्णु, रोचिष्णु, वर्द्धिष्णु, चरिष्णु, (णिष्णु) यथा प्रियंभविष्णु

उ ——तथा—— आ + शंस + उ = आशंसु, इच्छु, भिक्षु, जिज्ञासु, पिपासु, बुभुक्षु, चिकीर्षु, विवक्षु, जिघ्रक्षु, जिज्ञासु, तितीर्षु, दित्सु, दिदृक्षु, लिप्सु, जिगीषु, इत्यादि

---

¹(१) धातुका प्रथम वर्ण द्वित्व होनेसे उसमे दीर्घ स्वर होनेसे ह्रस्व होताहै, वर्गके द्वितीय वर्णके स्थानमे प्रथम, चतुर्थके स्थानमें तृतीय, क ख के स्थानमे च, ग घ ह के स्थानमे ज ऋकार के स्थानमे अ और हामा धातुके आको इ होताहै। (२) य परे होनेसे दा धा मा गा हा पा सा स्था धातुके आकार को ई होताहै। (३) धातुका अन्त्य आका लोप होताहै। (४) इन्‌कोई होजाताहै कारक विभक्ति परे होनेसे

उक (उकञ्) — तथा — कामुक, लाषुक, पातुक, पाठुक,
खुकञ् — प्रियंभावुक
उर (घुरच्) — तथा — भङ्गुर, भासुर, मेदुर
(कुरच्) — छिदुर, भिदुर, विदुर

ऊक — तथा — जागरूक, यायजूक, वावदूक, दन्दशूक

त (क्त) प्रत्यय कर्तृ,कर्म और भाव वाच्यमे अतीत कालमे होताहै यथा शाक्+त=शक्त, शिष+त=शिष्ट, ख्यात, इत, क्रीत, भूत, लिप्त, स्तुत, मत, हत, आप्त, च्युत, छुप्त, स्फुत, स्पृष्ट, आक्रुष्ट। छ्, श, ष, और मृज सृज यज धातुके ज् के परे त् होनेसे दोनो मिलकर ष्ट होताहै यथा इष्ट, मृष्ट सृष्ट, यष्ट,। च्, ज्, को क् होताहै त परे होनेसे यथा मुक्त, भुक्त,। ह् से परे त् होनेसे दोनो मिलकर ढ होताहै और पूर्व्व ह्रस्व स्वर दीर्घ होताहै यथा गुह्+त=गूढ़, मूढ़,। दह, दिह, दुह, मुह, प्रभृति का ह् और त् मिलकर ग्ध होताहै यथा दह्+त=दग्ध, दिग्ध, दुग्ध, मुग्ध, (वा) मूढ़[1]। ध् से परे त् होने से उभय मिलकर द्ध होताहै यथा सिद्ध, रुद्ध,। भ् से परे त् होनेसे दोनो को ब्ध होताहै यथा आरब्ध, लब्ध।

शमादि धातुओंके अ को आ होताहै यथा शान्त, भ्रान्त, दान्त, भ्रान्त, क्लान्त। त, तृ, तव्य स्यत, स्यमान प्रत्यय परे होनेसे धातुके उत्तर इ लगता है ऐसे-धातुओंको सेट् धातु कहतेहैं; पर बहुत से धातु अनिट भीहैं जिन्मे इ नहि लगता। यथा

दरिद्रा भिन्न सारे आकारान्त धातु अनिटहैं।
श्रि श्वि भिन्न सारे इकारान्त धातु — तथा —
डी शी दिधी वेवी भिन्न सारे ईकारान्त — "
यु रु नु स्नु क्षु क्ष्णु ऊर्णु भिन्न सारे उकारान्त "
वृ जागृ भिन्न सारे ऋकारान्त "
कान्त मे केवल शक् धातु "
चान्त मे पच् मुच् रिच् वच् विच् सिच्

(१) अह् धातुसे परे त् होनेसे यह रूप भी होताहै

छान्तमे प्रच्छ

जान्तमे त्यज, निज, भञ्ज, भुज, भ्रस्ज, मस्ज, मृज, यज, युज, रञ्ज
रुज, विज, सञ्ज, सृज, स्वञ्ज,

दान्तमे अद्, तद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद्, भिद्, विद्, विन्द्,
शद्, सद्, स्कन्द्, स्विद्, हद्,

धान्तमे क्रुध, व्यध्, बन्ध, बुध, युध्, राध्, रुध्, व्यध्, शुध्, साध्, सिध्,

नान्तमे मन्, हन्,

पान्तमे आप्, क्षिप्, छुप्, तप्, तिप्, तृप्, दृप्, लिप्, लुप्, वप्,
शप्, सृप्, स्वप्,

भान्तमे यभ, रभ, लभ,

मान्तमे गम्, नम्, यम्, रम्,

शान्तमे क्रुश, दंश, दिश, दृश, मृश, रिश, रुश, लिश, स्पृश,

षान्तमे कृष्, त्विष्, त्विष्, दुष्, द्विष्, पिष्, पुष्, मृष्, विष्, शिष्,
शुष्, श्लिष्,

सान्तमे घस्, वस्,

हान्तमे दह, दिह, दुह, नह, मिह, रुह, लिह, वह

उल्लिखित धातुओंके सिवा और कई धातु हैं जो संस्कृत के और प्रकरणोंमे सेट और अनिट दोनो हैं परन्तु तादि प्रत्ययों मे नित्य अनिट हैं

यथा ईदित, ऊदित, इष्, रिष्, रुष, लभ, सह, कृत, छृत
छृद्, तृद्, दृ, रध प्रभृति

तथा उकारान्त(१) और ऊकारान्त सारे धातु अनिट् होते हैं

हलन्त धातुके उपधान् को लोप होता है क्त परे होनेसे यथा बन्ध+
त्=बद्ध

अनिट् धातुके अन्त्य न और ञ् को लोप होता है यथा ——
मत, हत, गत, नत, यत, रत, तत,

—— धातु के अन्त्य द् को न और त् प्रत्यय को भी न होता है मद धातुके

(१) ऊर्णार्थ अर्ज्यधातु के सिवा

सिवा यथा क्लिद् + त = क्लिन्न, छिन्न, भिन्न, मत्त

ओकारेत धातुसे परे त प्रत्यय को न होताहै यथा रुग्न, दीगा,

रसे परे ——— तथा ——— शीर्ण, चूर्ण, कीर्ण(१), तीर्ण,
स्नान, म्लान, द्राण, स्त्यान(२),
हीण(वा)हीत, नुन्न(वा)नुत, विन्न(वा) विन्न

सेट धातु यथा सेवित, चलित, लिखित, पठित,

प्रेरणार्थक इ प्रत्यय का लोप होताहै सेट क्त परे होनेसे
यथा कारि + त = कारित

दे, पच, शुष धातुसे परे क्त को म, व, क यथा क्रम होताहै
क्षाम(३), पक्व, शुष्क,।

क्त परे होनेसे और भी कई कार्य्य होतेहैं जिन्को प्रयोगानुसार जान लेना चाहिये यथा स्फाय + त = स्फीत, स्फात, छादि + त = छन्न, छादित; शा + त = शित, शात, ग्रह् + त = ग्रहीत, श्वि + त = शून, ह्वा + त = हूत, वच + त = उक्त(४) वस् + त = उषित, वद् + त = उदित, वप् + त = उप्त, वह् + त = ऊढ, स्वप + त = सुप्त, गा + त = गीत, पा + त = पीत, हा + त = हीन इत्यादि

तव्य कर्म्मवाच्य और भाव वाच्यमे होताहै यथा दातव्य, कर्त्तव्य, वक्तव्य,
शयितव्य, याचितव्य, भवितव्य, प्रष्टव्य, वोढव्य,

तृ (तृच्) कर्तृवाच्यमे होताहै यथा दाता(५), जि + तृ = जेता, हन + तृ = हन्ता, सिच् + तृ = सेक्ता, भविता, कारयिता

ति (क्तिन्) भाव वाच्यमे होताहै और ति प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होताहै यथा ख्याति, शक्ति, दृश + ति = दृष्टि(६), स्ना + ति = स्नाति(७)

त्र कर्तृवाच्य करण अर्थमे यथा णी + त्र = नेत्र, स्तु + त्र = स्तोत्र, शास्त्र,
दंश + त्र = दंष्ट्रा(८)

---

(१) धातुके अन्त्य ऋ को ई होताहै। (२) स्ना म्ला द्रा स्त्या धातुसे परे त प्रत्यय को न होताहै और ह्री आदि धातु से परे विकल्प करके न होताहै। (३) धातुके अन्त्य ए ऐ ओ औ को आ होताहै। (४) धातुके व को उ होताहै। (५) तृ को ता होताहै कारक विभक्ति परे होनेसे। (६) छ श ष के परे त होनेसे दोनो मिलकर ष्ट होजाताहै और थ होने से ष्ठ होजाताहै। (७) स्ना म्ला हा प्रभृति धातुके उत्तर ति को नि होताहै। (८) यहां आकार स्त्री प्रत्यय का है।

त्रिम (त्रिमक) डुजिमधातुका इत् हो उसके उत्तर होताहै यथा कृत्रिम

थक —— गा धातुके उत्तर होताहै कर्तृवाच्यमे शिल्पी अर्थ होनेसे यथा गाथको

न —— भाव वाच्यमे होताहै यथा यज+न=यज्ञ, यत्न, स्वप्न, प्रश्न, याच्ञा[1], तृष्णा[2]

मर (क्मर) तथा घस्मर, अद्मर, सृमर

य (यत्) कर्मवाच्यमे और भाववाच्यमे होताहै यथा चि+य=चेय, भू+य=भव्य, नी+य=नेय, दा+य=देय[2], शक्य, सह्य, लभ्य, गम्य, मद्य, पद्य,

(ण्यत्) तथा ऋकारान्त और व्यञ्जन वर्णान्त धातुके उत्तर होताहै यथा (कृ) कार्य्य (वच) वाच्य (रुज्) रोग्य

(क्यप्) तथा इ, ड, भृ[3], हृ, जुष्, शास्, स्तु प्रभृति धातुके उत्तर होताहै यथा भृत्य, शिष्य

(यक्) भाव वाच्यमे होताहै यथा (विद्+य=आ=विद्या[4], क्रिया, शय्या

र कर्तृवाच्यमे होताहै यथा नम्र, अजस्र

वर कर्तृवाच्यमे होताहै यथा स्थावर, ईश्वर, भास्वर

(क्वरप्) तथा नश्वर, जित्वर, गत्वर[5]

वन (क्वनिप्) तथा पारदृश्वा[5] शत्रुजित्वा

स्यत् (स्यत्) कर्तृवाच्यमे, परस्मैपदी धातुके उत्तर, भविष्यत् अर्थमे होताहै यथा भविष्यत्[6]

स्यमान —— तथा (और कभी कर्मवाच्यमे भी) आत्मनेपदी धातुके उत्तर होताहै यथा (वच+स्यमान)=वक्ष्यमाण[7]

स्नु (स्नुक) कर्तृवाच्यमे होताहै यथा विष्णु

इत्यादि

---

(१) यहां आकार स्त्री प्रत्यय का है (२) दाके आकारको ए होताहै य परे होनेसे ।
(३) पकारेत् प्रत्यय परे होनेसे ह्रस्व स्वरान्त धातुके उत्तर त् आजाताहै ।
(४) यक् प्रत्ययान्त शब्द स्त्री लिङ्ग होतेहैं इस निमित्त य के पीछे आ आताहै
(५) वन् को वा होताहै कारक विभक्ति परे होनेसे । (६) स्यत्, स्यमान, प्रत्यय परे होनेसे सेट धातुओंके उत्तर इभी आताहै । (७) चु, छ, ज, श, ष, ह, त्र, से परे स् होनेसे दोनो मिलकर क्ष, होजाताहै ।

तद्धितान्तशब्द

नामके पीछे अर्थ विशेष मे जो प्रत्यय लगतेहैं उन्हे तद्धित प्रत्यय कहतेहैं।

साधारणनियम

१ णकारेत तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नामके आदिस्वरको प्रायश: वृद्धि होतीहै

२ तद्धित प्रत्यय का यृ और स्वर परे होनेसे नामके अन्त्य इ और अ-को लोप होताहै और उ को गुण होताहै

३ ओ औ से परे तद्धित यृ स्वरवत् होताहै

४ उकारेत तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नाम के अन्त्य स्वरका, और स्वर से परे जो व्यञ्जन हो तो उसका भी, लोप होताहै

५ नाम के आदिस्वरके साथ जो यृ वृ हो तो णित् प्रत्यय परे होनेसे उन्को इय, उव, होताहै और इ उ की वृद्धि होतीहै

६ तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नाम के अन्त्य न कारको प्रायश: लोप होताहै

तद्धितप्रत्यय

अ (अण) अपत्य अर्थमे होताहै यथा (शिव+अ) शैव, (पाण्डु+अ)= पाण्डव, विविध सम्बन्धोंमे भी होताहै यथा (विष्णु का भक्त) वैष्णव,

आ अकारान्त शब्दसे परे आताहै स्त्री अर्थमे; यथा, वृद्धा, कलकिता वैय,

इ (इण) अपत्य अर्थमे। यथा दाशरथि

इक (इकण) विविध सम्बन्धोंमे। यथा तार्किक, कायिक, धार्म्मिक

इका ——— स्त्री अर्थमे ——— यथा पाचिका, परिचारिका

इत — भूत अर्थमे यथा पल्लवित, पुष्पित, पुलकित

इन् — वाला अर्थमे यथा ज्ञानी, धनी, मानी, मायी, गुणी

इम (डिम) — तथा —— अग्रिम, अन्तिम, पश्चिम,

---

(१) लड़के लड़कीको अपत्य कहतेहैं। (२) इन् ... र होजाताहै सम्बोधन के सिवा अन्य विभक्ति परे होनेसे।

इमन्— भाव अर्थमे यथा नीलिमा,(१) लघिमा, महिमा, गरिमा, भूमा

इष्ठ— अतिशय होनेसे यथा श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, अल्पिष्ठ, वलिष्ठ

ई स्त्री अर्थमे होताहै अकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त, शब्द और मत्‌वत् इन् प्रत्ययान्त शब्दसे परे। यथा नदी, गौरी, साध्वी, कर्त्री, धात्री; बुद्धिमती, लज्जावती, मानिनी, मनोहारिणी।

ईय— सम्बन्ध अर्थमे, यथा मदीय, त्वदीय, भवदीय, मानवीय, देशीय

ईयस्(१) अतिशय होनेसे, यथा वलीयान्

एय (ढयण) अपत्य अर्थमे यथा वैमात्रेय, गाङ्गेय

क— कर्तृ आदि } अर्थमे यथा शिक्षक, मीमांसक

चित्— किम् शब्दसे परे आताहै यथा कश्चित, किञ्चित्, कचित्, कारित

तन कालवाचक शब्दसे परे होताहै यथा अद्यतन, अधुनातन, पूर्व्वतन, प्राक्तन

तम (संख्यापूरण अर्थमे) यथा विंशतितम, सहस्रतम,) अतिशय होनेसे भी यथा गुरुतम, कृशतम

तर अधिकहोनेसे यथा प्रियतर, गुरुतर

तः— से अर्थमे यथा अतः यतः फलतः सर्व्वतः

ता भाव और समूह अर्थमे यथा प्रभुता, बन्धुता; जनता

त्व भाव अर्थमे यथा प्रभुत्व, गुरुत्व, देवत्व, मनुष्यत्व,

त्र मे अर्थमे यथा सर्व्वत्र

तीय (संख्यापूरणअर्थमे) यथा द्वितीय, तृतीय,

थ ———— तथा —— चतुर्थ; षष्ठ,

था प्रकार अर्थमे, यथा, तथा, सर्व्वथा, अन्यथा

दा काल अर्थमे, यथा एकदा, सर्व्वदा, सदा

धा वार अर्थमे, यथा बहुधा, एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा

म संख्यापूरण अर्थमे नान्त शब्दके उत्तर होताहै यथा पञ्चम, सप्तम, दशम, आदिम, मध्यम, }

मत् वाला अर्थमे होताहै यथा मतिमान्, बुद्धिमान्, श्रीमान्,(२)

मय व्याप्ति प्रचुरादि } अर्थमे } यथा स्वर्णमय, दयामय,

(१) इमन् को इमा और ईयस् को ईयान् होजाताहै सम्बोधन भिन्नविभक्ति परे होनेसे

(२) मत् को मान् होताहै सम्बोधन भिन्नविभक्ति परे होनेसे, सम्बोधनमे मन् होताहै

मात्र समास और केवल अर्थमे यथा स्थलमात्र, जलमात्र

य (यण) अपत्य अर्थमे यथा चाणक्य

भावादि अर्थमे यथा गाम्भीर्य्य, धैर्य्य

वत् (वतिच्) उपमामे यथा चन्द्रवत् (मुख) (१)

(वतप्) वाला अर्थमे यथा ज्ञानवान्, विद्यावान्, दयावान्, अवर्णान्तशब्दसे) (१)

शः (समास) बहु अल्प वाचक शब्दसे परे होताहै यथा, बहुशः भूरिशः अल्पशः) इत्यादि (२)

हिन्दीतद्धितप्रत्यय

कई तद्धित प्रत्यय हिन्दीभाषाके हैं जिन्का व्यवहार संस्कृतमे नहिहै यथा)

ई (भाव अर्थमे) यथा भलाई, बुराई, खटाई, मिठाई, जवानी, चोरी

ऊ वाला अर्थमे यथा कमाऊ, खाऊ,

पन भाव अर्थमे यथा लड़कपन

वाला स्वामी अर्थमे यथा धनवाला, नामवाला, कपड़ेवाला

वान व्यवहार अर्थमे यथा गाड़ीवान,

समास

१ दो वा बहुत पदोंका एक पद हो जाना समास कहलाताहै

२ समास के अन्तर्गत पदोंकी विभक्तियें लोप होजाती हैं

३ समास होनेसे पूर्व्व पदका अन्त्य नकार लोप होजाताहै

४ स्वर परे होनेसे परपदका अन्त्य नकार और इवर्ण अवर्णका लोपहोताहै)

५ समास षट्‌प्रकारके हैं यथा अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्म्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, और बहुब्रीहि जिन्का क्रमसे वर्णन होताहै

---

(१) वतुप्‌को वानहोताहै

(२) चकारेत तद्धित प्रत्ययःन्त शब्द अव्यय होताहै

अव्ययीभावसमास

१ अव्यय पूर्व्वक समास को अव्ययीभाव समास कहते हैं यथा उपगृह, उपद्वीप, निर्विघ्न, प्रतिदिन, यथाशक्ति; [1]सहरि, सजल; यावज्जीवन, [2]आसमुद्र (पृथिवी); प्रत्यक्ष, परोक्ष, समक्ष; अध्यात्म, [3]अप्रिय, [4]अनादि

तत्पुरुषसमास

१ कर्म्मादि विभक्त्यन्तपदके साथ अन्य पद का मिलाप होकर एकपद होजाना तत्पुरुष समास कहलाता है यथा (अन्नको खानेकी इच्छाकरने-वाला=) अन्नबुभुक्षु, (वचनसे लडाई) वाककलह, (स्नानके निमित्तयात्रा) स्नानयात्रा, नगरसे आया हूआ=) नगरागत, (सुखका भोग=) सुखभोग, (घरमें आया हुआ) गृहागत

कर्म्मधारयसमास

१ विशेषण और विशेष्य मिलकर जो एकपद होता है उसे कर्म्मधारयसमास कहते हैं यथा नीलोत्पल (नीलाकंवल;) [5]भस्मीभूत, [5]राजीहोत; [6]कापुरुष,

द्विगुसमास

१ जिस कर्म्मधारय के पूर्व्वपद में संख्यावाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं यथा पञ्चहस्त; त्रिलोकी, चतुष्पदी, पञ्चनली; त्रिभुवन, चतुर्युग

द्वन्दसमास

१ कईवस्तुओंके योग अर्थमे द्वन्दसमास होता है यथा (राम और लक्ष्मण=) रामलक्ष्मण, (कन्दमूल और फल=) कन्दमूलफल (हाथी और घोड़े=) हाथीघोड़े, (सम्पद् और विपद=) सम्पद्विपद (माता और पिता) मातापिता

बहुव्रीहिसमास

१ कई पद मिलकर अन्य किसी पदका बोधन करें तो वह बहुव्रीहिसमास कहलाता है यथा (दीर्घ हैं बाहु जिसके वह) [8]दीर्घबाहु, (कहलाता है), (जो पुत्रके सहित हो वह) सपुत्र, सहूत, कुम्भपदी

(१) सदृश व्याप्ता सहित अर्थमे स का प्रयोग होता है। (२) तक और से अर्थ मे आ का प्रयोग होता है अर्थात् समुद्र तक पृथिवी (अथवा) समुद्रसे पृथिवीतक। (३) नञ् प्रत्यय को अ हो जाता है व्यञ्जन वर्ण परे होनेसे और अन् होजाता है स्वर परे होनेसे। (४) सम्बोधन विभक्त्यन्त पदके साथ समास नहिं होता (५) जो पहिले नथा और होजावे इस अर्थमे पूर्व्वपदके अन्त ई प्रत्यय आता है यथा (पहिले भस्म न था अब होगया=) भस्मीभूत (६) समास मे कु को का भी होजाता है। (७) हस्तहार अर्थमे अर्थात् कईयोंके एक समझनेमे ई प्रत्यय भी अन्यपदको लगजाता है। (८) समास मे ई प्रभृति कई एक प्रत्यय भी कभी २ लगजाते हैं।

तृतीयभाग

अथवा वाक्यों का वर्णन

१ कई पदोंके यथारीति योग से वाक्य बनताहै. वाक्यमे कमसे कम कर्त्ता और क्रिया अवश्य चाहिये, उच्चरितहों वानहिं यथा भानुदत्त लिखतेहैं। और सब कारकादि अपने विशेषणादिके साथ प्रयोजनानुसार लगतेहैं।

२ जिस वाक्यमे थोड़े कारकादिहों वह निकटान्वयी वाक्य कहलाता है यथा, भानुदत्त पढ़ातेहैं; और जिसमे बहुत कारकादिहों वह दूरान्वयी वाक्य कहलाताहै, यथा, भानुदत्त महाविद्यालयके लड़कों को शिक्षासभाके स्थानमें बड़े यत्नसे हिन्दी भाषा पढ़ातेहैं।

३ वाक्य कोई सीधे होतेहैं, कोई जटिल। सीधा वाक्य उसे कहतेहैं जिसके कारकोंमे बहुत विशेषणादि न हों यथा उल्लिखित दृष्टान्तमें। जटिल वाक्य के कारक सविशेषण होतेहैं और इसमे कभी २ योजकादिसे युक्त कई पदोंका कारक भी होताहै। जटिल वाक्यमे अन्तर्वाक्य भी, जिसका लक्षण आगे कहा जायगा, कभी २ होतेहैं। दृष्टान्त, "विशुद्ध हिन्दी भाषा, अथवा जो भाषा संस्कृत मूलक है, उसके यथोचित परिज्ञान और आलोचनासे हिन्दू जाति की, जोकि भारत वर्ष के प्रधान निवासीहैं, यथार्थ उन्नति सम्भावितहै"।

४ जिस वाक्यमे एक क्रियाहो वह व्यष्टि वाक्य कहलाताहै; यथा लाहोरमे अब हिन्दीकी चर्चा आरम्भ हुईहै। कई व्यष्टि वाक्य योजकों के साथ अथवा विनायोजकोंके सम्बद्ध होनेसे समष्टि वाक्य होता है यथा लाहोरमे हिन्दीकी चर्चा आरम्भतो हुईहै, परन्तु इसका विस्तृत होना विना यत्न और परिश्रमके दुस्तरहै॥

५ वाक्यान्तर्गत किसी पदके वर्णनमे, अथवा किसी पदार्थ के बोधके निमित्त जो वर्णन होताहै, वह अन्तर वाक्य कहलाताहै यथा। हिन्दीभाषाकी उन्नति, जिस्के यत्नमे हमलोग प्रवृत्तहैं, हिन्दु जातिकी उन्नति का सोपानहै; जो हमारे मानसिक भावोंको व्यक्त करतीहै वह भाषाहै॥

पदयोजनाकीरीति

१ क्रिया वाक्य के अन्तमे लगतीहै; यथा उक्त दृष्टान्तोंमे।

२ कर्त्ता कारक प्रायशः वाक्यमे प्रथम होताहै, परन्तु जहां अन्यान्य कारक प्रधानहों वहां पीछे भी लगताहै।

३ कर्त्ताके लिङ्ग, वचन और पुरुष क्रियाके लिङ्ग, वचन और पुरुषके साथ मिलने चाहियें यथा तू जाताहै, हम पढतेहैं, गौ दूध देतीहै। योजकादि के साथ अनेक कर्त्ता कारकों का योग हो तो क्रिया नित्यहि बहुवचन पुंलिङ्ग और अन्य पुरुषकी होतीहै। यथा, मैंने देखा कि तुम, तुम्हारी बहन, और मेरा लड़का नदी की ओर जातेथे।

४ योजकादि से अनेक कर्त्ता कारकों का वियोग हो तो पहिले कर्त्ताके साथ क्रियाके लिङ्गादि मिलतेहैं और क्रिया पहिले कर्त्ताके पीछे और अवशिष्ट कर्त्ताके पूर्व्व लगतीहै, यथा, इस घरमे स्त्रीयें रहतीहैं वा पुरुष?

५ कर्म्म वाच्य होनेसे कर्त्तामे करण कारक की विभक्तियें लगतीहैं यथा घड़ी मनुष्योंके द्वारा बनाई जातीहै।

६ कर्म्मकारक प्रायशः क्रियाके पूर्व्व लगताहै। यथा लड़का दांतोंसे चने चबाताहै। परन्तु जब अन्य कारकोंको विशेष ज्ञापन करना होताहै तब वे कारक क्रियाके पूर्व्व लगतेहैं और कर्म्म उन्के पूर्व्व लगताहै; यथा लड़का चनोंको दांतोंसे चबाताहै।

७ प्रायशः क्रियाके पूर्व्व औरसमीप लगनेसे कर्म्मकीविभक्तिका लोप भी होताहै और कर्म्मका कर्त्ताकी न्याई रूप होताहै और क्रिया भी

उस कर्त्तासे जो लुप्त कर्म्मके स्थानमे हुआहै मिलतीहै यथा उसने रोटी खाई रामने मुझको पुस्तकदी, मैने वह वस्तुली; तुमने यह कहा मैजो करताहूं सो छिपाता नहिं। ऐसे उसने कौनसे धर्म्मकिये; मैने कोई वस्तु नहिंली। और जहां क्रियाके पूर्व्ववर्त्ति कर्म्मकी विभक्तिका लोप नहिं होता वहां कर्म्मका विशेष ज्ञापन होताहै यथा लड़का चनोंको चबाताहै (अर्थात् अन्यको नहिं)

८ लिङ्ग-कर्म्मक क्रियामे अन्य पुरुषके कर्म्मकी विभक्तिका नित्यलोपहोताहै (और उस कर्म्मके लिङ्ग, वचन, क्रियाके लिङ्ग-वचन से मिलतेहैं) यथा मैने पोथियें पढ़ी। परन्तु कर्म्मके साथ वर्त्तमानकालिक क्रिया विशेषण होनेसे पूर्व्वोक्तकी विभक्तिका लोप नहिं होता यथा रामने सीताको जातीहुई देखी।

९ लिङ्ग-कर्म्मक क्रियामे उत्तम और मध्यम पुरुष के कर्म्मकी विभक्तिका विकल्प करके लोप होताहै (और क्रिया कर्त्ताके लिङ्ग-वचनसे मिलतीहै) यथा रामदत्तने मुझे (स्त्रीको) देखा वा, मुझको देखा। परन्तु उस कर्म्मके साथ वर्त्तमान कालिक क्रिया विशेषण होनेसे, क्रिया कर्म्मके लिङ्ग-वचनसे मिलतीहै यथा रामने मुझको (वा) मुझे जाती हुई देखी।

१० लिङ्ग-कर्म्मक क्रियामे अनेक कर्म्म योजकादि से युक्त होनेसे क्रिया बहुवचन होतीहै यथा सीताने राम और लक्ष्मण जाते हुए देखे। परन्तु कर्म्मवियुक्त होनेसे पहिले कर्म्मके साथ क्रियाके लिङ्गादि मिलतेहैं और दूसरा कर्म्म क्रियाके पीछे आताहै यथा तुमने भातखाया कि रोटी।

११ कर्म्म वाच्यमे कर्म्म कर्त्ता रूपहोजाताहै यथा मिठाई बनाई जातीहै।

१२ करणादि कारक कर्त्ताके पीछे और क्रिया के पूर्व्व प्रायशः लगते हैं

१३ करणोंमे से विभक्ति प्रायशः लगतीहै। "के द्वारा" विभक्ति कर्म्मवाच्यका कर्त्ता करण होनेसे लगतीहै। "करके" का व्यवहार पुरानाहै अब संस्कृत श्लोकोंके अर्थमे कभी २ व्यवहृत होताहै।

१४ जिस्के द्वारा क्रिया सिद्ध हो वह करण होताहै यथा आटा चक्कीसे पिसताहै

१५ प्रेरणार्थक धातु करणकी अपेक्षा रखतेहैं। यथा राम सुनारसे गहना बनवा) ताहै।

१६ कारणमे भी करण कारक होताहै यथा मट्टीसे घड़ा बनताहै।

१७ सहित अर्थमे भी करण कारक होताहै यथा रामसे लक्ष्मण की प्रीतिथी।

१८ सम्प्रदानकारक संस्कृतमे दानपात्रमे विशेष करके लगताहै। यथा ब्राह्मणकेा गौ दी। परन्तु भाषामे जिस प्रयोजन अथवा उद्देश्यमे कोई क्रिया आचरित हो उस प्रयोजन ज्ञापक शब्दमे सम्प्रदान कारक होताहै यथा मैने पढ़नेकेलिये (निमित्त,को) पुस्तक लीहै।

१९ क्रियाद्योतक धातु संज्ञासे परे सम्प्रदानकी विभक्तियोंका लोप होताहै। लगना बैठना धातु परे होनेसे यथा जानेलगा (अर्थात् जानेका प्रारम्भ किया) खाने बैठा (अर्थात् खानेके निमित्त बैठा)। परन्तु सम्बंध पूर्वक्रिया द्योतक धातुसंज्ञासे परे सम्प्रदानके स्थानमे अधिकरणकी विभक्ति लगतीहै यथा रोटीके खानेमे लगा।

२० अपादान कारक उसमे लगताहै जिस्से कोई वस्तु पृथक् अथवा दूरकी जाय यथा बाबूलोग कलकत्तेसे आतेहैं। पर्व्वतसे नदी निकलतीहै।

२१ अपादान कारक हेतुमेभीलगताहै यथा रामअच्छा पढ़ताहै इसे मे उस्का प्यार करताहूं। दूध से घी निकलताहै। मनुष्य व्याघ्रसे डरताहै।

२२ गुणकी विशेषता जतानेमे अर्थात् अपेक्षा अर्थ मे भी अपादान कारक होताहै यथा धनी मूर्खसे निर्धन विद्वान् श्रेष्ठहै।

२३ सम्बन्ध को संस्कृत वैयाकरण कारक नहिं कहते क्योंकि क्रियाके साथ इस्का अन्वय नहिं होता। सम्बन्ध सम्बन्धीके पूर्व लगताहै यथा भारतवर्ष हिन्दुओंका देशहै।

२४ जहां सम्बन्ध को विशेषकरके ज्ञापन करनाहोताहै वहां सम्बन्धीके पीछे भी सम्बन्ध लगताहै यथा यह पुस्तक रामकीहै।

२५ सम्बन्धी के विशेषण सम्बन्ध और सम्बधी के बीचमे लगतेहैं यथा यह मेरा परम मित्रहै।

२६ जो आधार हो उसमे अधिकरण कारक लगताहै। यथा पुष्पमे सुगन्धि है। वाष्पीय शकटपर आरोहण करके लोग एकस्थानसे अन्यस्थान को शीघ्र पहुंच सकतेहैं।

२७ निर्धारण अर्थमे भी अधिकरण कारक होताहै यथा जीवोंमे मनुष्य उत्तम है।

२८ वर्णन का जो उपलक्ष हो उसमे भी अधिकरण कारक होताहै यथा धर्मके विषय तुम्हे क्या वक्तव्यहै। विषयके पीछे "मे" भी लगता है यथा इस विषय मे तुम्हे क्या कहनाहै

२९ निकट अर्थमे भी अधिकरण कारक होताहै यथा। लड़का कूप परख ड़ाहै (अर्थात् कूपके निकट)

३० अधिकरण विभक्तिके पीछे निर्धारण अर्थमे अपादान और (विकल्प करके) सम्बन्ध की विभक्तियें भी लगतीहैं यथा हिन्दुओंमे से कुछ लोग यूरोपको गयेहैं। इस नगरमे का कोई मनुष्य भी तुमको जानताहै? (अथवा) इस नगरका कोई मनुष्य इत्यादि।

३१ सम्बन्ध पूर्व्व होनेसे अधिकरण कारकान्त शब्दकाकभीलोपभीहोजाताहै यथा भीमसेनके बड़ा बलहै (अर्थात् भीमसेनके शरीरमे) इस बनियेके बड़ा धनहै (अर्थात् बनियेके घरमे)

३२ सम्बोधन अन्तरवाक्यकी न्याई वाक्यके कभी आदि, कभी मध्य, कभी अन्तमे लगताहै यथा हेपण्डित अपने ज्ञान और विवेचना के अनुसार आचरण करो। मैने तुमको, हेपण्डित, कईवार समझाया कि लोकानुरोधसे कर्त्तव्यकी अवहेला नहिं करनी चाहिये। यह पुस्तक हमकोदो भाई।

३३ हे आदि सम्बोधनके चिह्नों का लगाना वा न लगाना इच्छा और रुचि के अनुसारहै। यथा मुझको भाई इस समय बड़ा कामहै, अथवा, हे भाई इस समय मुझको बड़ा कामहै। परन्तु वाक्यके अन्तमे इन चिह्नों को नहि लगाना चाहिये यथा आभाई।

३४ उच्चैःस्वरसे आह्वान करनेमे सम्बोधन की प्लुत संज्ञा होतीहै। प्लुत सम्बोधनमे केवल हे आदि चिह्नोंकाभी व्यवहार होताहै और नामके पीछे भी

है आदि चिन्ह आतेहैं यथा यहां आओजी (अथवा) यहां आओ बाबूजी।

३५ विशेषण विशेष्य के पूर्व्व लगतेहैं। यथा यह दीर्घ सबल घोटक रामचन्द्रकाहै।

३६ जिसवाक्यमे "होना" क्रियाहो उस्मे विशेष्य के पीछे और क्रियाके पूर्व्व विशेषण लगताहै यथा पृथिवी गोलाकारहै। अनित्य विशेषण भी विशेष्य के पीछे लगतेहैं यथा ऐसा यत्न करो जिस्से शरीर स्वस्थ रहे।

३७ विशेष्यजो स्त्रीलिङ्ग हो तो विशेषण उस्के पूर्व्व लगनेसे प्रायशः स्त्रीलिङ्ग होताहै और पीछे लगनेसे पुंलिङ्ग हि रहताहै यथा यह एक प्रसिद्धा स्त्रीहै, यह स्त्री बड़ी प्रसिद्धहै॥

३८ बहुतोंमे कोई एक का निर्धारण होतो अन्य पुरुष प्रतिनिधि शब्दोंको द्वित्व भी होताहै यथा जो २ सो २

३९ द्वित्व अर्थात् वीप्सा होनेसे पूर्व्वमे विकल्प करके विभक्तिका लोप होताहै यथा जिन जिन्को (वा) जिन्को इत्यादि।

४० आप शब्दके बहुवचनका अन्य पुरुष की क्रियाके साथ अन्वय होताहै यथा आप देखतेहैं।

४१ अन्य पुरुष के प्रतिनिधि शब्द नामके विशेषण भी होतेहैं। और विशेषण होनेसे "को से केलिये का मे" प्रभृति विभक्तियोंका उन्मे लोपहोजाता है यथा वह मनुष्य। उस पुरुषको। इस स्थानसे। जिसबालककेलिये। तिन लोगोंसे। किनलोगोंकी। किसीवस्तुमे। जिस किसी मनुष्यको इत्यादि।

४२ बहुवचन प्रतिनिधि शब्द एक व्यक्तिके भी मानके साथ बोधक होतेहैं यथा हमजातेहैं, तुम आओ, वेबैठे, ये अच्छेहैं।

४३ होना क्रिया कभी २ अनुक्त भी रहती है यथा क्या मनुष्य क्यापशु सब जीवों पर दया करना चाहिये (यहां मनुष्यके पीछे हो शब्द अनुक्तहै)

४४ क्रियाविशेषण प्रायशः क्रियाके पूर्व्व अथवा कर्त्ताके समीप आतेहैं यथा मै सोते २ देख रहाथा। उस्को देखकर मैने यह कहा।

४५ वर्त्तमान कालिक क्रिया विशेषण कर्म्मका विशेषण भी होताहै और ऐसे

स्थलमे हुआ हुए हुई का लेाप भी विकल्प करके होताहै यथा उसबा लकको मैने लिखते हुए देखा (वा) उसे मैने लिखते देखा।

४६ कर्तृवाचक ग्रेार कर्मवाचक धातुसंज्ञा नामके विशेषण होतेहैं यथा यह बालक लिखनेवालाहै। यह कागज़लिखा हुआहै।

४७ क्रियाविशेषण ग्रव्ययों केा भी वीप्सा हेा जातीहै ग्रनेकत्व का बेाध होनेसे यथा जहां २ धूम होताहै वहां २ ग्रग्नि होतीहै। जिधर २ तुम जाग्रेागे उधर २ हम जांयगे।

४८ ग्रारम्भक शब्द यद्यपि संयोजकहैं परदृष्टिमे वे प्रस्ताव ग्रथवा वाक्य का ग्रारम्भादि करतेहैं यथा। ग्रथ ब्रह्म जिज्ञासाका ग्रारम्भ। ग्रब विज्ञानशास्त्रका वर्णन होताहै।

४९ संयोजक ग्रेार वियेाजकशब्द कभी समष्टि वाक्यका कभी व्यष्टि वाक्यका कभी वाक्यके एकभागका संयेाग वियेाग करतेहैं यथा विद्या शिक्षामे हितादि विवेचनाकरके ग्रपना ग्रेार द्वितीय का दुःख हास ग्रेार सुख वृद्धिकी जासक्तीहै, परन्तु जेा लेाग मूर्ख हेातेहैं उनमे सद्विवेचना नहिं होती इसलिये वे बहुधा दुःखमे पतित हेातेहैं; ग्रतएव हे भाइयेा तुम सबोंको उचितहै कि विद्याशिक्षा करेा। इस उदाहरणमे "ग्रेार" शब्द वाक्यके एक २ भागेांका संयेाग करताहै, "परन्तु" शब्द व्यष्टि वाक्यों का वियेाग ग्रेार "इसलिये" शब्दसंयेाग करताहै; ग्रेार "ग्रतएव" शब्द समष्टि वाक्य का दूसरे वाक्यसे संयेाग करताहै।

५० जेा संयुज्यमान देा ग्रंशेांमे एक क्रिया हेा तेा पिछले ग्रंशमेहि क्रिया प्रायशः लगतीहै। यथा राम प्रशादने धनमे ग्रेार शिवप्रसादने विद्यासे बड़ाई पाई। (प्रायशः इसनिमित्त कहा कि ऐसा वाक्य भी होताहै) राम प्रशादने धनसे बड़ाई पाई ग्रेार शिवप्रसादने विद्यासे।

५१ इसीप्रकार वियुज्यमान देा ग्रंशेांमे एक क्रिया हेानेसे प्रायशः पूर्व ग्रंशमे क्रिया लगतीहै यथा भारतवर्ष वस्तुतः हिन्दुग्रेांका देशहै नमुसलमानेांका।

५२ अपेक्षा जनक शब्द सदा जोड़े होतेहैं उनमेसे प्रत्येक, अपेक्षा कारक और अपेक्षा कृत वाक्यादि के आदिमे लगताहै। यथा, जब राम आवेगा तबमैं जाऊंगा।

५३ जिस वाक्यमे अनिश्चयात्मक भविष्यत्काल हो और वह प्रश्न न-हो तो उसमे अपेक्षाजनक जो तो शब्द प्रायशः लगतेहैं यथा जो वह जावे तो मैं भी जाऊं, इस प्रकार वाक्यको कोई २ वैयाकरण हेतु हेतु मद्भाव भी कहतेहैं।

५४ अपेक्षा कारक और अपेक्षा कृत अंशोंकी यद्यपि एक क्रिया हो तो दोनोंके साथहि क्रिया लगतीहै यथा न रामगया न लक्ष्मण।

५५ जो कई वाक्य, अथवा वाक्यांश "और" शब्दसे संयुक्तहों अथवा "अथवा" वा "वा" शब्दसे वियुक्तहों तो "और" "अथवा" "वा" शब्द शेष वाक्य वा वाक्यांश के आदिमेहि प्रायशः लगतेहैं यथा राम लक्ष्मण, और सीता चले जातेथे। मै, तुम, अथवा वह जावे। यह धनुष् रामका कृष्णका वा अर्जुन का होगा।

एक कारक के अनेक पद (जो प्रतिनिधि नहो) "और" से संयुक्त वा "अथवा" "वा" से वियुक्त हो तो कारक विकल्प करके शेष पद मे लगताहै यथा राम और लक्ष्मण का धनुष् (वा) रामका और लक्ष्मण का धनुष। राम वा लक्ष्मण का धनुष् (अथवा) रामका वा लक्ष्मण का धनुष्।

लिङ्गानुशासन

१ पुरुष वाचक शब्द पुंलिङ्ग होतेहैं और स्त्रीवाचक स्त्रीलिङ्ग, परन्तु जो शब्द ऐसे वस्तु वा भावोंके नामहैं जो न पुरुषहैं न स्त्री उनका लिङ्ग व्यवहार वा कोशसेहि विदित होताहै, तथापि निम्न लिखित नियमोंसे इनका कुछ परिज्ञान होसकताहै।

२ प्राय सारे अकारान्त वा व्यञ्जनान्त शब्द पुँल्लिङ्ग हैं; पर जो थोड़ेसे स्त्रीलिङ्ग हैं उन्की तालिका पीछे दीजावेगी

३ प्राय सारे तकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं

४ शकारान्त फ़ारसी शब्द प्राय सारे स्त्रीलिङ्ग हैं

५ आकारान्त हिन्दी शब्द ———— पुँल्लिङ्ग हैं

६ परन्तु आप् प्रत्ययान्त और भाववाचक ता प्रत्ययान्त संस्कृत शब्द } स्त्रीलिङ्ग हैं

७ इकारान्त शब्द सारे संस्कृत हैं और उन्के लिङ्ग भाषामे संस्कृत के लिङ्गानुसार ही होते हैं; पर नपुंसक लिङ्ग इकारान्त संस्कृत शब्द भाषामे प्राय स्त्रीलिङ्ग बोले जाते हैं

८ तिप्रत्ययान्त संस्कृत शब्द सारे स्त्रीलिङ्ग हैं

९ ईकारान्त हिन्दी वा विदेशी शब्द और संस्कृत के ईप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं

१० संस्कृत के इन् प्रत्ययान्त शब्द जिन्के रूप ईकारान्त होते हैं (यथा- गुणी, धनी, मानी) वे पुँल्लिङ्ग हैं

११ उकारान्त शब्द संस्कृत होते हैं और उन्के लिङ्ग संस्कृतके लिङ्गानुसार होते हैं; परन्तु नपुंसक लिङ्ग उकारान्त संस्कृत शब्द भाषामे प्राय पुँल्लिङ्ग बोले जाते हैं

१२ ऊकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं

१३ ऋकारान्त शब्द केवल संस्कृतमे होते हैं, भाषामे उन शब्दोंका आकारान्त रूपादि रहजाते हैं और वे पुं वाच्य होने से पुँल्लिङ्ग और स्त्री- वाच्य होनेसे स्त्रीलिङ्ग होते हैं

१४ ऐसे शब्द जिन्के अन्तमे ए ऐ ओ औ हो प्राय नहिं हैं और जो थोड़े से हैं उन्को पुँल्लिङ्ग गिनना चाहिये ।

इति तृतीयभागः ॥

चतुर्थभाग

छन्द प्रकरण

छन्द प्रकरण दो भागोंमे विभक्तहै; वर्ण छन्द और मात्राछन्द; वर्ण छन्दोंमे वर्णोंका नियम होताहै और मात्राछन्दोंमे मात्राओंका। इन दोनोंमेसे प्रत्येकके गण और पादक्रम नामक और दो विभागहैं। गण क्रममे छन्दान्तर्गत वर्णोंके लघु अथवा गुरुहोनेका नियम होताहै; और पादक्रममे पादके वर्ण अथवा मात्राकी संख्यामात्रका विशेष करके नियम होताहै। छन्दोंमे प्रायशः चारपाद होतेहैं, पर कोई कोई छन्दमे छ्य पाद अथवा आठपादभी होतेहैं। पादके बीचजहां कहीं ठहरनाहो उसे यति कहतेहैं। दो पादका दल होताहै। वर्ण छन्दों का गणक्रम तीन प्रकारकाहै सम, अर्द्धसम, और विषमासम इन छ्न्दोंके सबपाद समान होतेहैं; अर्द्धसम उस प्रकारके छन्दको कहतेहैं जिसका प्रथम पाद तीसरेकीन्याई हो और दूसरा चौथेकीन्याई, पर पहिला दूसरे चौथेसे न मिलताहो और दूसरा पहिले तीसरेसे नमिलताहो। विषम उसको कहतेहैं जिसका प्रत्येक पाद दूसरेसे विभिन्नहो॥ वर्ण दो प्रकारके होतेहैं गुरु और लघु। जो वर्ण दीर्घहो अथवा जिसमे अनुस्वार वा विसर्गहो वा जिसके परे संयुक्त वर्णहो उसे गुरु कहतेहैं, जो ऐसा न हो वह लघुहै। गुरुकी दो मात्रा गिनी जातीहैं, लघुकी एक[1]। लघु वर्ण उच्चारण भेदसे कभी २ गुरुभी गिनाजाताहै यथा पादके अन्तमे; और इसी प्रकार गुरु वर्ण कभी २ लघु गिनाजाताहै। और छन्दानुरोधसे उच्चारण के अनुसार स्वर रहित वर्ण कभी २ सस्वर भी उक्त होताहै। गद्य रचना की न्याई शब्दोंके अग्रपश्चात् का क्रम छन्दोंमे प्रायशः नहि रहता। जिस छन्दके पूर्व्वार्द्धके अन्त्य[2] दो वर्ण वहि हों जो अप-

(१) गुरु वर्णका चिह्न यह ऽ है और लघुका यह। (२) अन्त्यदोवर्णोंमेपहिलेवर्णका स्वरमात्र ग्रहीतहै॥

सर्बके अन्त दो वर्ण हैं, उसे मित्राक्षर छन्द कहतेहैं। जो छन्द ऐसा नहो वह अमित्राक्षर छन्दहै। संस्कृतमे अमित्राक्षर छन्दहिबहुतहैं, पर भाषामे मित्राक्षर छन्दका आदरहै।

वर्णछन्द

गणक्रम

तीन २ वर्णोंका एक २ गण होताहै। गण आठ प्रकारके हैं यथा

१	आदिलघु	यगण ISS	५ आदिगुरु	भगण SII
२	मध्यलघु	रगण SIS	६ मध्यगुरु	जगण ISI
३	अन्तलघु	तगण SSI	७ अन्तगुरु	सगण IIS
४	सर्ब्बलघु	नगण III	८ सर्ब्बगुरु	मगण SSS

छन्दशास्त्रमे लघुकी ल संज्ञाहै और गुरुकी ग

समवृत्त

संस्कृतमे एक अक्षरसे लेकर २६ अक्षरवाले पादोंके छन्दों तक की संज्ञा प्रसिद्धहैं; इनसे बड़े जो छन्द होतेहैं उन्हें दण्डक कहतेहैं। प्रत्येकके गणभेदकरके फेर कई रूपहैं और उन्के भिन्न २ नामहैं। जो जो प्रसिद्धनामहैं वे लक्षणोंके साथ नीचे दिखलाए जातेहैं ॥

पादकेअक्षरोंकीसंख्या	संज्ञा	छन्दकानाम	सांकेतिकचिह्न	लक्षण
१	उक्ता	श्री	S	ग
२	अत्युक्ता	स्त्री	SS	गग
३	मध्या	नारी	SSS	म
		मृगी	SIS	र
४	प्रतिष्ठा	कन्या	SSSS	मग
		सती	IIIS	नग
५	सुप्रतिष्ठा	पंक्ति	SIISS	भगग
		प्रिया	IISIS	सलग

६ गायत्री	तनुमध्या	SSIISS	तय
	शशिवदना	IIII SS	नय
	वसुमती	SSI IIS	तस
	विद्युल्लेखा	SSSSSS	मम
	सोमराजी	ISS ISS	यय
७ उष्णिक	मदलेखा	SSSIISS	मसग
	कुमारललिता	ISI IISS	जसग
	हंसमाला	IIS SISS	सरग
	मधुमती	III IIIS	ननग
	समानक	SISISIS	रजग
	सीरख	SSS SSSS	ममग
	सवास	III IISI	नसल
८ अनुष्टुप	चित्रपदा	SIISIISS	भभगग
	विद्युन्माला	SSSSSSSS	ममगग
	माणवक	S IISS IIS	भतलग
	हंसरुत	SSS III SS	मनगग
	समानिका	SISISISI	रजगल
	प्रमाणिका	ISISISIS	जरलग
	वितान	ISISSISS	जतगग
	नाराचक	SSISISIS	तरलग
९ बृहती	हलमुखी	SIS IIIIIS	रनस
	भुजगशिशु	III IIISSS	ननम
	मणिमध्य	S IISSSIIS	भमस
	भुजंगसंगता	IISISISIS	सजर
	सारंगिक	IIIISS IIS	नयस
	तोमर	IIS ISI ISI	सजज

१० पंक्ति	शुद्धविराट्	SSSIISISIS	मसजग	
	पणव	SSSIIIISIS	मनजग	
	मयूरसारिणी	SISISISISS	रजरग	
	रुक्मवती	SIISSSIISS	भमसग	
	मत्ता	SSSSIIIISS	मभसग	
	मनोरमा	IIISISISIS	नरजग	
	उपस्थिता	SSIISIISS	तजजग	
	त्वरितगति	IIIISIIIIS	नजनग	
	संयुता	IISISIISIS	सजजग	
	सारवती	SIISIISIIS	भभभग	
११ त्रिष्टुप्	इन्द्रवज्रा(१)	SSISSIISISS	ततजगग	
	उपेन्द्रवज्रा(१)	ISISSIISISS	जतजगग	
	समुखी	IIIISIISIIS	नजजलग	
	दोधक	SIISIISIISS	भभभगग	
	शालिनी	SSSS,SISS,ISS,	मततगग	(,) यहविश्रामका चिह्नहै)
	वातोर्मी	SSSS,IISSISS,	मभतगग	
	भ्रमरविलसित	SSSSIIIIIIS	मभनलग	
	रथोद्धता	SISIIISISIS	रनरलग	
	स्वागता	SISIIISIISS	रनभगग	
	वृत्ता	III III IISSS	ननसगग	
	भद्रिका	III IIISISIS	ननरलग	
	श्येनिका	SISISISISIS	रजरलग	
	मौक्तिकमाला	SIISS,IIIISS,	भतनगग	(कोई२श्लोकानुकूल भीकहतेहैं।

(१) इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा मिलकर १४ प्रकारके और छन्द होतेहैं जिन्को उपजाति कहतेहैं यथा पहिले पादमें उपेन्द्रवज्रा और अवशिष्ट ३ पादमे इन्द्रवज्रा हो तो उसेकीर्त्ति कहतेहैं। इसी प्रकार इंउ इंइं का नाम वाणी। उउ इंइं माला। इंइंउइं शाला। उइं उइं हंसी। उउ उइं माया। इंउउइं जाया। इंइंइंउ बाला। उइंइंउ आर्द्रा। इंउ इंउ भद्रा। उउइंउ प्रेमा। इंइंउउ रामा। उइंउउ ऋद्धि १३ इंउउइं बुद्धि १४

(११ त्रिष्टुप्)	उपस्थित	ISIIISSSISS	जसतगग
	श्री	SIISS,IIIISS,	भतनगग
	मोटनक	SSISISSISIS	तर रलग
	ललित	IIISISSISIS	नर रलग
	हरिरूपक	SISIIISIIIS	रन भलग
(१२ जगती	चन्द्रवर्त्म	SISI,IISIIIIS,	रन भस
	वंशस्थ	ISISSIISISIS	जतजर
	इन्द्रवंशा	SSISSIISISIS	ततजर
	तोटक	IISIISIISIIS	सससस
	द्रुतविलम्बित	IIISIISIISIS	नभभर
	पुट	IIIIIISSSISS,	ननमय
	प्रमुदितवदना	III IIISISSIS	ननरर (मन्दाकिनी भी कोई इसको कहते हैं)
	कुसुमविचित्रा	IIIISSIII ISS	नयनय
	जलोद्धतगति	ISIIIS,ISIIIS,	जसजस
	भुजंगप्रयात	ISSISSISSISS	यययय
	स्रग्विणी	SISSISSISSIS	रररर
	प्रियंवदा	IIISIIISISIS	नभजर
	मणिमाला	SSIISS,SSIISS	तयतय
	ललिता	SSISIIISISIS	तभजर
	प्रमिताक्षरा	IISISIIISIIS	सजसस
	उज्ज्वला	IIIIIISIISIS	ननभर
	वैश्वदेवी	SSSSS,SISSISS,	ममयय
	जलधरमाला	SSSS,IIIISSSS,	मभसम
	नवमालिका	IIIIS,ISII ISS,	नजभय
	प्रभा	IIIIIIS,ISSIS,	ननरर
	मालती	IIIISII,SISIS,	नजजर

(१२ जगती)	गौरी	III IIISIS'SIS	ननरर
	तामरस	III ISIISIISS	नजजय
	ललना	SIISS,SIISIIS,	भमसस
	ललित	III IIISSSSIS	ननमर
	द्रुतपद	IIISIIISIISS	नभजय
	मोतिआदाम	ISIISIISIISI	जजजज
१३ अतिजगती	मत्तमयूर	SSSSSIISSIISS,	मतयसग
	चंचरीकावली	ISSSSSSISSISS	यमररग
	रुचिरा	ISIS,IIIISISIS,	जभसजग
	क्षमा	IIIIIIS,SISSIS,	ननजतग
	मञ्जुभाषिणी	IISISIIISISIS,	सजसजग
	चन्द्रिका	IIII,IISSISISS	ननतरग
	प्रहर्षिणी	SSS,IIIISISISS	मनजरग
	कुराडी	IIIIIIISIISS	ननससग
	सिंहनाद	IISISIIISIISS	सजससग
	मृगेन्द्रमुख	IIIISIISISISS	नजजरग
	विरलगिरा	IISIISSII IISS	ससभसग
	भ्रमरी	ISIIISIISIIIS	जससनग
	तारक	IISIISIISIISS	ससससग
१४ शार्वरी	असंबाधा	SSSSS,IIIIISSS,	मतनसगग
	अपराजिता	IIIIIIS,ISIISIS,	ननरसलग
	प्रहरणकलिका	III IIIS,IIIIIS,	ननभनलग
	वसन्ततिलका (वा) सिंहोद्धता उद्धर्षिणी मधुमाधवी शोभावती इन्दुवदना	SSISIIISIISISS	तभजजगग
		SIIISIIISIISS	भजसनगग

(४ शार्करी)	अलोला	SSSIIS SSS SIISS	मसमभगन
	वासन्ती	SSS SSI IIISSSSS	मतनमगग
	नान्दीमुखी	III IIISSISSISS	ननतनगग
	चक्रछन्द	S IIIIIIIIIII S	भननननलग
१५ अतिशर्करी	शशिकला	III III,IIIII IS,	ननननस
	माला	IIIIII, IIIIIIIS,	ननननस
	मणिगुणनिकर	IIIIII,IIIIIS,	ननननस
	मालिनी	IIIIISS,SISSISS,	ननमयय
	प्रभद्रिक	IIISIS,IIISISIS,	नजभजर
	एला	IISIS,IIIIIIISS,	सजनय
	चन्द्रलेखा	SSSSISS, SSISSISS	मरमयय
	लीलाखेल	SSSSSSSSSSSSSSS	मममममम
	विपिनतिलक	IIIIIS IIISISSIS	नसनरर
	तूणक	ISISISISISISISIS	रजरजर
	चित्रा	SSSSSSSSSISSISS	मममयय
	कलहंस	IISISIISISIISIS	सजजभर
	निशिपालक	SIISIIISIIISIS	भजसनर
१६ अष्टि	ऋषभगज विलसित	SIISISI,II III,IIIS	भरनननग
	वाणिनी	IIIISI,SIIISISISS	नजभजरग
	पञ्चचामर	ISISISISISISISIS	जरजरजग
	श्वगति	SIISIISIISIISIIS	भभभभभग
	चञ्चला	SISISISISISISISI	रजरजरल
	चकिता	SII IIISSSSSIIIIS	भनमतनग
	मदनललित	SSSSIIIIISSSIIIS	मभनमनग
	प्रवरललित	ISSSSSIII IISSISS	यमनसरग
	अचलधृति	III III III III IIII	नननननल

(१६ अष्टी)	मरुद्रुत	।।। ।ऽ।ऽ।। ।ऽ।ऽऽ।ऽ	नजभजतग
	खरसार	ऽ।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।	भतयजरल
१७ अत्यष्टी	शिखरिणी	।ऽऽऽऽऽ,।।।।।ऽऽ।।ऽ,	यमनसभलग
	पृथिवी	।ऽ।।।ऽ।ऽ,।।।ऽ।ऽऽ।ऽ,	जसजसयलग
	वंशपत्रपतित	ऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽ,।।।।।ऽ	भरनभनलग
	हरिणी	।।।।।ऽ,ऽऽऽऽ,।ऽ।।ऽ।ऽ	नसमरसलग
	मन्दाक्रान्ता	ऽऽऽऽ,।।।।।ऽ,ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ	मभनततगग
	नर्कुटकं	।।।।ऽ।ऽ,।।।ऽ।।ऽ।।ऽ, }	
	कोकिलकं	।।।।ऽ।ऽ,।।।ऽ।।,ऽ।।ऽ, }	नजभजजलग
	हारिणी	ऽऽऽऽ।।।,।ऽऽऽ,ऽऽ।ऽ,	मभनमयलग
	भाराक्रान्ता	ऽऽऽऽ,।।।।।ऽ,।ऽ।।ऽ।ऽ	मभनरसलग
१८ धृति	कुसुमितलता	ऽऽऽऽऽ,।।।।।ऽ,ऽ।ऽऽ।ऽऽ	मतनययय
	हरिणप्लुत	ऽऽऽ।।ऽ।ऽ,।।ऽ।ऽ,।।ऽ।ऽ	मसजजभर
	महामालिका	।।।।।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ	ननररर र
	अश्वगति	ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ	भभभभभस
	नन्दन	।।। ।ऽ।ऽ।।।ऽ,।ऽ।ऽऽ।ऽ	नजभजरर
	नाराच	।।। ।।।ऽ,।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ	ननररर र
	चित्रलेखा	ऽऽऽऽ,।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ	मभनययय
	शार्दूलललित	ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽ,ऽऽ।।।ऽ	मसजसतस
	चर्चरी	ऽ।ऽ।।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ	रससजजर
	क्रीड़ा	।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ	यययययय
१९ अतिधृति	पञ्चचामर	।।।।।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ	ननरजरजग
	मेघविस्फूर्जिता	।ऽऽऽऽऽ,।।।।।ऽ,ऽ।ऽऽ।ऽऽ,	यमनसररग
	शार्दूलविक्रीड़ित	ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽ,ऽऽ।ऽऽ।ऽ	मसजसततग
	छाया	।ऽऽऽऽऽ,।।।।।ऽ,[illegible]	यमनसततग
	सुरसा	ऽऽऽऽऽऽ,।।।।।।ऽ[illegible]	[illegible]

(१९ अतिधृति)	फुल्लदाम	SSSSS,IIIIIS,SISSIISS	मतनसररग
	स्वयम्भू	IISSSIISSSIISSSSSSS	सतयभममग
२० कृति	सुवदना	SSSSISS,IIIIIIS,SSIIIS	मरभनयभलग
	वृत्त	SISISISISISISISISISI	रजरजरजगल
	गीतिका	IISISIISISIISISIISIS	सजजभरसलग
	शोभा	ISSSSSIIIIIISSISSISS	यमननतगग
२१ प्रकृति	स्रग्धरा	SSSSISS,IIIIIIS,SISSISS,	मरभनययय
	सरसी	IIIISISIIISIISIISIISIS	नजभजजजर
२२ आकृति	मद्रक	SIISISIIIS,ISIIISISIIIS,	भरनरनरनग
	हंसी	SSSSSSSS,IIIIIIIIIIIIS,	ममतनननसग
	मदिरा	SIISIISIISIISIISIISIIS	भभभभभभभग
२३ विकृति	अश्वललित (वा) अद्रितनया	IIIISISIIIS,ISIIISISIIIS,	नजभजभजभलग
	मत्ताक्रीडा	SSSSSSSS,IIIIIIIIIIIIIIIS,	ममतनननलग
	इन्दव (वा) नवीन छंद	SIISIISIISIISIISIISIISS	भभभभभभभगग
२४ संकृति	तन्वी	SIISS,IIIIIS,SIISIIIIIISS,	भतनसभभनय
	किरीट	SIISIISIISIISIISIISIISII	भभभभभभभभ
	दुर्मिला	IISIISIISIISIISIISIISIIS	सससससससस
	झूलना	IISIISIISIISIISIISIISISS	सससससससय
२५ अतिकृति	क्रौंचपदा	SIISS,SIISS,IIIIIIIII,IIIIIS	भमसभननननग
	अमला	IISIISIISIISIISIISIISIISS	ससससससससग
२६ उत्कृति	भुजंगविजृम्भित	SSSSSSSS,IIIIIIIIIIII,SISIISIS	ममतनननरसलग
	अपवाह	SSS IIIIII,IIIIII,IIIIII,IISSS	मनननननसगग
२७	चण्डवृष्टिप्रपात	IIIIIISISSISSISSISSISSISSIS	ननररररररर
३० दण्डक	अर्ण	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSIS	ननरररररररर
३३	अर्णव	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSIS	ननररररररररर
३६	व्याल	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS	ननरररररररररर
			१२

३९	दण्डक	जीमूत	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS ननरररररररररररर
४२		लीलाकर	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS ननरररररररररररर
४५		उद्दाम	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS ननररररररररररररर
४८		शंख	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS ननरररररररररररररर
५१		आराम	IIIIIISISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSISSIS ननररररररररररररररर

२७ प्रभृति प्रचितक IIIIIIISSISSISSISSISSISSISS ननयययययययय

२७ कुसुमस्तबक IISIISIISIISIISIISIISIISIIS ससससससससस

२७ मत्तमातङ्गलीलाकर SISSISSISSISSISSISSISSISSIS ररररररररर

२८ अशोकपुष्पमञ्जरी SISISISISISISISISISISISISISI रजरजरजरजरल

२८ अनङ्गशेखर ISISISISISISISISISISISISISIS जरजरजरजरजग

इत्यादि

अर्द्धसमवृत्त

वेगवती	(१और३पाद) IISIISIISS	ससस ग	९ अक्षर	
	(२और४पाद) SIISIISIISS	भभभगग	११	२१
भद्रविराट्	(१—३) SSIISISISS	तजरग	१०	
	(२—४) SSSIISISISS	मसजगग	११	२१
केतुमती	(१—३) IISISIIISS	सजसग	१०	
	(२—४) SIISISIIISS	भरनगग	११	२१
सुन्दरी	(१—३) IISIISISIS	ससजग	१०	
	(२—४) IISSIISISIS	सभरलग	११	२१
उपचित्र	(१—३) IISIISIISIS	सससलग	११	
	(२—४) SIISIISIISS	भभभगग	११	२२
आख्यानकी	(१—३) SSISSIISSISS	ततजगग	११	
	(२—४) ISISSIISISS	जतजगग	११	२२
विपरीताख्यानकी	(१—३) ISISSIISISS	जतजगग	११	
	(२—४) SSISSIISISS	ततजगग	११	२२

द्रुतमध्या	(१—३)	SIISII SIISS	भभभगग	११	
	(२—४)	IIIISIISIISS	नजजय	१२	२३
हरिणप्लुता	(१—३)	IIS IIS IIS IS	ससस लग	११	
	(२—४)	IIISIISIISIS	नभभर	१२	२३
(१) अपरवक्त्र	(१—३)	III IIISISIS	ननरलग	११	
	(२—४)	IIIISIISISIS	नजजर	१२	२३
वसन्तमालिका	(१—३)	IISIISISISS	ससजगग	११	
	(२—४)	IISSIISISISS	सभरय	१२	२३
यवमती	(१—३)	SISISISISISS	रजरय	१२	
	(२—४)	ISISISISISISS	जरजरग	१२	२४
पुष्पिताग्रा	(१—३)	IIIIIISISISS	ननरय	१२	
	(२—४)	IIIISIISISISS	नजजरग	१३	२५

(बा)
औपच्छन्दसिक

विषमवृत्त

पदचतुरूर्द्ध, उस छन्दको कहतेहैं जिस्के प्रथम पादमे ८ वर्णहों, द्वितीयमे १२, तृतीयमे १६ और चतुर्थमे २०। इस छन्दके विशेष आगे लिखे जातेहैं।

आपीड़। पद चतुरूर्द्ध छन्दके प्रतिपादके अन्त्य दो वर्ण गुरु होनेसे होताहै; (अवशिष्टवर्ण लघु होतेहैं) यथा

(१) IIIIIISS (२) IIIIIIIIIISS (३) IIIIIIIIIIIIIISS (४) IIIIIIIIIIIIIIIIIISS

कलिका। यह आपीड़काहि एक भेदहै और उसीकीन्याई होताहै, केवल इतना विशेषहै कि इस्के प्रथम पादमे १२ अक्षर होतेहैं, दूसरेमे ८, तीसरेमे १६ और चौथेमे २०। सूत्रकार ने इस्का नाम मञ्जरी लिखाहै।

लवली। यह आपीड़का दूसरा भेदहै; इस्के प्रथम पादमे १० अ—

(१) इसमें वैतालीयके लक्षण मिलतेहैं इसलिये कोई इसको वैतालीयभी कहतेहैं।

होतेहैं, दूसरेमे १६ तीसरेमे ८ और चौथेमे २०।

अमृतधारा। यह आपीड़का तीसरा भेदहै; इसके प्रथम पादमे १२ अक्षर होतेहैं, दूसरेमे १६, तीसरेमे २० और चौथेमे ८

उद्गता।—	१पाद	॥ऽ।ऽ।॥ऽ।	सजसल
	२पाद	॥॥ऽ।ऽ।ऽ,	नसजग
	३पाद	ऽ॥॥।ऽ।।ऽ	भनजलग
	४पाद	॥ऽ।ऽ।॥ऽ।ऽ।ऽ,	सजसजग
सौरभक—	१ पाद २ पाद	उद्गताकीन्याई,	
	३ पाद	ऽ।ऽ ॥। ऽ॥ऽ	रनभग
	४ पाद	उद्गताकीन्याइ,	
ललित—	१ पाद २ पाद	उद्गतावत्	
	३ पाद	॥। ॥। ॥ऽ ॥ऽ	ननसस
	४ पाद	उद्गतावत्,	
उपस्थितप्रचुरित	१ पाद	ऽऽऽ॥ऽ।ऽ।ऽ॥ऽऽ,	मसजभगग
	२ पाद	॥ऽ ॥। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ	सनजरग
	३ पाद	॥। ॥। ॥ऽ	ननस
	४ पाद	॥। ॥।॥।।ऽ।।ऽऽ,	नननजय
वर्द्धमान	१ पाद २ पाद	उपस्थितप्रचुरितवत्	
	३ पाद	॥। ॥। ॥ऽ ॥। ॥। ॥ऽ	ननसननस
	४ पाद	उपस्थितप्रचुरितवत्	
शुद्धविराड्रुषभ	१ पाद २ पाद	उपस्थितप्रचुरितवत्	

(सुह्दविराड्वृषभ) ३ पाद ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ तजर
४ पाद उपस्थितप्रचुरितवत्

दृष्टान्त

कुछ छन्दों का जो उक्त रीत्यनुसार बने हैं ।

समवृत्त

चन्द्रवर्त्म छन्द ।

एक ब्रह्म हय कारण सब का वन्दनीय यश पालक जग का
रूप रङ्ग कुछ है नहि उसका साक्षिरूप हय जो घट घट का

तोटक छन्द

जिनके यश से सब पूरण हैं यह विश्व चराचर व्याप्त सभी
जिनकी महिमा सब घोषत हैं जल पावक वायु ख चन्द्र रवि
जिनके बल ज्ञान स्वभाविक हैं सब का वहि एक नियामक भी
तिस ईश अधीश अरूप विषे अस प्रीति करो न टले जो कभी

इन्दव छन्द

आ जग में सब भूल रह्यो कर तव्य स्व जीवन नाहि विचार्यो
मूल हि त्याग अमूल गह्यो परमार्थ सनातन सत्य बिसार्यो
स्वार्थ अपार्थ सदा मन ध्यावत व्याकुल चित्त भयो भरमायो
शान्ति मिले नहि भ्रान्ति गये दिन ऊषर भूमि कहां जल पायो
मान भरे मन में यश नाम निमित्तक कार्य सभी जग के हैं
इन्द्रिय सेवन लक्ष्य हि तीय तथा यहि हेतु अनेक फंसे हैं
काल अकाल ग्रसे तब सोच विचार चले नहि जात सभी हैं
कारण मोह अनिग्रह इन्द्रिय जो मन चञ्चल होत सदा हैं

अर्द्धसमवृत्त

हरिणप्लुताछन्द

सबकोवरहिहैंखलुरंतिता सकलदुःखविमोचनशंकरं
शरणागतवत्सलहेप्रभू पतितपावनशङ्करउद्धर

विषमवृत्त

उद्गताछन्द

करुणानिधानजगदीश भवजलधिनावहैंतुहिं
कौनतुऋविनकरैकरुणा सबकीसहायप्रतिपालहैंतुहिं

पादक्रम

अनुष्टुभ् (८ अक्षरीपादकेछन्दमे) वक्त्र। उस्कोकहतेहैं जिस्के प्रथम अक्षरके पीछे नगणसगणनहो, मगणादिहो, और चतुर्थ अक्षरसे परे यगण और एक और कोई वर्ण हो यथा

नामतेरादयाधार तूहिहैसबकास्वामी
आपशरणकर्तार करबत्ताअन्तर्यामी

पथ्यावक्त्रवा इस्के (१-३) पाद वक्त्रकीन्याई होतेहैं, पर (२-४)
विपुलावा पादमे चौथे अक्षरसे परे जगण होताहै; आठवां
श्लोक वर्ण केसाहिहो ।

विपरीतपथ्यावक्त्र। यह पथ्या वक्त्रसे विपरीतहै अर्थात् इस्के १-३ पाद पथ्या वक्त्रके २-४ पादकीन्याइ होतेहैं, और २-४ पाद वक्त्रकी न्याई

चपलावक्त्र। यह वक्त्रकी न्याई होताहै केवल इस्के १-३ पादमे यगण के स्थानमे नगण होताहै

भविपुला। यह वक्त्रकीन्याइ होतीहै पर इस्के चारों चरणमे यगण के स्थानमे भगण होताहै

रविपुला। तथा—— तथा—— रगण होताहै

(१) कोइ१यकि मतमे विपुलाके चारोंपाद पथ्यावक्त्रके २-४पादकीन्याई होतेहैं

नविपुला। तथा तथा न गण होताहै
तविपुला। तथा तथा त गण होताहै

दोचरणोंकेमिश्रादरछन्द

पयार। इस्के प्रत्येक चरणमे १४ वर्ण होतेहैं, और आठवें और चौदवें वर्णके पीछे यति होतीहै; पयारमे दो दो तीन तीन वा चार चार वर्णोंके शब्द निम्न लिखित रीतिसे शृंखला बद्ध होकर रक्खे जातेहैं यथा

१ ३ २ २ २ २ । २ २ २ २ ३ ३ ॥
४ ४ २ ४ । ४ ४ ४ २ ॥
२ २ २ २ २ २ २ । ३ ३ २ ३ ३ ॥

दृष्टान्त

तवबिन नहिकोई रक्षक हमारा
दीनका दयाल एक तूहि है सहारा
मेरेमन तूहि ईश दूसरा न कोई
तकी सेल गन लगी होनी हो सो होई

यमकादिमे इसे पयार दश प्रकारके हैं यथा

आदियमक (यथा)—उसे कहते हैं जिस्के पहिले चरणके आदिमे जो दो वर्ण हों दूसरे चरणके आदिमे भी वेहि दो वर्ण हों; यथा { तूहि जगकर्त्ता हर्त्ता सबकाहै स्वामी
तूहि पालक सबका तूहि अन्तर्यामी }

मध्ययमक उसे कहते हैं जिस्के प्रत्येक चरणमे तीसरा चौथा वर्ण जो हो पांचवां छठावर्ण भी वहि हो

अन्त्ययमक उसे कहते हैं जिस्के पहिले चरणके अन्त्य दो वर्ण जो हों दूसरे चरणके अन्त्य दो वर्ण भी वेहि हों

आदिमध्ययमक उसे कहते हैं जिस्के प्रत्येक चरणके आदिमे जो दो वर्ण हों बीचमे भी वेहि दोवर्ण एक वा दो वार शब्दोंके आदिमे आवें

आद्यन्तयमक– उसे कहतेहैं जिस्के चरणके आदिमे जो दो वर्णहों अन्तमे भी वेहि दो वर्ण हों।

मध्यान्तयमक– उसे कहतेहैं जिस्के एक चरण के द्वितीय तृतीय और अन्त्य दो वर्ण जो हों, दूसरे चरणके द्वितीय तृतीय और अन्त्य दो वर्ण भी वेहि हों।

अन्त्यादियमक– उसे कहतेहैं जिस्के पहिले चरणके अन्त्य दो वर्ण जोहों दूसरे चरणके आदि दो वर्ण भी वेहि हों

द्व्यर्थशब्दान्तक– उसे कहतेहैं जिस्के पहिले चरणके अन्तमे जो शब्द हो दूसरे चरण के अन्तमे भी वहि शब्द हो परन्तु अर्थ भिन्न २ हो

चित्रपदार— उसे कहतेहैं जिस्के प्रत्येक चरणका एक वा अधिक वर्ण और चरणों के वर्णसे ऊपर वा नीचे वा आड़े वा तिरछे मिलाया जावे तो उससे कोई प्रसिद्ध शब्द निकलताहो। ये वहुत प्रकारके हो सकतेहैं इनमेसे एकका उदाहरण यहहै। यथा

नहि कोई सङ्गी यहां रात अंधियारी
बीबी भाई वन्धु मित्र यह दुंजी भारी
न व नगर आत्मा का लाखें जोखें जहां
चंद्र की चंद्रिका विना होन रख तहां
द विण वा द्रव्य देजो रक्खो यत्न सेसो

उल्लिखित छन्दके प्रत्येक चरणके प्रथम और नवम अक्षरोंको मिलाकर देखने से इस ग्रन्थके विरचक का नाम और स्थान ज्ञातहोगा। और ऊपरसे नीचेतक तिरछे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्च वर्णको मिलाने से भी उस्का नाम निकलेगा।

प्रश्नोत्तरपयार — उसे कहतेहैं जिस्के प्रत्येक चरण मे प्रश्न औ-
र उत्तर हो यथा

कौनहैजगकास्रष्टा ? ब्रह्मअजएक ।
कैसेहैं गुण उसके ? अचिन्त्यअनेक॥
क्याक्याहै सृष्टिउसकी ? जड़ और जीव।
क्याहैउसेआपनाइमे ? करुणाअतीव।

दीर्घपयार। — पयारकी न्याई रचित होताहै; केवल प्रति चरण
के आदिमे वा मध्यमे ह्रस्व एक २ शाद अधिक ल-
गाया जाताहै

दीर्घह्रस्वपयार। उसे कहतेहैं जिस्के प्रथमे चरणमे कोई अष्टा
क्षरी वाक्य दो वार हो और दूसरा चरण पयार की
न्याई चौदे अक्षरोंका हो

ह्रस्वदीर्घपयार। उसे कहतेहैं जिस्के पहिले चरणमे १४ वर्ण
हों और दूसरेमे १६

कांचियमकपयार मे दीर्घ पयार की न्याई सोलह सोलह
वर्णोंके चरण होतेहैं और प्रथम चरण के अन्तमे
जो दो वर्ण होतेहैं दूसरे चरणके आदिमे भी वेही
दो वर्ण होतेहैं

त्रिपदी। इस छन्द का प्रति चरण तीन भागोंमे विभक्त होताहै,
पहिले भाग के अन्त्य दो वर्ण दूसरे भागके अन्त्यदो वर्णों
से मिलतेहै, और चरण के अन्त्य दो वर्ण दूसरे चरण
के अन्त्य दो वर्णोंसे मिलतेहैं अर्थात् मित्राक्षर होतेहैं। त्रिप
दी तीन प्रकारकी होतीहै, दीर्घ त्रिपदी, लघुत्रिपदी, और

भङ्ग-त्रिपदी। भङ्ग-त्रिपदीका त्रिपदी के साथ छाबा प्रभेदहै। इन छन्दोंमे दो दो तीन तीन वा चार चार अक्षरोंको शब्दों का जोड़ा प्रायशः होताहै

दीर्घत्रिपदी। इस्केप्रति चरणमे आठ आठ और दश पर विभक्त २६ वर्ण होतेहैं। यथा

भजनामनिरञ्जन, भवभयविभञ्जन,
दयामयप्रभूहै हमारा।
शरणागतवत्सल, मोचकपापसकल
तापत्रयमिटावनहारा॥

लघुत्रिपदी। इस्के प्रतिचरण छय छय और आठ आठ पर विभक्त २० वर्ण होतेहैं,

लघुभङ्ग-त्रिपदी। इस्के प्रति चरणमे आठ आठ छय छय और आठ पर विभक्त ३६ वर्ण होतेहैं,

दीर्घभङ्ग-त्रिपदी। इस्के पहिले चरणमे दस दस पर विभक्त २० वर्ण होतेहैं और दूसरा चरण इस्का दीर्घ त्रिपदीकी न्याई होताहै

नर्त्तकत्रिपदी। इस्के प्रति चरणमे सात सात और नव पर विभक्त २३ वर्ण होतेहैं, और हर भागके आदिमे तीन अक्षरों का शब्द होताहै

अन्त्ययमकत्रिपदी। दीर्घ त्रिपदीकी न्याई होतीहै, पर तेईसवां चौवीसवां वर्ण वहि होताहै जो पचीसवां छब्बीसवां हो।

चौपदी। (वा) कवित्त। इस्के प्रति चरणमे ३१ वर्ण होतेहैं। प्रत्येक चरण ४ भागोंमे विभक्त होताहै; पहिले तीन भाग आठ आठ वर्णोंके होतेहैं, और तीनोंके अन्त्य दो वर्ण परस्पर मिलादार होतेहैं। यथा

दयाकरोदीननाथ कृपाकाविस्तारो हाथ,
तुम्हीहो हमारे साथ, हमारे और न कोई ।
गहे जो हे जगपाल, तव चरण विशाल,
मिटे है उसका जञ्जाल, होता है मुक्त सोई ॥

मालकोंष । चौपदी की न्याई है परन्तु इसके प्रति चरण में १४ वर्ण होते हैं, और चार चार वर्णों के पहिले तीन विभाग होते हैं यथा

सर्व्वाश्रय तुहि हय दयामय पति
कृपाकर शोकहर शुभकर मति

एकावलीछन्द। ग्यारह अक्षरों के चरण का होता है और इसप्रकार उसके विभाग होते हैं

३ ३ ३ २ ।
अथवा
२ २२ २ ३।

भङ्गावलीछन्द । आठ अक्षरों के चरण का होता है

ललितचतुष्पदी। यहभी चौपदीकी न्याई है पर इसका प्रति चरण छय छय वर्णों मे तीन वार विभक्त होकर २३ वर्णों मे पूर्ण होता है

मालतीलताछन्द । २१ वर्णों के चरण का होता है, बारवें वर्ण पर कुछ यति होती है, पहिले चरण के अन्त मे जो दो वर्ण हों सब चरणों के अन्त मे वे हि दो वर्ण रहेंगे

स्वरतरङ्गिणीछन्द । पहिले आठ अक्षरों का वाक्य दो वार आता है, फेर आठ आठ वर्णों के दो मित्रादर भाग होते हैं, फेर आठ और छय के दो भाग, जिन्के पिछले आठ अक्षर लेकर फेर एक भाग, फेर आदि वाक्य रेग्वार इस रीति

से यह छन्द बनताहै यथा

तूहि मेरा माता पिता, तूहि मेरा माता पिता;

तूहि भ्राता तूहि बन्धु, तूहि है करुणा सिन्धु,।

तुझीसे विनती प्रभू, है अबहमारी, प्रभू है अब हमारी;

तूहिमेरामातापिता, तूहिमेरामातापिता॥

सवैया। इसके प्रति चरणमे २३ वा २४ वर्ण होतेहैं और १२ पर यति होतीहै यथा

दीन दयाल दुखभञ्जन प्रभू रक्खो अब आप शरण तुम्हारी

अधम तारण पाप निवारण तुम बिन कौन सुधले हमारी

इत्यादि

मात्रा छन्द

गणक्रम

मात्राछन्दमे पांचगणहोतेहैं, प्रत्येक गणमे चार कला वा मात्रा होतीहै यथा

	चिन्ह	गण
सर्व्वगुरु	ऽऽ	गग
आदिगुरु	ऽ।।	भ
मध्यगुरु	।ऽ।	ज
अन्तगुरु	।।ऽ	स
सर्व्वलघु	।।।।	नल

आर्य्या। इस छन्दके प्रथमार्द्ध अर्थात् पहिले दलमे ३० मात्रा होतीहैं और दूसरेमे २७। गण भी होतेहैं। दूसरे दलका छठा गण एक लघु वर्णमात्र होताहै। प्रति दलका अन्त्यवर्ण गुरु होताहै। पहिले, तीसरे, पांचवे, और सातवें गणमे जगण न होना चाहिये। पहिले दलके छठे गणमे याती जगण होया चारलघु वर्ण हों। इन-

चार लघुवर्णोंमेंसे पहिले लघुवर्णके पीछे यति होतीहै; सातवां गण यदि "नल" अर्थात् सर्व लघु हो तो छठे गणके अन्तमे भी यति होतीहै। उत्तरार्द्धका पांचवां गण यदि "नल" हो तो चौथे गणके अन्तमे यति होतीहै। यथा

हम सबको उत्पन्न किया जिसने है अधीश वह जगका
भज मनमे रे अह निश उसको है वह पिता सब का

पथ्या। यह आर्य्याकी न्याई होतीहै केवल इतना विशेषहै कि इसके दोनो दलोंमे तीसरे गणके अन्तमे यति होतीहै

विपुला। जो तीसरे गणके अन्तमे यति नहोकर अन्यत्र हो तो उसे विपुला कहतेहैं।

चपला। यह आर्य्याकी न्याई होतीहै पर इतना नियम अधिक है कि दोनो दलोंका दूसरा और चौथा गण जगण होवे और उस जगण के आगे पीछे दोनो ओर गुरु वर्णहो।

मुखचपला। इसका पहिला दल चपला के नियमानुसार होताहै; और दूसरा दल आर्य्याकी न्याई सामान्य होताहै।

जघनचपला। इसका पहिला दल आर्य्याकी न्याई सामान्य होता है; और दूसरा दल चपलाकी न्याई होताहै।

गीति। इसके दोनो दल आर्य्याके प्रथम दल की न्याई होतेहैं।

उपगीति। इसके दोनो दल आर्य्याके द्वितीय दल की न्याई होतेहैं।

उद्गीति। इसका प्रथम दल आर्य्याके द्वितीय दलकी न्याई होताहै; और द्वितीय दल आर्य्याके प्रथम दलकी न्याई।

आर्य्यागीति। इसके दोनो दल आर्य्याके प्रथम दलकी न्याई होतेहैं अन्तमे केवल एक गुरु वर्ण अधिक होताहै; अर्थात् इसके उभय दलमे ३२ मात्राके आठ आठ गण होतेहैं।

पादक्रम

वैतालीय। इस्के पहिले श्रोर तृतीय पादमे ६ कला श्रोर "रलग" होताहै; दूसरे श्रोर चौथे पादमे ८ कला श्रोर "रलग" होताहै, ये आठ कला केवल लघुहि नहीं इनमे कुछ गुरू भी होनी चाहियें। सम कला अर्थात् दूसरी, चौथी, श्रोर छठी, अगली कलाके आश्रित न होनी चाहिये अर्थात् दूसरी तीसरी, चौथी पांचवी, श्रोर छठी सातवीं मिलकर गुरू न होनी चाहिये ॥ यथा

संसार असार है निरा   मत भूल रहो मोह मे यहां
दो दिन का है बिनावना   सोचो हय जाना तुम्हे कहां

श्रोपच्छन्दसिक। इस्के प्रथम श्रोर तृतीय पादमे छव मात्रा श्रोर रगण यगण होताहै; श्रोर दूसरे चौथे पादमे आठ मात्रा श्रोर रगण यगण होताहै।

आपातलिका। इस्के १–३ पादमे ६ मात्रा श्रोर "भगग", श्रोर २–४ पादमे ८ मात्रा श्रोर "भगग" होताहै।

दक्षिणान्तिका। वैतालीय की न्याई होतीहै पर चारों पादोंका प्रथम वर्ण लघु श्रोर द्वितीय वर्ण गुरू होताहै।

उदीच्यवृत्ति। इस्के १–३ पाद दक्षिणान्तिकाकी न्याई होतेहैं श्रोर २–४ पाद वैतालीय की न्याई।

प्राच्यवृत्ति। १–३ पाद वैतालीय की न्याई; श्रोर २–४ पाद भी वैसेहि, पर इस्की चौथी श्रोर पांचवीं कला मिल कर एक गुरू वर्ण होताहै।

प्रवृत्तक। उस्को कहतेहैं जिस्के १–३ पाद उदीच्य वृत्तिकी न्याई हों; श्रोर २–४ पाद प्राच्य वृत्तिकी न्याई।

अपरान्तिका। उस्को कहतेहैं जिस्के चारों पाद प्रथम कके २–४ पादकी न्याई हों।

चारुहासिनी। उस्को कहते हैं जिस्के चारों पाद प्रचलकके १—३ पादकी न्याई हों।

अचलधृति। इस्के प्रत्येक पादमें १६ लघु मात्रा होती हैं(१)

मात्रासमक। इस्के प्रत्येक पादमें १६ मात्रा होती हैं पर यह नियम है कि नवीं मात्रा लघु हो और अन्त्य वर्ण गुरु हो अवशिष्ट वर्ण चाहे कैसेहि हों।

विश्लोक। तथा ———————— पर चार मात्राओं से परे एक जगण अथवा "नल" होना चाहिये।

वानवासिका। आठ मात्रासे परे एक जगण अथवा "नल" होनेसे होता है और वर्ण चाहे कैसे हि हों।

चित्रा। इस्की पांचवीं आठवीं और नवीं मात्रा लघु होनी चाहियें और चाहे कैसीहि हों।

उपचित्रा। इस्की नवीं और दसवीं मात्रा मिलकर एक गुरु वर्ण होना चाहिये। कोईयोंके मतमें इस गुरु वर्ण से परे जो वर्ण हों वे दो लघु और दो गुरु होने चाहियें

पादाकुलक। उस्को कहते हैं जिस्के पादोंमें मात्रा समक, विश्लोक, वानवासिका, चित्रा, उपचित्रा इन सबोंके लक्षण पाए जावें।

शिखा। इस्के पूर्व्वार्द्धमें २८ लघुवर्ण होते हैं और अन्तमें एक गुरु वर्ण होता है और उत्तरार्द्धमें ३० लघुवर्ण और अन्तमें एक गुरु वर्ण होता है

खञ्जा। शिखाका उत्तरार्द्ध इस्का पूर्व्वार्द्ध होता है और उस्का पूर्व्वार्द्ध इस्का उत्तरार्द्ध होता है।

अनङ्गक्रीडा। इस्के पूर्व्वार्द्धमें १६ गुरु वर्ण होते हैं और उत्तरार्द्धमें ३२ लघु वर्ण।

(१) यह अष्टी छन्दमें भी परिगणित हुआ है।

अतिरुचिर। इस्के प्रत्येक दलमे २७ लघु वर्ण और अन्तमे एक गुरु वर्ण होताहै।

बरवा। इस्का प्रत्येक दल १९ मात्राओंका होताहै और १२ मात्रा पर यति

दोहा। इस्का १३ और ११ मात्राओंका प्रत्येक दल होताहै दलका अन्त वर्ण लघु होना चाहिये और आदिमे जगण नहो यथा

भजमन उस जग ईशको, है जिसकी यह सृष्टि
स्वामी है वहि हमारा, रखताहै नित दृष्टि

सोरठा। यह दोहेके पादको परिवर्त्तन करनेसे होताहै अर्थात इस्का दल ११ और १३ मात्राओंका होताहै यथा

संसारानलतप्त, हैं नाथ हम सब कोई
होंशीतल हम यथा, करो कृपा दृष्टि सोई

रोला। इस्का भी प्रत्येक दल ११ और १३ मात्राओंका होताहै पर अन्त वर्ण चाहे गुरु हो चाहे लघु।

रमा। १४ और १२ मात्राओंका प्रत्येक दल।

हरिपद। १६ और ११ ——— तथा ———

रुचिरा। ८, ८, और १२ मात्राओंका प्रत्येक दल अन्त्य वर्ण गुरु और पहिले आठ आठ का दोनो भाग परस्पर मिश्रान्तर।

हाकल। १४ मात्राका प्रत्येक पाद, अन्त वर्ण गुरु।

गज़ल। ——— तथा ——— अन्त लघु।

ललितपदा। इस्के प्रत्येक दलमे १६ और १२ मात्रा होतीहैं।

चुलियाला। इस्के प्रत्येक दलमे १३ और १६ मात्रा होतीहैं।

चौबोला। इस्के प्रत्येक दलमे १८ और १४ मात्रा होतीहैं।

चौपाई । इस्के प्रत्येक पादमे १६ मात्रा होतीहैं और ८ पर यति (अन्त वर्ण गुरु होतो इसीका नाम मात्रा समक होजाताहै)

अड़िल । चौपाई की न्याईं; पर पादके अन्तमे एक भगण होताहै।

पापड़ी । १६ मात्रा का प्रत्येक पाद अन्तमे जगण और ८ परविश्राम।

पज्झटिका । इस्के प्रत्येक पादमे १६ मात्रा होतीहैं, आठवीं नवीं मात्राका और पंदरवीं सोलवीं मात्रा का मिलकर गुरु वर्ण होताहै

परिहा । २१ मात्राका प्रत्येक पाद अन्त वर्ण गुरु; ९,८ और ४ पर विश्राम

निशानी । २३ मात्रा का प्रत्येक पाद अन्त वर्ण गुरु; १३ और १० पर विश्राम

छप्पै । इस्के पहिले चार पाद रोलेके होतेहैं, पांचवें पादमे १५,१३ मात्रा और छठवें मे भी उतनीहि

हरिगीतिका । इस्के प्रत्येक पादमे १६ और १२ मात्रा होतीहैं; अन्तवर्ण गुरु होताहै

सवया । इस्के प्रत्येक पादमे १६ और १५ मात्रा होतीहैं; अन्त वर्ण लघु होताहै

मत्तडमला । इस्के प्रत्येक पादमे १०,८ और १४ मात्रा होतीहैं

त्रिभङ्गी । इस्के प्रत्येक पादमे १०,८,८ और ६ "सम" मात्रा होतीहैं जगण कहीं न आवे।

कुण्डलिया । इस्के ६ पाद होतेहैं, प्रत्येक पादकी २४ मात्रा होतीहैं, पहिले दो पाद दोहे के होतेहैं, फेर चार पाद रोले के; पर दोहे का जो पिछला भाग हो वहि रोले का पहिला भाग होताहै; इस छन्दके आदिमे जो शब्द हो वहि अन्तमे होता

इत्यादि

संस्कृत और भाषाके प्रसिद्ध प्राचीन छन्दोंके नाम और लक्षण ऊपर लिखगए; इन्के सिवा वर्ण और मात्रा की संख्या और गण भेद करके अनेक प्रकारके और छन्द हो सकते हैं ॥

इतिचतुर्थभागः समाप्तः

धातुविवेक

धातु	अनुबन्ध[१]	अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द	धातु	अनुबन्ध	अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द
अंश्		भाग	अंश। अंशु,	अन्ध्		दृष्टिलय	अन्ध, अन्धक।
अंक्	इ	चिह्नकरना	अङ्क, अङ्कुर, अङ्कुश, पर्य्यङ्क,	अम्ब्		शब्दकरना	अम्बर, अम्बु।
				अभ्र्		शब्दकरना	अभ्र।
अग्		गमन	अग, अग्नि,	अम	रोग	दुःखदेना	आमय।
अग्	इ	चिह्नकरना	अङ्ग, अङ्गन, प्राङ्गण, अङ्गना, अङ्गुरी, अङ्गुलि	अय्		गमन	अयन, पलायन, पर्य्याय, निरय।
अङ्घ्	इ	गमन	अङ्घ्रि।	अर्क		तापदेना	अर्क।
अच्	इ	पूजा	अञ्चित,	अर्घ		मूल्यकरना	महार्घ, अर्घ।
अच्	इ	गमन	रोमाञ्च। पराङ्मुख, तिर्य्यक, समीचीन, प्राक, तिर्य्यक, अञ्चल।	अर्च		पूजा	अर्चन, अर्चना, अर्चनीय,
				अर्ज		लाभ	अर्जन, उपार्जन, [illegible]
				अर्थ		याचना	प्रार्थना, यथार्थ, समर्थ, अर्थ।
				अर्द		याचना	जनार्दन।
अज्		गमन, क्षेपण	समाज, वाजन।	अर्ह		योग्यहोना	पूजार्ह।
अट्		गमन	अटन, पर्य्यटन, अट्टाल	अल्		भूषण, वारण	अलं, अलङ्कार, अलक
अत्		निरन्तर गमन, भाषण	अतिथि	अश्		भोजन	अशन, मांसाश, अश्व, हुताशन, प्राशन।
अद्	औ	भक्षण	अदन, अन्न, अद्रि, घास।	अस्		क्षेपण	निरास, अस्त्र, अस्तु
				अस्		उत्पत्ति विद्यमानहोना	अस्ति, नास्ति, स्वस्ति, सु. सत्, अभाव, समास।
अन्		जीना	प्राण।				
अञ्ज्		लेपन	व्यञ्जन, अङ्ग। अञ्जुक, अञ्जन, अञ्जलि, आज्य, व्यक्ति।	अह्	इ	गमन	अंहः।
				आप्ल		व्यापन	आप्ति, आप्त, गवाक्ष।
				आन्दोल्	अनु	आन्दोलन। दोलन, हेलन	

[१] अनुबन्धोंका तात्पर्य्य धातुविवेक के अन्तमें देखो।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द
आप्लृ व्यापन लाभ	प्राप्ति, व्याप्ति, समाप्ति, ईप्सा।	उच् एकत्रकरण	उचित, उच्च।
		उज्झ त्याग	उज्झित।
आस् उपवेशन	उपासना, आसीन आसन।	उन्द आर्द्र होना	उदक, समुद्र।
		उष दाह	उषा, उष्ण।
इ गमन	समय, पर्य्याय, समुदाय अन्वय, विपर्य्यय, उदय, उपाय, प्रतीति। प्रतीत, उदित, अभिप्रेत, विपरीत, समय।	उक्ष सेचन	प्रोक्षण।
		ऊन हानि	ऊन, ऊनविंशति।
		ऊह वितर्क	समूह, व्यूह, ऊहा।
		ऋ हिंसन	ऋण, अरि, आलि।
		ऋ गमन दान	अर्पण, समर्पण, आर्य्य, अरण्य।
इ अध्ययन	अध्ययन, अध्यापक।	ऋच् स्तुति	ऋत्विक।
इग् इ गमन सङ्केत	इङ्गित।	ऋज् अर्जन, गमन	अर्ज्जन, ऋजु।
इद् इ प्रधानहोना	इन्दु, इन्द्र, इन्द्रिय	ऋत गमन, घृणा	ऋत।
इष् वाञ्छा	इच्छा, अन्वेषण, इष्ट, इष्टक, इषु।	ऋधु वृद्धि	ऋद्धि, समृद्धि।
		ऋष गमन	ऋषि।
ईड स्तुति	ईड़ा।	एजृ कम्पन	जनमेजय।
ईर प्रेरणा	प्रेरण, समीरण।	कक् चपलहोना	कक्षा।
ईर्ष्य द्वेष	ईर्षा, ईर्षालु।	कक इ गमन	कङ्क।
ईश् प्रभुहोना	ईश, ईश्वर, वागीश, अधीश।	कच् बन्धन	कच, कच्छ।
		कच इ बन्धन	कञ्चुक, काञ्चन।
ईष् दर्शन- हिंसा, गमन	प्रेषित।	कज् इ उत्पन्नहोना	कञ्जक।
		कट आवरण	प्रकटित, सङ्कट, विकट, कटु, कट, कटक, कटि।
ईह चेष्टा	ईहा, निरीह।		
ईक्ष दर्शन	निरीक्षण, अपेक्षा, उपेक्षा, प्रतीक्षा, परीक्षा, अनवेक्षित, अपवीक्षण, दृग्वीक्षण	कटि इ गमन	कण्टक

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्नशब्द
कठ् कष्ट	कठिन, कठोर,।	कस् गमन	विकसित।
कण्ठ् इ उत्कण्ठापूर्वक स्मरण	उत्कण्ठित, कण्ठ।	काल् कालकथन	काल।
		काश् दीप्ति	प्रकाश, अवकाश, काशी, सकाश, आकाश।
कड् इ भेद	कण्डार।		
कड् भोजन	कड़ार,।	कास् खाँसना	खाँसी।
कण् गमन, आर्त्तस्वर करना	कणा।	काङ्क्ष इच्छा	आकाङ्क्षा।
कथ् वाक्यप्रबन्ध,	कथा, कथित।	कित् रोगापनयन, वास, संशय	चिकित्सा, निकेतन
		कित् बोधन	सङ्केत।
कद् विक्लीभाव	कदन, कदम्ब।	किल् क्रीड़ा	केलि।
कन् दीप्ति	कनक।	कील् बन्धन	कीलक।
कप् इ काँपना	कम्प, अनुकम्पा	कुच् सुकड़ना	कुच, संकोच
कपि चलना	कपोत, कपोल।	कुट् वक्र होना	कुटिल, कुटीर।
कब् स्तुति	कवि।	कुट्ट छेदन	कुट्टित।
कम् इच्छा	काम, कामना, कान्ति,। कमनीय, कामिनी, कमल।	कुठ् छेदन	कुठार।
		कुठ् इ विकल	कुण्ठित, वैकल्य।
कर्ण भेद	आकर्णन। कर्णी को कर्णी।	कुत्स् निन्दा	कुत्सा, कुत्सित।
		कुञ्च् वक्रण	आकुञ्चन।
कर्द् कुत्सितस्वर	कर्दम।	कुथ् इ क्लेश	कुन्थन।
कल् गणना	सङ्कलन, अवकलन।	कुप् क्रोध	कोप।
कल् गमन	विकल, कल।	कुमार क्रीड़ा	कुमार कुमारी।
कल्ल शब्दकरना	कल्लोल।	कुल गणना	कुलीन, आकुल।
कश् शब्दकरना	विकशित।	कुश् आलिङ्गन	कुशल, कुशि।
कष् वध	कष्ट, कषाय।	कुह आश्चर्यदान	कुहक।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द
कुल आच्छादन	अनुकूल, प्रतिकूल,	कृप दया	कृपा, कृपालु।
	कूल।	क्रम् पादविक्षेप	आक्रम् विक्रम, संक्रान्ति,
कृ करना	कृति, प्रकृति, आकृ		क्रमशः।
	ति, अधिकार, आ	क्री द्रव्यविनियम	विक्रय।
	कार, उपकार, अ	क्रीड़ खेलना	क्रीड़ा।
	ङ्गीकार, कर्म्म, कि	क्रुध् औ कोप	क्रोध।
	या, करण, करुणा,	क्रुश औ रोदन	आक्रोश, क्रोश।
	चिकीर्षा, अधिकारी	क्लम ग्लानि, श्रान्ति	क्लान्त।
	कर्त्ता, संस्कृत, कर्त्त	क्लव भय	विक्लव।
	व्य, कृत्रिम, आकर,	क्लिद आर्द्रीभाव	क्लेद।
	शङ्कर, भास्कर, आ	क्लिश दुःखितहोना	क्लेश।
	करण, आकृति।	क्लीब अप्रागल्भ्य	क्लीब।
कृत छेदन, वेष्टन	कर्त्तनी,	क्वण शब्दकरना	क्वणित।
कृप समर्थहोना	कृपण, कृपाण।	क्वथ पाक	क्वाथ।
कृप कल्पन	कल्प, संकल्प, वि	खच बन्धन	खचित।
	कल्प, कल्पना।	खञ्ज लंगड़ाना	खञ्ज।
कृश दुर्बलहोना	कृश,	खद् आवरण।	खाद।
कृष औ कर्षण	आकर्षण, आकृष्ट,	खड ड भञ्जन,	खण्ड, खण्डित।
	कृषक, कृषाण,	खड्ड भेद	खड्ग।
	कृष्ण।	खन विदारण	खनन, खर।
कॄ विक्षेप	विकीरण, सङ्कीर्ण,	खर्ज्ज व्यथादेना	खर्ज्जूर।
	आकीर्ण, किरण,	खर्व्व गमन दर्पकरना	खर्व्व, निखर्व्व।
	किरीट।	खल सञ्चलन	खल।
कृत संशब्दकरना	कीर्त्तन कीर्त्ति।	खाद् भक्षण	खाद्य, खाना।
क्रन्द् इ रोदन	क्रन्दन,	खिद् औ खेदकरना	खेद।

धातु	अनुबन्ध	अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु	अनुबन्ध	अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द
खुड़		भेद	खोड़ित।	गर्द		वर	गर्दभ
खुर		छेदन	खुर।	गर्द		प्रायशोच्छ्वा	गर्दभ।
खेट		भक्षण	खेटक।	गर्व		दर्पकरना	गर्वः।
खेल		गमन, क्रीड़ा	खेलना।	गर्ह		कुत्सन	गर्हित
खै		खनन	खात, आखु।	गल		क्षरण	विगलित।
खोट्		गार्तनेचलना	खोटन।	गह		निविड़होना	प्रगाढ़, गहन, गह्वर।
खोड्		गतिवैकल्य	खोड	गात्र		शिथिलहोना	गात्र।
ख्या		कथन	आख्यान, संख्या, विख्यात।	गाह		विलोड़न	अवगाहन, दुरवगाह।
				गु		ध्वनि, विष्ठात्याग	गोत्र, गु।
गज	इ	शब्द	गञ्जना।	गुज	इ	मक्षिकाध्वनि	गुञ्जन।
गठ		निर्माण	गठित।	गुठ	इ	वेष्टन	अवगुण्ठन।
गड़	इ	कर्कश बोलना	गण्डूष।	गुड	इ	चूर्णीकरण	गुण्डित।
				गुण		मन्त्रण	गुण, गुणी।
गण		गणना	गणना, गण, गणिका, गणेश।	गुप		गोपन रक्षण	गोपन, गुप्त।
				गुप		कुत्सन	जुगुप्सित।
गद		भाषण	गदित, गद्य।	गुम्फ		ग्रन्थन	गुम्फित।
गवेष		अन्वेषण	गवेषणा।	गुर		उद्यम	गुरु।
गम	ऌ	गमन	गमन, आगमन, गति, दुर्गति, सङ्गम, समागम, जिगमिषा, गत, खगम, दुर्ग, खग, भुजग, पतङ्ग, जगत्, गन्तु, गो	गुह		आवरण	गुह, गुह्य, गुहा।
				गृ		विष्ठात्याग	गू, गूथ।
				गूर		उद्यम	गूरण
				गृज		ध्वनिकरना	गर्ज्जन,
				गृध		अत्यन्त अभिलाष	गृध्नु, गीध।
				गॄ		भोजन	उद्गिरण, निगिरण, गिरि, आगार।
गर्ज्ज		बलपूर्वक शब्दकरना	गर्ज्जन।				

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
गै गाना	गीत।	चुप	चपना।
ग्रन्थ ग्रन्थन	ग्रन्थ।	चम भक्षण	आचमन।
ग्रस् भक्षण	ग्रास।	चर गमन,	आचार,प्रचार,निरा
ग्रह् ग्रहण	ग्रहण, आग्रह,	भोजन,आचरण	र,सञ्चार,समाचार,
	निग्रह, अनुग्रह,		अनाचार,आचरण,
	परिग्रह, संग्रह,		उच्चारण, विचरण,
	ग्राह्य, विग्रह।		चरित,चरित्र,सह-
			चर,अनुचर,उप-
ग्लै हर्षक्षय	ग्लानि।		चार,चर,आचार्य, चराचर,
घट चेष्टा	घटना,घट,घटक,	चर्च आलोचना	चर्चा।
	घट, घटिका।	चर्व चबाना	चर्वण।
घट्ट चलना	घट्ट।	चल गमन	चलना,प्रचलित,चञ्चल,
घुन दीप्ति	घुन।		अचल,पुंश्चली।
घस ऌ भोजन	घास।	चक्ष कथन	विचक्षण। चक्षुः
घुट प्रतिहनन	घोटना, घोटक।	चि एकत्रकरना	सञ्चय, परिचय,
घुण ग्रहण	घोण।		चिता। निश्चय,
घुर भयानकहोना	घोर।	चित ज्ञान	चेतन।
घुष ऊँचेस्वरसेकहना	घोष।	चित इ स्मरण	चिन्ता, चिन्तन।
घूर्ण भ्रमण	घूर्णायमान।	चित्र लिखना आश्चर्य	चित्र, विचित्र।
घृ छिड़कना	घृत।	चिह्न लक्षण	चिह्न।
घृण दीप्ति, ग्रहण	घृणा	चुट छेदन	चोट।
घृष घसना	घर्षण।	चुद प्रेरणा	चोदित।
घ्रा गन्धग्रहण	घ्राण, आघ्रा।	चुब चूमना	चुम्बन।
चक प्रतिघात	चकित, चक्र।	चुर अपहरण	चोर।
चड इ रोष	प्रचण्ड,चण्डी,चण्डा	चूर्ण पेषण	चूर्ण।
चद इ दीप्ति,आल्हाद	चन्द्र, चन्दन ल	चूष पान	चूसना।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द
चेष्ट चेष्टा	चेष्टा।	द्युत दीप्ति	ज्योति, ज्योत्स्ना।
च्यु दारण गमन	च्युत।	ज्वर रोग	ज्वर।
छद आच्छादन	आच्छादन, छद्म,	ज्वल दीप्ति	ज्वाला, प्रज्वलित।
	आच्छन्न, छन्न।	झॄ वयोहानि	निर्झर।
छर्द वमन	छर्दि।	झर्झ उक्ति	झर्झर।
छिद ऊ छेदन	छेदन, विच्छेद, छेत्ता	टक इ बन्धन	टङ्कन, टाँका।
छिद्र भेद	छिद्र।	टल विकलहोना	टलना।
छुर छेद	छुरी।	डब प्रेरण	विडम्बना।
जट एकत्रहोना	जटिल, जटा।	डी नभोगमन	उड्डीन।
जन उत्पत्ति	जन्म, जननी, जनक,	ढूण्ढ अन्वेषण	ढूँढ़ना।
	प्रजा, पङ्कज, बीज,	तट उच्चहोना	तट, तटिनी।
	जाया, अङ्कुर।	तड़ ताड़ना	ताड़ना।
जप मन्त्र उच्चारण	जप।	तडु दीप्ति	तड़ित्।
जल आच्छादन	जल, जाल।	तडु आहनन	वितण्डा, तण्डुल।
जल्प भाषण	जल्पना।	तत्र इ मोह	तन्द्रा।
जक्ष भक्षण	जक्षण, जक्ष्म।	तन् विस्तार	तनु तनय, सन्तान
जागृ निद्राक्षय	जागरण, जाग्रत्।	तप दाह	ताप, सन्ताप, तपन
जि जय	जय, जिगीषा, विज	तप ऊ खेद	अनुताप।
	य, मृत्युञ्जय।	तप तपस्याकरना	तपस्या।
जीव प्राणधारण	जीवन, जीविका।	तम् खेद	तान्त।
जुड़ बन्धन	जोड़ना।	तर्ज्ज भर्त्सन	तर्ज्जन।
जृम्भ इ गात्रशै-	जृम्भा, जँभाई	तस इ अलङ्कृत-	अवतंस।
थिल्यकरना		करना	
जॄ वयोहानि	जरा, जीर्ण।	तक्ष चर्म्मग्रहण,	तक्ष, तक्षक।
ज्ञा बोध	ज्ञान, विज्ञापन, आ-	तनूकरण	
	ज्ञा, प्रतिज्ञा, संज्ञा, विज्ञ।		

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द
तिज् तीक्ष्णकरना	तेजः तेजस्वी, उत्ते	दय् पालन	दया, दयिता।
	जित, तीक्ष्ण।	दरिद्रा दुर्गति	दरिद्र।
तिज् क्षमा	तितिक्षा।	दल् भेद	दल।
तिम् आर्द्रीभाव	तिमित, तिमिर, ति	दश् इ दंशन	दंशन, दशन, दष्ट्र।
तिल् स्निग्धता	तिल, तैल। मी।	दह् औ भस्मीक	दहन् दग्ध, निदा
तीर् समाप्ति	तीर।	रना	घ।)
तुद् व्यथादेना	विधुन्तुद	दक्ष् शीघ्रकरना	प्रदक्षिण, दक्षिणा।
तुल् तोलना	उत्तोलन, तुल्य।	दा दान	दान, अपादान, सम्प्रदान,
तुष् तुष्टि	सन्तोष।		जलद।
तृप् परितोष	तर्पण।	दो छेदन	दात्र।
तृष् पिपासा	तृष्णा।	दाश् दान	दाश।
तॄ पारगमन, स-	सन्तरण, प्रतारण,	दास् दान	दास, दासी।
न्तरण	अवतार, निस्तार,	दिव् क्रीड़ा दीप्ति	दिव, दीर्घ, दिवस, देवता।
	तरणि, तीर्थ।	दिश् दान,	आदेश, उद्देश, उपदेश।
त्यज् औ त्याग	त्याग।	आज्ञापन, कथन	
त्रप् लज्जितहोना	त्रपा, अपत्रप।	दिह् औ लेपन।	सन्देह।
त्रस् भीत होना	त्रास।	दीधी दीप्ति	दीधीति।
त्रै उद्धार, रक्षण	त्राण।	दीप् उज्ज्वलहोना	दीप्ति।
त्रुट् छेदन	त्रुटि।	दीक्ष् उपदेश	दीक्षा।
त्वच् आच्छादन	त्वच्।	दु अनुताप	द्रु, दून।
त्वर् वेग	त्वरा।	दुःख दुःखकरण	दुःख
त्वक्ष् कृशकरण	त्वष्टा।	दुल् उत्क्षेपण	दोलायमान।
त्विष् दीप्ति	त्विषा।	दुष् औ अशुद्धिभाव	दोष।
दण्ड् दण्डपतन	दण्ड।	दुह् औ दोहन	दुग्ध।
दम् वशीभूतकरण	दमन, दमयन्ती	दृष् अशुद्धि, निन्दा	दूषण।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न अर्थ
दृ आदर	आदर।	धाव् शीघ्र गमन	अनुधावन्, धावित, धा-ना।
दृश् ञौ देखना	दर्शन, दृष्ट, दिदृक्षु,	धाव् शुद्धीकरण	धौत, धोना।
	सदृश,।	धु कम्पन	धुत।
दॄ विदारण	विदारण,।	धू कम्पन	धूम्र, धूँआ।
द्युत् दीप्ति	द्युति, विद्युत्।	धूप् तापदेना	धूप।
द्रा सोना भागना	निद्रा, द्राण।	धृ धारण	उद्धार, धार, अवधारण
द्रु गमन, द्रवण	द्रव, उपद्रव, द्रवा,		धारणा, निर्द्धारण, धृत,
	द्रु द्रुम्		अवधारित, आधार, धरा,
द्रुह् अनिष्ट चिन्तन	विद्रोह।		धर्म्म, वसुन्धरा।
द्विष् ञौ शत्रुताकरना	द्वेष।	धृष् प्रागल्भ्य को ध	धृष्ट।
धन् धान्योत्पादन	धन, धान्य।	धे पान	स्तनन्धय।
धम् अग्निसंयोग, शब्द	धमनी, धमकी।	ध्मा अग्निसंयोग, ध्वनि	ध्मात, वेणुध्म।
धा धारण, पोषण	आधान, परिधान,		
	विधान, अवधान,	ध्वाङ्क्ष इच्छा, घोरध्वनि	ध्वाङ्क्ष।
	व्यवधान, अन्तर्द्धान,		
	सावधान, अभिधान,	ध्यै चिन्ता	ध्यान, सुधी।
	समाधान, सन्धान,	ध्वन् शब्दकरना	ध्वनि, ध्वान।
	निधि, विधि, अवधि,	ध्वंस नाश	ध्वंस,
	परिधि, समाधि, स-	नट नृत्य	नट, नाटक।
	न्धि, श्रद्धा, अभिसन्धि,	नन्द् आनन्दयुक्त भाव	आनन्द, नन्दन।
	प्रधान, प्रतिनिधि,		
	हित, अवहित वि-	नद अव्यक्तशब्द	नाद, नदी।
	हित, समाहित, नि-	नम् नति	विनति, प्रणाम, न-
	हित, धाता, विधाता,		मस्कार, उन्नत, प-
	धात्री, विधेय, जलधि		रिणत, नम्र, परि-
	निधु, सुधा।		णाम।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
नश् अदर्शन	नाश, विनाश, नष्ट, नश्वर।		पतित, अपत्य, पतङ्ग, पातक।
नह् बन्धन	नद्ध, उपानत्, अनड्वान्।	पत् प्रभुहोना	पति, पत्नी।
		पथ् गमन	पथ, पथिक, पन्था।
नाथ् प्रभुहोना	नाथ।	पद् डो गमन	आपद, विपद, सम्पद,
निन्द् इ कुत्सन	निन्दा।		सम्पादन, उत्पादन, प्रतिपादन,
नी प्रापण	नीति, नयन, आनयन, विनय, प्रणय,		आपत्ति, पद्य, पद्म।
		पर्ण हरितवर्णहोना	पर्ण, पर्णशाला।
	परिणय, निर्णय,	पर्व्व पूर्णहोना	पर्व्व।
	उपनीत, प्रणीत,	पल पालन, गमन	पल्वल।
	नेत्र, नेमि, सेनानी,	पल्ल गमन	पल्लव।
नील नीलवर्णकरना	नील,	पश बन्धन	पाश, फांसी।
नु स्तुति	प्रणव।	पश गमन	पशु।
नुद् प्रेरण	विनोदित।	पक्ष् ग्रहण	पक्ष, विपक्ष, पक्षी।
नृत नर्त्तन	नृत्य।	पा पान	पानं, पिपासा, पानीय,
नृ नीति	नर, नारी।		द्वीप, मधुप, पादप,
पच् डो पाक	पाक, पक्व, पाचक।		प्रपा, पात्र।
पचि इ विस्तार	प्रपञ्च, पञ्च, पक्ष।	पा रक्षा	पाता, नृप, कपि, पति।
पट् वेष्टन	परिपाटी, पटु,	पार कर्म्मसमाप्ति	पार, पारग।
	पट।	पाल् रक्षण	पालन, प्रतिपालित,
पठ् पढ़ना	पाठ।		महीपाल।
पडि इ गमनसमूह	पण्डित	पिष् चूर्णन	पीसना।
पण वाणिज्यकरना	पण, पणप।	पीड़ कथविलोड़न	पीड़ा।
पण स्तुति	पणित	पुंस मर्दन	पुमान, पुंश्चली, पुंलिङ्ग।
पत् गमन	पतन, उत्पात, प्रपात,	पुट संसर्ग	करपुट, पुटप।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
पुण्य धर्म्म	पुण्य।	फेल् गमन	फेलित।
पुल् महत्त्व,उच्च	पुलकित,पुलिन।	वक् इ कुटिली-करण	वङ्कित, बांका।
पुष् पोषण	पुष्टि,पोषित,पुष्कर		
पू शुद्धि	पूत,पावक,पावन, पवित्र, पवन।	वच् ओ कथन	वचन,वाक्य,उक्ति, विवक्षा, वाचक, वक्ता, वक्तृ।
पूज् उपासना	पूजा।		
पूर् पूरण	पूरण, पूरुष।	वज् गमन	वाज,वज्र,वाजी।
पृ पालन,पूरण	व्यापृत, पार्ष्ण।	वट् वेष्टन	वट, वाटी।
पृच् सम्पर्क	सम्पर्क।	वट् उक्ति	वटु।
पृथ् प्रक्षेप	पृथक्।	वण्ट् इ भाग	वण्टन, बांटना।
प्याय् वृद्धि	आप्यायित।	वड् आरोहण	वड़िश।
प्रच्छ् ओ जिज्ञासा	प्रश्न, प्रष्टव्य।	वण् शब्द	वाणी।
प्रथ् ख्याति	प्रथित, पृथिवी, पृथ्वी।	वद् कथन	वदन,अनुवाद,आशीर्वाद,विवाद,संवाद, धन्यवाद, प्रियम्वद, वत्स।
प्री प्रीति	प्रीति, प्रिय।		
प्रोथ् पर्य्याप्ति, सामर्थ्य	प्रोथित।	वद् इ स्तव अभिवादन	वन्दी, वन्दनीय।
प्लु कूदजाना तिरना	प्लव, प्लावित।		
		वध् हिंसा	वध, वधू।
प्लुष् दाह	प्लुष्ट।	वन् याचना	वनिता।
प्सा भक्षण	प्सान, प्सात।	वञ्च् प्रतारणा	वञ्चित, प्रवञ्चना।
फक्क् असद्व्यवहार	फक्किका।	वन्ध् ओ वन्धन	वन्धन,सम्बन्ध बद्ध, बन्धु।
फण् गमन	फणा,फणी,फेण		
फल् निष्पत्ति	फल, फलक।	वप् ओ बीजबोना	वपन,उप्त,वप्र।
फुल्ल विकाश	प्रफुल्ल।	वप ओ मुण्डन	वपन।

ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতু নিষ্পন্ন শব্দ	ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতু নিষ্পন্ন শব্দ
বম উদ্গীরণ	উদ্বমন, বমি।	বাস গুণান্তরকরণ, ইচ্ছা	বাসনা।
বর প্রাপ্যেচ্ছা	বর, বরণীয়, বরদ।		
বর্ণ রংকরণ	বর্ণ, সুবর্ণ।	বিচ্ পৃথককরণ	বিবেচনা।
বর্ণ বিস্তার,স্তুতি	বর্ণন, বর্ণনীয়।	বিজ্ ভয়কম্পন	বেগ, উদ্বিগ্ন।
বল সম্বরণ	বলয়।		
বল জীবন	বালক।	বিদ্ জ্ঞান	নিবেদন, বিদ্যা, জ্যোতির্বিৎ, বেদ।
বশ ইচ্ছা	বশ।		
বস ঔ নিবাস	বাস, প্রবাস, উপবাস, সহবাস, প্রোষিত, নির্ব্বাসিত, প্রতিবাসী, বসু, বস্তু, বৎসর, বসন্ত, অমাবস্যা	বিদ্ ঔ বর্ত্তমান হওনা	বিদ্যমান
		বিদ্ ই অবয়বহওনা	বিন্দু, অরবিন্দ, গোবিন্দ বিন্দ বিদ্ধ।
		বিধ ছিদ্রকরণ	
		বিল বিভেদন	বিল, বিলেশয়।
		বিশ ঔ প্রবেশ	প্রবেশ, বিশ্ব, বেশ্ম, বেশ্যা,
বস আচ্ছাদনপূর্ব্বক ধারণ	বসন, বস্ত্র। বাস	বিষ ঔ ব্যাপ্তি বিয়োগ	বিষয়, বিষ, বিষ্ণু।
বহ ঔ প্রাপ্তিপূর্ব্বক অন্যত্রগমন	বহন, বিবাহ, উদ্বাহ, নির্ব্বাহ, প্রবাহ, আবহমান, হব্যবহ, বহ্নি, বারিবাহ, বহু, বাহু।	বী জীবিকা	বেতন।
		বীর বলিষ্ঠহওনা	বীর।
		বুক্ক কুকুরধ্বনি	বুক্কার।
		বুধ ঔ জ্ঞান	সম্বোধন, বোধ, প্রবোধ, বুদ্ধি, বুভুৎসা, বুধ।
বহ গমন	প্রবাহ।		
বা আশুগমন	নির্ব্বাণ, নির্ব্বাত, বায়ু।	বৃ আচ্ছাদন	আবরণ, নিবারণ, বারি।
		বৃজ ত্যাগ	বর্জ্জনীয়।
বাঞ্ছ অভিলাষ	বাঞ্ছা।	বৃত বিদ্যমানহওনা	প্রবৃত্তি, নিবৃত্তি, বর্ত্ম, বর্ত্তনা, চক্রবর্ত্তী, বর্ত্তমান, পরাবৃত্ত, বর্ত্ম।
বাধ আঘাত	বাধা, বাধিত।		
বাশ শব্দ	বাশি		

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
वृध् वृद्धि	वृद्धि, वृद्ध,।	भद् शुभ	भद्र।
वृष् सेचन	वृष्टि, वृष, वर्षण।	भर्त्स भर्त्सना	भर्त्सना।
वृह् वृद्धि	वृहत, ब्रह्म, ब्राह्म	भष् कुक्कुरारव	भषक।
वृंह् ३ शब्दकरना	ण बृंहित।	भस् दीप्ति	भस्म।
वृत् आच्छादन	वृत्त।	भक्ष् भक्षण	भक्षण।
वेपृ कम्पन	वेपथु।	भा दीप्ति	प्रभा, आभा, प्रतिभा, भात, भानु, सभा, प्रभात।
वेल् चलन् कालोपदेश	वेला।		
		भाज् पृथक्	भाग, भाजन।
वेल्ल चलना	वेल्लि।	भाम् क्रोध	भामिनी।
वेष्ट् वेष्टन	वेष्टित।	भाष् कथन	आभाषण, भाषा, परिभाषा।
व्यथ् दुःखदेना	व्यथा	भास् दीप्ति	आभास, भास्कर।
व्यध् ञौ ताड़ना	व्याध।	भी शङ्का	भय, भीत, भीरु।
व्यय् गमनत्याग	व्यय।	भुज् ञौ वक्रकरना	भुजग, भुजङ्ग।
व्ये आवरण	व्योम।	भुज ञौ भक्षण	भोजन, भोज्य, बुभुक्षा,
व्रज् गमन	अनुव्रजन, परिव्राजक		हुतभुक, भुक्त।
व्रश्च् छेदन	वृश्चिक।	भुज् ३ भक्षण	भुञ्जन।
व्रीड् लज्जा	व्रीड़ा।	भू चिन्ता	भावना, सम्भावना, भाव,
ब्रू कथन	ब्रुवाण।	भू उत्पत्ति, विद्यमानता	भवन, उद्भव, सम्भव, भाव,
भञ्ज् ३ भेदन	भङ्ग, भञ्जन, भङ्गुर		आविर्भाव, स्वभाव, भूत,
भज् ञौ सेवा	भजन, भक्त, भग, भगिनी।		यथाभूत, तिरोभूत, प्रभु, भावी, भविष्यत, भूपति,
भज् ञौ अंश	भाग, विभक्त।		भूमि, विभु।
भट् वेतन	भट।	भूष् अलङ्कृत करना	भूषण।
भण्ड् ३ परिहास	भाण्ड	भृ धारण, पोषण	भरण, भाव, निर्भर, भृत्य,
भण कथन	भणित		भर्त्ता, भार्य्या, आभरण, विश्वम्भर।

ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতু নিষ্পন্ন শব্দ	ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতু নিষ্পন্ন শব্দ
ভ্রস্জ্ পাক	ভৃষ্ট, ভর্জ্জিত, ভর্গ।	মস্জ্ স্নান	মজ্জন, মগ্ন, মজ্জা
ভ্রম্ পাদবিহরণ	ভ্রমণ, সম্ভ্রম, ভ্রান্তি, ভ্রমর।	মহ্ পূজা	মহত্, মহাশয়, মহী, মহিষ, মহিলা।
ভ্রংশ ই অধঃপতন	ভ্রষ্ট।	মা মাপ	পরিমাণ, অনুমান, নির্ম্মাণ, উপমা, প্রতিমা, সমান, মা, মাতা, মায়া।
ভ্রাজ্ দীপ্তি	ভ্রাজিষ্ণু, বিভ্রাট্।		
মগ ই গমন	মঙ্গল।		
মচ ই উচ্চীভাব	মঞ্চ।	মান্ বিচার	মীমাংসা।
মঠ্ বাস	মঠ।	মান্ পূজা	সম্মান, অপমান।
মড্ ই ভূষণ	মণ্ডিত, মণ্ডপ।	মার্গ্ গমন	মার্গ।
মড্ ই বেষ্টন	মণ্ডল, মণ্ডুক।	মার্গ্ অন্বেষণ	মার্গ্য।
মণ্ অব্যক্তশব্দ	মণি।	মার্জ্ পরিষ্কার	মার্জ্জিত, সম্মার্জ্জনী, মার্জ্জার।
মন্ত্র ই গুপ্তবচন	মন্ত্র, নিমন্ত্রণ, মন্ত্রী		
মদ্ স্তুতি, জাড্য	মন্দ মন্দির।	মিদ্ স্নেহন	নিমিত্ত, মিত্র, মেদিনী।
মদ্ হর্ষ, দ্যুতি, গর্ব্ব	মদ উন্মাদ, মত্ত, মদন, মদিরা, মত্স্য।	মিল্ সঙ্গীভাব	সম্মিলন, মেল।
		মিশ্র সংযোগ	মিশ্রিত।
মন্ ঔ বোধ	মনন, মতি, অনুমতি, সম্মতি, মত, সম্মান, মনঃ মনুষ্য।	মিষ্ সেচন	মিষ্ট।
		মিষ্ পরাভবেচ্ছা	মেষ।
		মিস্র সংযোগ	মিস্রিত।
মন্ গর্ব্ব	অভিমান।	মিহ্ ঔ সেচন	মেহন, মিহির, মেঘ।
মন্থ বিলোড়ন	মন্থন, মন্মথ।	মী বধ	বিনিময়, মীন, মেরু।
		মীল্ চক্ষুখোলনা	নিমীলন, মীলিত।
ময় গমন	ময়ূর।	মুচ্ ত্যাগ	মোচন মুক্তি, মুমুক্ষা, মুক্ত, মুক্তা।
মর্ক গমন	মর্কট।		
মশ্ ধ্বনিকরণ	মশক।	মুড্ লোমচ্ছেদন	মুণ্ডন, মুড়ানো।
মস্ পরিমাণ	মসি।	মুদ্ হর্ষ, প্রীতিযোগ	আমোদ, প্রমোদ, অনুমোদন, মুদা, মুদিত, মোদক, [illegible], কুমুদ।

ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতুনিষ্পন্ন শব্দ	ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতুনিষ্পন্ন শব্দ
মূর্চ্ছ মোহ	মূর্চ্ছা, মূর্চ্ছনা,	যত্ দুঃখ	যাতনা।
মুহ অজ্ঞান	মূর্তি মোহ, মূঢ়, মুগ্ধ, মোহিনী মুহুর্মুহুঃ।	যন্ত্র ই সংকোচন	যন্ত্রণা, যন্ত্র।
		যম্ ঔ বিরত হওয়া	উদ্যম নিয়ম, সংযম, প্রাণায়াম।
মূত্র প্রস্রাব করণ	মূত্র।		
মূল স্থিতি, জন্ম, রোপণ	মূল্য, উন্মূলিত, মূল।	যস্ যতন	আয়াস।
		যা গমন	যাত্রা।
মূষ্ চৌর্য্য, লুণ্ঠন	মূষ, মূষিকা।	যাচ্ প্রার্থনা	যাচ্ঞা।
মৃ প্রাণত্যাগ	মরণ, মারণ, মৃত্যু মুমূর্ষু, মরু, মরুৎ, অমৃত, মর্ত্ত্য।	যু মিশ্রণ	যবন।
		যুজ্ ঔ মিলন	যোগ, নিয়োগ, বিয়োগ, প্রয়োগ, সংযোগ, উদ্যোগ, প্রয়োজন, আয়োজন, প্রযুক্তি, যুক্ত, যোগ্য, যুগল, যুগ।
মৃগ্ অন্বেষণ বা যাচ্ঞা	মৃগয়া, মৃগ্য, মৃগ।		
মৃজ্ শুদ্ধি	মার্জ্জক।		
মৃদ্ চূর্ণীকরণ	মর্দ্দন, মৃদু, মৃত্তিকা, মৃদঙ্গ।	যুজ্ ঔ সমাধি	যোগ, যুক্তি।
		যুধ্ ঔ সংগ্রাম	যুদ্ধ, যুধিষ্ঠির, আয়ুধ।
মৃশ্ ঔ প্রণিধান	পরামর্শ।	যুষ্ ভজন	যোষা, যুষ্মদ্।
মৃষ্ ক্ষমা	বিমর্ষ।	রচ্ করণ	রচনা, রচিত।
মে পরিবর্ত্তন	বিনিময়।	রট্ কথন	রটনা।
মেড্ উন্মাদ	মেড়।	রদ্ উৎখনন	রদন।
ম্না অভ্যাস	নিম্ন।	রঞ্জ্ ঔ বর্ণান্বিতকরণ	রঙ্গ, রঞ্জক, রজঃ।
ম্লেচ্ছ অসংস্কৃত কথন অব্যক্ত শব্দ	ম্লিষ্ট, ম্লেচ্ছ।	রঞ্জ্ ঔ আসক্তি	অনুরাগ, বিরক্ত।
ম্লৈ কান্তিক্ষয়	ম্লান, অম্লান।	রভ্ ঔ উৎসুকীভাব	আরম্ভ, আরব্ধ।
যজ্ দেবার্চ্চন	যজন, যজ্ঞ, ইষ্ট।	রম্ ঔ ক্রীড়া	রমণ, রতি, রত, রমণীয়, রাম, রমণী।
যত্ যত্নকরণ	যত্ন।		

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
रश् शब्द	रशना, रश्मि।	रुष् क्रोध	रोष, रुष्ट, रूसना।
रस् आस्वादन	रस, रसना।	रुह् ऊ उत्पत्ति, स्फूर्ति	आरोहण, रूढ़, वीरुत,
रह् त्याग	विरह, रहित।		महीरुह, शिरोरु-
रक्ष् पालन	रक्षा, रक्षित।		ह सरोरुह।
रा दान	अराति, रात्रि।	रूप् रूपकरण	निरूपण, रूप, रो
राज् दीप्ति	विराजमान, राजा,	रूक्ष् अस्निग्धीभाव	रूक्ष, रूखा। प्य।
	सम्राट्, राजीव।	लग् योगकरना	लग्न, लगना।
राध् ऊ सिद्धि	आराधना, अपराध,	लग् उपवास गमन	लङ्घन उल्लङ्घन।
	राधा।	लघु अल्पीकरण	लघु।
राश् शब्द	राशि, राशभ।	लड् चञ्चलहोना	लडन।
रास् शब्द	रास, रासभ।	लड् अन्यन्तपालन	लालन।
रिख् इ गमन	रिङ्खन।	लड् इ उत्क्षेपन	लण्डभण्ड।
रिग् इ गमन	रिङ्गन।	लत् अख्यात	लता।
रिच् ऊ वियोग	व्यतिरेक, रिक्त, रीता।	लप् भाषण	आलाप, विलाप।
रिच् ऊ पुरीषोत्सर्जन	रेचन, रेचक।	लफ् इ प्लुतगति	लम्फ।
रिफ् कुत्सन	रेफ।	लब् इ अवलम्बन	अवलम्बन, विलम्ब।
री गमन, स्रवण	रीति।	लभ् ऊ प्राप्ति	लाभ, उपलब्धि, लिप्सा।
रु ध्वनि	रव, फेरु, रवि।	लभ् इ शब्द	आलम्भ।
रुच् दीप्ति, प्रीति,	रुचि, रोचक, रुचिर,	लल् प्रायरोच्छा,	ललित, ललना।
	रोचि; रुक्म।	क्रीड़ा, गमन	
रुज् भङ्ग	रोग, रुग्ण, नीरुक।	लष् इच्छा	अभिलाष।
रुद् रोदन	रोदन, रुद्र।	लस् क्रीड़ा शिल्प योग	विलास, उल्लास, अलस।
रुध् ऊ आवरण	अनुरोध, विरोध,	लस्ज लज्जितहोना	लज्जा, लज्जित।
	रुद्ध, विरुद्ध, रुधिर,	लक्ष दर्शन, चिह्न	लक्षण, लक्ष्य, लक्ष्मी
रुप् वपन	रोपण, आरोपित।	लाछ् इ चिह्न	लाञ्छन, लाञ्छित।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातुनिष्पन्न शब्द
लाड् क्षेपण	लाड़न।	शप् ओ आक्रोश	शपथ, शाप,
लिख् चित्रकरण	लिखना, उल्लेख, लेख, लेखनी, लेख्य,	शव् विकार	शव, श्मशान।
		शब्द् ध्वनि	शब्द, शब्दायमान।
लिग् इ गमन	आलिङ्गन।	शम् दमन	शम, उपशम, शमन, शान्ति, शान्त।
लिप् ओ लेपन	लिपि, लेप, लिप्त।		
लिश् ओ अल्पीभाव	लेश।	शल् आच्छादन	शाला।
लिह् ओ आस्वादन	लेहन, लीढ, लेह्य, पुष्पलिट्।	शस् हनन	प्रशस्त, शस्य, शस्त्र।
		शाख् व्याप्ति	शाखा, शाखी।
ली संलग्न होना	प्रलय, लीन, आलय	शाण् तीक्ष्णीकरण	शाणित।
लुट् इ चौर्य्य	लुण्ठित, लूटना।	शास् शासन	शास्ति, आशीर्वाद, शिष्ट, शिष्य, शास्त्र।
लुठ् इ चौर्य्य, पतन	लुण्ठित।		
लुठ् सम्बन्धीभाव, वधन	लुठित।	शि तीक्ष्णीकरण	निशित, शायक।
		शिष् अन्त होना	शेष, परिशेष, अवशिष्ट, उच्छिष्ट।
लुप् ओ ध्वंसकरण	लुप्त, लोपामुद्रा।		
लुभ् आकाङ्क्षा	लोभ।	शिष् ओ विशेष	विशेष, विशेषण, विशिष्ट विशेष्य।
लू छेदन	लव लवण।		
लोक् दर्शनदीप्ति	अवलोकन, लोक, आलोक।	शिक्ष् विद्याग्रहण	शिक्षा, शिक्षित।
		शी शयन	शयन, आशय, संशय, अतिशय, शय्या, शायक, श्मशान,
लोच् दर्शन	लोचन।		
शक् क्षमता	शक्ति, अशक्त, शकट, शक्र, शक्त	शील् अभ्यास	शील, अनुशीलन।
शङ्क् इ त्रास	आशङ्का शङ्का	शुच् दुःख	शोक, अनुशोचन।
शठ् वञ्चना	शठ।	शुच् शुद्धि	शुक्ल, शुचि।
शत् हिंसा	शत्रु।	शुध् ओ परिष्कार	संशोधन, शुद्ध,
शन्स कथन, स्तुति, हिंसा	प्रशंसा, नृशंस।	शुभ् दीप्ति	शोभा, शुभ, शुभ्र।

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
शुष् ओ रसरहितकरना	शोषण, शुष्क।	सद् अवयव	सदा।
शूर विक्रम	शूर।	सद् गमन	विषाद प्रसन्न, सदन, सभा, सद्यः।
शॄ हिंसन	शरण, शीर्ण, शर, शरत्, शरभ, शर्करा, शारङ्ग, शर्म्मा।	सन् सेवा	सनातन।
		सञ्ज सङ्ग	सङ्ग, प्रसङ्ग।
शोण् रक्तवर्णकरना	शोणित।	सर्व्व् गमन	सर्व्व।
श्यै गमन	शीत।	सल् गमन	सलिल।
श्रध् यत्न, पुनः२ हर्ष	श्रद्धा।	सह् क्षमा	सहन, उत्साह, सोढ़।
श्रन्थ ग्रन्थन	श्रन्थित।	साध् ओ सिद्धि	साधन, साध्य, साधु।
श्रम् आयास	परिश्रम, विश्राम, श्रान्ति, आश्रम।	सान्त्व प्रियकरण	सान्त्वना।
		सिच् ओ क्षरण	सेचन, सींचना।
श्रा पाक	शृत।	सिध् ओ सिद्धि	निषेध, सिद्धि।
श्रि सेवा, अवलम्बन	आश्रय, श्री, श्रेणि	सिव् सिलाईकरना	सीवन, सीना।
		सु प्रसव करना	प्रसव, सुत, सोम।
श्रु सुनना	श्रवण, श्रुति, शुश्रूषा, श्रोत्र।	सुख् सुखकरण	सुखी।
		सुद् र शोभा	सुन्दर।
श्लथ दौर्बल्य	श्लथ।	सुर दीप्ति, ऐश्वर्य	सुर, सुरा।
श्लाघ् प्रशंसा	श्लाघा।	सू प्रसवकरना	प्रसव, राजसूय, सूत, सविता, आसव।
श्लिष् ओ आलिङ्गन	श्लिष्ट, श्लेष्मा।		
श्लोक छन्दोविशिष्ट वाक्यरचना	श्लोक।	सूच् ज्ञापन	सूचना।
		सूच् खलना	सूचि, सूई।
श्वस् श्वासलेना	श्वास, विश्वासी।	सूत्र ग्रन्थन, वेष्टन	सूत्र, सूत।
		सूद् हिंसा, निवेपन	मधुसूदन।
		सूद् रन्धन	सूद, सूदाध्यक्ष।
श्वित् शुभ्रकरना	श्वेत।		
संग्राम युद्ध	संग्राम।	सूर स्तम्भन	सूर।

ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতুনিষ্পন্ন শব্দ	ধাতু অনুবন্ধ অর্থ	ধাতুনিষ্পন্ন শব্দ
সৃ গমন	নিঃসরণ,অবসর,	স্থল স্থল	স্থল।
	অনুসার,সার,উরঃ	স্থা স্থিতি	স্থান,উত্থাপন,উ-
	সর,সর্য্য,সংসার		পস্থিতি,সংস্থান,প্র-
	সারথি,সরিৎ,স-		স্থান, অধিষ্ঠান,
	রাপ,সরঃ; সৃজন,		আস্থা, অবস্থা,
	বিসর্জন,সর্গ,নি-		স্থিতি, প্রতিষ্ঠিত,
	সর্গ,সংসর্গ সৃষ্টি,		স্থায়ী,সুস্থ,প্রস্থ,
			স্থাবর,স্থির,স্থাপনা।
	সৃক উপসর্গ	ষ্ঠীব থুকনা	নিষ্ঠীবন।
সৃপ ঔ গমন	সর্প,সরীসৃপ,সর্পি	স্থূল বৃদ্ধি	স্থূল।
সেব্ সেবা	সেবা সেবক।	স্না শোধন	স্নান,স্নাত,স্নায়ু,প্রস্ন।
সো ক্ষয়	অবসান,ব্যবসায়	স্নিহ প্রীতি, স্নিগ্ধ ভাব	স্নেহ,স্নিগ্ধ,উষ্ণিগ
স্কন্দ ঔ গতিশোষণ	স্কন্দ	স্পন্দ ঈষৎ কম্পন	স্পন্দন।
		স্পর্দ্ধ পরাভবেচ্ছা	স্পর্দ্ধা, আস্পর্দ্ধা।
স্কুদ্ লম্ফন	স্কুন্দন।	স্পশ প্রকাশ	স্পষ্ট।
স্খল্ পতিতহোনা	স্খলিত।	স্পৃশ ঔ ত্বকদ্বারা	স্পর্শ,স্পৃষ্ট,স্পর্শনীয়
স্তন মেঘশব্দ	স্তনয়িত্নু, স্তন।	অনুভব করণ	স্পৃশ্য।
স্তম্ভ ই জড়ীভাব	স্তম্ভন, স্তব্ধ।	স্পৃহ প্রাপণেচ্ছা	স্পৃহা।
স্তু প্রশংসা	স্তব,স্তুতি,প্রস্তা	স্ফায় বৃদ্ধি	স্ফীত।
	ব,স্তোত্র,প্রস্তুত।	স্ফুট ভেদন,বিকাশ	স্ফটিক,প্রস্ফুটিত,স্ফুট
স্তূপ উন্নতহোনা	স্তূপাকার।	স্ফুর প্রকাশ	স্ফুরণ,স্ফূর্তি,[illegible]
স্তৃ আচ্ছাদন	বিস্তার, বিস্তৃত,	স্ফূর্জ বজ্রশব্দ	স্ফূর্জিত।
	প্রস্তর, নিস্তার।	স্মি ঈষৎ হাস্য	স্মিত বিস্ময়।
স্তৃ আচ্ছাদন	বিস্তীর্ণ।	স্মৃ যাদরখনা	স্মরণ বিস্মৃত।
স্থগ আচ্ছাদন নিবারণ	স্থগিত।	স্যন্দ ক্ষরণ	স্যন্দন।
		স্যম্ ধ্বনিকরণ	সিংহ

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द	धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
स्रंस् अधःपतन	स्रंसन, स्रस्त।	हृष् चित्तोल्लास	हर्ष, हृष्ट,
स्रु क्षरण	निःस्राव, प्रस्राव, प्र	हेड् अनादर	अवहेलन।
	स्रवण, स्रोतः।	हेष् अश्वशब्द	हेषा।
स्वद् जिह्वाद्वारा	स्वादन, आस्वादन,	ह्रस् क्षीणता, रव	ह्रास, ह्रस्व।
अनुभवकरण	स्वादु।	ह्राद् शब्द	निर्ह्राद।
स्वन् शब्द	स्वन।	ह्री लज्जा	ह्री।
स्वप् ञि शयननिद्रा	स्वपन, स्वप्न, सुषुप्ति,	ह्रेष् अश्वध्वनि	ह्रेषा, ह्लेषा।
	सुप्त सोना।	ह्लाद हर्ष	आह्लाद, प्रह्लाद।
स्विद् ञि गात्रक्षरण	स्वेदित, स्विन्न, स्वेद।	ह्वल् चलना	विह्वल।
स्वृ शब्द	स्वर।	ह्वे आह्वान	आहूति, आह्वान।
हठ् बलात्कार	हठ,	क्षद संवरण	क्षत्र, क्षत्रिय।
हन् ओ वध	हनन, हत्या, अभ्याह	क्षप् क्षेपण	क्षपण, क्षपा।
	ति, आघात, विघ्न,	क्षम् सहन	क्षमा, क्षान्त, सक्षम।
	जिघांसा, शत्रुघ्न वृत्रह	क्षर् स्रवण	क्षरण, क्षरित।
हल भूमिकर्षण	हल।	क्षल् शौच	प्रक्षालन।
हस् हास्य	हसन, परिहास, ह	क्षि क्षय	क्षय, क्षीण, क्षिति।
हा त्याग	हानि, हीन, हेय, त	क्षि वास	क्षय।
हिक्क् अव्यक्तशब्द	हिक्का। अहि।	क्षिप् ञ प्रेरण	क्षेप, क्षिप्त।
हिल्लोल् दोलन	हिल्लोल।	क्षु छींक	क्षुत्।
हिंस् ह हानि	हिंसा, हिंस्र।	क्षुद् ञ चूर्णीकरण	क्षोदित, क्षुद्र।
हु होमकरण	हवन, होम, आहुत।	क्षुध् ञ भक्षणेच्छा	क्षुधा, क्षुन्निवृत्ति।
हृ बलात्कार	हरण, प्रहार, संहार,	क्षुभ् सञ्चलन	क्षोभ, क्षुब्ध, क्षोभि
	विहार, समभिव्या	क्षुर् छेदन	क्षुर, क्षुरमर्दी। त।
	हार, हृत हर्ता, म	क्षै क्षय	क्षाम।
	नोहर, नीहार, ह	क्ष्णु तेजन	क्ष्णुत।
	र्म्य, हार, हरिण।		

धातु अनुबन्ध अर्थ	धातु निष्पन्न शब्द
स्माय् कम्पन	स्मा।
त्विद् मोचन	त्विम।
त्वेड् सिंहध्वनि	त्वेड़ित।

अनुबन्धोंका तात्पर्य्य।

इ जिस धातुके पीछे है उसके उपधामे 'न' का आगम होता है फेर वहि न का परवर्णके वर्गानुसार ङ ञ ण म ं होजाता है यथा अक + इ = अङ्क, अच + इ = अञ्चित, कठ + इ = उत्कण्ठित, कप + इ = कम्पन, हद + इ = हंदित, नद + इ = नन्द

ओ जिस धातुके पीछे है उससे परे कृदन्तके त प्रभृति प्रत्यय होनेसे इ का आगम नहि होता (७४ पृष्ठमे देखो) यथा गम + ओ = गत, गन्तव्य इत्यादि

इति धातुविवेक:

विरामादिके चिह्न

लघुविराम , यह चिह्न व्यष्टि वाक्यके अन्तमे और अन्तर्वाक्यके आदि अन्तमे लगता है

गुरुविराम ; यह चिन्ह समष्टि वा जटिल वाक्यके अन्तमे लगता है; पर जहां वाक्यके पूर्ण होनेमे कुछ अवशिष्ट हो। यह दो वा अधिक लघुविरामोंकी समष्टिको द्योतन करता है

पूर्णविराम } यह पूर्ण वाक्यके अन्तमे लगता है
वा डण्डी } ।

सम्पूर्णविराम } यह वर्णनका कोई भाग समाप्त हो जानेसे लगता है
वा दो डण्डी } ॥

घेरा ( ) यह वाक्यके उस अंशके आदि अन्तमे लगता है कि जिसके परित्याग कर देनेसे भी कथनमे हानि नहि हो; अथवा कथनके किसी विषयको जो अंश स्पष्ट

करे उस्के आगे पीछे लगाया जाताहै

संयोजक } यह दो वा अधिक लिखित विषयके संयोगके निमित्त लगाया जाताहै

संग्राहकवा{ } ये चिन्ह ढोरा और संयोजक दोनो का काम देता [ ] है

लकीर —— यह विच्छेद वा स्थान की शून्यता द्योतन करतीहै

पर्य्याय = यह चिन्ह टीका का ज्ञापकहै

नक्षत्र ※ ———— तथा

स्तम्भ ‖ ———— तथा

छुरा † ———— तथा

द्युछुरा ‡ ———— तथा

चक्र X ———— तथा

हस्त ☞ ——— यह कुछ दिखलाताहै

त्याग × × × वर्णन का जोकोई अंश त्याग किया जाय उस्मे यह चिन्ह लगताहै

संक्षेप ० किसी शब्दको संक्षेप से लिखना हो तो यह चिन्ह उस शब्द के किसी अंशके आगे लगताहै

प्रश्न ? यह प्रश्नका चिन्हहै

प्रसिद्ध ! यह चिन्ह उच्छ्वसितभाव द्योतक शब्दोंके आगे; और जहां किसी बातको प्रसिद्धिवा आश्चर्य्यादि भावके साथ ज्ञापन करना हो वहां लगताहै

अपूर्णता - जोकिसी शब्दका एक अंश पंक्तिके शेषमेहो और दूसरा अंश दूसरी पंक्तिके आदिमे तो वहां यह चिह्न लगता है। और समस्त पदके शब्दोंके बीचमे भी कभी २ लगताहै

त्रुटि ^ जहां कुछलिपिकारके भ्रमसे छूटजाय और ऊपर लिखा जायतो छूटके स्थान निर्देशके निमित्त यह चिन्ह लगाया जाताहै

अन्योक्ति " " यह चिन्ह वर्णन के उस अंशमे लगाया जाताहै जो किसी अन्यकी उक्तिसे संग्रहीत हुआहो ∴ ∴

विक्रेयपुस्तक

निम्न लिखित पुस्तक साहेबरेजिष्ट्रार पञ्जाब युनिवर्षिटि के दफतरसे मिलसकते हैं ।

जिन्हें इन पुस्तकोंमें से कोई मोल लेनी हो वे मुल्य और महसूल सहित, "हेडक्लार्क दफतर रेजिष्ट्रार पञ्जाब युनिवर्सिटि लाहोर" के नाम पत्र भेजें । *"सद्धर्म सूत्र" केवल बाबू नवीन चन्द्र राय लाहोर के नाम पत्र भेजने से मिलसकता है ।

	मूल्य	महसूल
याज्ञवल्क्यसंहिता मूलधारबर्ष	३)	=)
व्याकरणप्रभाकर संस्कृत प्रथम भाग / द्वितीय भाग	॥।) ३) ॥।)	≡) ≡) ५॥
—॥— तृतीय भाग	≡)	)॥
धातुकामधेनु संस्कृत	॥।)	)॥
श्रुतबोध	३)	)॥
छन्दोबोध	३)	≡)
घनज्यामिति	१)	)॥
लक्षणावली संस्कृत	८)	=)
न्यायबोधिनी हिन्दी	=)	)॥
चारुपाठ द्वितीय भाग हिन्दी	=)	)॥
तथा तृतीय भाग	१)	=)
तत्त्वबोध [illegible] पदार्थ विद्या मे	‍१)	=)
प्राचीन इतिहास हिन्दी	)॥	)॥
पिङ्गल मञ्जरी [illegible]	—	=)
आत्मतत्त्वविद्या [illegible]	=॥।	)॥
विद्यारत्नाकर तथा	२)	=)

	मूल्य	महसूल
वेदान्तसार — तथा —	)॥	)॥
तर्कसंग्रह — तथा —	)	)॥
सारासारसंग्रह तथा श्रीरामाश्रम	।)	)॥
सरलव्याकरण संस्कृतका हिन्दीमे	।)	)॥
लघु व्याकरण — तथा —	॥)	=)
नवीनचन्द्रोदय हिन्दी का व्याकरण	।)	)।
शब्दोच्चारण (प्रथम पुस्तक)	)॥।	)॥
स्थितितत्त्व और गतितत्त्व	।=)	)।
जलस्थिति, जलगति और वायुकतत्त्व	॥)	)।
निर्माणविद्या प्रथमभाग	॥)	)।
— तथा — द्वितीयभाग	।)	=
सद्धर्मसूत्र* —	=)	)।

PK Rai, Navina Chandra
1934 Navinacandrodaya
R35
1883

[redacted]

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY

UTL AT DOWNSVIEW
D RANGE BAY SHLF POS ITEM C
39 16 27 22 11 011 4